@NewsRotary /RotaryNewsIndia

Vol.35, Issue 7 Price Rs 35 | Annual Subscription Rs 420

रोटरी समाचार

January 2018

Rotary

के एल संस्थान

के एल संस्थान

के एल संस्थान की सफलता के पीछे

संस्थान के संयोजक, रो ई निदेशक सी भास्कर और संस्थान के अध्यक्ष तिनचंद्रन।

विषयसूची

12 हमारा प्रभाव बढ़ाने के लिए टीमवर्क महत्वपूर्ण है

रो ई अध्यक्ष इयन राय्सलि द्वारा क्वाला लंपुर, मलेशिया में हुए जोन संस्थान के उद्घाटन समारोह में दिया गया एक शानदार भाषण।

18 ''मेरा सपना अपने अंचल में निन्दा मुक्त, सशक्त रोटरी।'': रो ई निदेशक सी भास्कर

रो ई निदेशक और के एल संस्थान के संयोजक, सी भास्कर की महत्वाकांक्षी सूची और सदस्यता के लक्ष्य का वर्णन।

32 पिछले 100 सलों में रोटेरियनों ने 4.1 बिलियन डॉलर एकत्रित और निवेश किये है

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल ने पिछले 100 वर्षों में टीआरएफ़ की उपलब्धि के प्राप्त आंकड़ों का शानदार प्रदर्शन किया।

26 नेतृत्व पर साबू के दस मुख्य संदेश

के एल में GETS सत्र में पीआरआईपी राजेन्द्र के साबू, आने वाले गवर्नरों को अच्छे नेतृत्व का मंत्र सिखाया।

36 टीआरएफः एक दूसरी सदी की ओर

पीआरआईपी और पूर्व टीआरएफ ट्रस्टी चेयर कल्याण बेनर्जी पिछली शताब्दी में टीआरएफ की सफलता की कहानी सुनाते है।

38 स्टार परफॉर्मर्स - ज़ोन्स 4, 5 & 6ए

टीआरएफ़ योगदानों में, सदस्यता वृद्धि और सार्वजनिक छवि के लिए 4,5 और 6ए के क्षेत्रों पुरस्कार विजेता।

52 बातचीत दिल खोल के

वरिष्ठ नेता, पीआरआईपी के आर रवींद्रन द्वारा विभिन्न रोटरी विषयों पर प्रश्नों का सीधा उत्तर देते है।

56 GETS में बहुत कुछ पहली बार

डीजीई अपने 'कैसे' और 'क्यों' के उतर GETS सत्र में स्पष्ट करते है।

42 हवाईयन मूड़

के एल संसथान में फेलोशिप के जश्न की कुछ यादगार तस्वीरें।

कवर पर : के एल ज़ोन संस्थान के उद्घाटन में मलेशियन नृत्य का प्रदर्शन।

चित्र : रशीदा भगत

दसंबर प्रदर्शन

आपकी दिसंबर सम्पादकीय क्लबों के लिए अच्छी परियोजनाएं करने का एक प्रलोभन है और साथ ही यह इस बात से उन क्षेत्रों को अवगत कराता है जहाँ *रोटरी समाचार* ने अपने पंख फैला रखे है। उत्तर पूर्व के लिए किये गए आपके वादे के साथ, एक प्रस्ताव अन्य दूरस्थ क्लबों तक विस्तारित किया जा रहा है जो शांतिपूर्ण ढंग से अपनी भूमिका निभा रहे है। संपादक, आपको शुभकामनाएं।

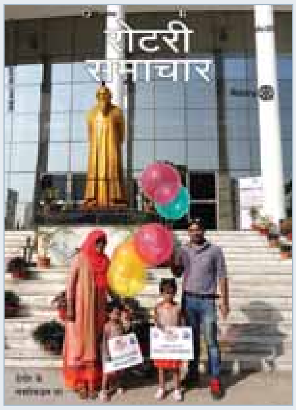

रोई अध्यक्ष का संदेश - *एक शांतिपूर्ण दुनिया की ओर* - शांति को संकट में डालने वाली परिस्थितियों में उम्मीद जगाता है लेकिन मेरी इच्छा थी कि काश उन्होंने एक शांति सम्मेलन हमारे क्षेत्र में भी आयोजित किया होता। त्रिपुरा के मुख्यमंत्री द्वारा रोटेरियनों के आह्वान से शुरुआत कर इसको विस्तार में कवर करके आपने बहु-मंडलीय सम्मेलन *सेतुबंधन* के साथ न्याय किया। यह मेरे लिए नया समाचार है कि केरल अकेला ऐसा राज्य नहीं है जहाँ उच्च साक्षरता दर है और उत्तर पूर्व में इसका एक प्रतिद्वंदी है।

क्षेत्रीय संपादक सम्मेलन से यह जानकर अच्छा लगा कि प्रिंट मैगज़ीन अब यहाँ आम बात है। रोटरी क्लब बैंगलोर को 106 हैप्पी स्कूल प्रायोजित करने के लिए सलाम। 75 वर्ष पुराने रोटरी क्लब तिनेवेली में पीआरआईपी रविन्द्रन के दौरे के साथ जयश्री की रिपोर्ट रोचक और जानकारीपूर्ण थी। मैं यह जानकर खुश हूँ कि कुछ डीजी (*आपके गवर्नरों से मिलिये*) सकारात्मक है और स्पष्ट रूप से कहते है कि वे केवल गुणवान सदस्यों को प्रवेश देंगे।

नन नारायणन, रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000

दिसंबर संस्करण अपनी सामग्री, खासकर रंगीन चित्रों के लिए बढ़िया है। लेख *रेगिस्तान में एक ओएसिस ढूँढना* ने मुझे अपने शीर्षक और चित्र के साथ आकर्षित किया है, जो निश्चित रूप से पहली नजर में पाठकों को आकर्षित करेगा।

लेकिन केवल पढ़ने के दौरान, हम मानव जीवन में एक कठिन दौर, बुढ़ापे में भी शांतिपूर्ण और संतुष्ट जीवन का नेतृत्व करने पर अपने ध्यान के साथ सामग्री को समझ सकते हैं। लेखकों द्वारा दिए गए निर्देश बहुत उपयोगी हैं। इसके अलावा, सलाह ''अपरिचित पथ लेने से डरना नहीं, वे आपको बेहतरीन स्थानों पर ले जाते हैं'' और ''आपका जीवन दुनिया में सबसे बड़ा उद्यम है।'' उत्कृष्ट है

एम टी फ़िलिप

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

दिसंबर अंक एक नया रूप दिखाता है और रोई निदेशक सी भास्कर द्वारा आँखें खोल देने वाला सन्देश प्रस्तुत करता है। '*क्रियाशील रोटरी* लोगो के अन्तर्गत सभी लेख शानदार है।

एस शिवसुब्रमण्यम, रोटरी क्लब तिरुनेलवेली टाउन मंडल 3212

मुझे गर्व है कि मैं रोटरी क्लब तिनेवेली, मंडल 3212, का सदस्य हूँ जो पिछले 75 वर्षों से समुदाय की सेवा कर रहा है, एक उल्लेखनीय उपलब्धि। भले ही हम 75 वर्ष पुराने हो, लेकिन हम आज भी युवा एवं ताकतवर है और हमें बहुत सी सामुदायिक सेवा करनी है।

के गिरीश, रोटरी क्लब तिनेवेली - मंडल 3212

मैं लेख *मौज, मस्ती, खाना-पीना और परोपकार भी... आम्ची मुंबई में* की प्रशंसा करता हूँ जो समाज की सेवा करने के लिए निधि कैसे इकठ्ठा करें का सन्देश देता है। यह लेख कॉर्पोरेट क्लबों से जुड़े अन्य रोटेरियनों को भी ऐसे समारोहों को आयोजित करने के लिए प्रेरित करता है। रोटरी की विषय-वस्तु के साथ इस उत्कृष्ट कार्य को करने के लिए डीजी प्रफुल शर्मा को बधाइयाँ।

टी डी भाटिया, रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार - मंडल 3012

दिसम्बर अंक की रिपोर्ट *बंकर रॉय को मिला रोटरी चतुर्दिक परीक्षण पुरस्कार* के लिए धन्यवाद। रॉय की ज़िंदगी बहुत अच्छी तरह से कवर की गई, उस पर अच्छी तरह से रिसर्च किया गया और जो मैंने आपको मेल किया था वह उससे कई अधिक था।

पियूष दोषी, रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

नवम्बर में मज़ेदार लेख

जनवरी से एक ऑनलाइन *रोट्रैक्ट समाचार* पेश, सुनकर खुशी हुई। रोटरी क्लब जालना मिडटाउन, मंडल 3212, शुधू टेबलेट्स की जानकारी वाला एक छोटा सा लेख भेज सकता है इसे *रोटरी समाचार* में प्रकाशित किया जा सकता है। रोई अध्यक्ष इयन राय्सली ने खूब कहा कि ''रोटरी संस्थान को दिया गया एक डॉलर दान-पुण्य में दिए गए एक डॉलर से अधिक लाभकारी है।''एक मुस्कान देकर उसका शक्तिशाली प्रभाव देखिये, पूर्व रोई अध्यक्ष गैरी हांग ने कहा। और ऐसा मैंने एरिज़ोना, युएसए में 8-9 क्लुबों में पाया।

भूले बिसरों को इज्जत देना वंचितों और बेघरों के बारे में एक ह्रदय विदारक लेख है। एक अन्य ध्यान देने योग्य लेख है *बूडापेस्ट की झलकी*। यह उचित कहा गया कि सामूहिक यात्रा के दौरान, कुछ कुढ़ने वाले और आदतन देर से आने वाले लोग पूरी यात्रा को बर्बाद कर सकते है। अस्सी वर्षों का अनुभवी होने के नाते, मैंने सामूहिक यात्राओं के दौरान कई बार ऐसी परिस्थितियों का अनुभव किया है।

रोटरी कॉलोनी को मिला एक मंदिर के संदर्भ में, उन 32 परिवारों के लाभार्थियों को दिल से मेरी शुभकामनाएं जिन्हें रोटरी क्लब अट्टूर, मंडल 2982, द्वारा वर्ष 2000 में नि:शुल्क आवास मिले और मैं यह जानकर खुश हूँ कि निवासियों द्वारा घरों की अच्छे से देखभाल की जा रही है। उसकी प्रशंसा की जा रही है क्योंकि 17 साल बाद भी, क्लब के सदस्य लाभार्थियों से समय-समय पर मुलाकात करते रहते है। पाँच क्लबों को हमारी शुभकामनाएं।

92 वर्ष की उम्र में अनिल सूत्रधार की हस्तकला को देखकर मैं चकित हूँ। वह पुरुलिया ज़िले के चारिदा गाँव में चाऊ मुखौटे बनाते है और दुनिया में इस सुन्दर कला का सृजन करने की यह इकलौती जगह है। शब्द 'सूत्रधार' का संबंध भगवान और नई चीज़ों के निर्माता से भी है।

एस मुनिआंदी,
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट - मंडल 3000

नवम्बर अंक को पढ़ना मनोरंजक था। पहली बार मैंने लगभग सभी लेखों को पढ़ा क्योंकि वे सभी पढ़ने योग्य थे। आप अपनी टीम के साथ प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

शुद्ध जल परियोजना की केवल गाँवों में ही नहीं बल्कि उन नगरों और बड़े शहरों में भी बहुत आवश्यकता है जहाँ पीने योग्य पानी की कमी है। जालना मिडटाउन के रोटरी क्लब को वहाँ के स्कूलों में शुद्ध जल प्रदान करने के लिए शाबासी। शुद्ध जल का उपयोग करने के बाद रोगियों की संख्या में कमी और स्कूल उपस्थिति में वृद्धि क्लब के प्रयासों के सकारात्मक परिणाम है। हम इस परियोजना को बड़े पैमाने पर ले जाए और देशभर में जरुरतमंदों को शुद्ध जल प्रदान करें। मेरे क्षेत्र में ऐसा करके मैं पहले ही इसकी अगुवाई कर चुका हूँ।

आँखों की सर्जरी के लिए डॉ अमर अग्रवाल की नई पद्धति के बारे में पढ़ना सूचनाप्रद था। एक कॉर्निया को दो मरीजों के प्रत्यारोपण के लिए उपयोग करना एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। बूडा और पेस्ट की यात्रा (*बूडापेस्ट की झलकी*) अत्यंत रोचक है। मैं चाहता हूँ आप अपनी यात्रा श्रृंखला में भारत की कुछ विविध जगहों को भी शामिल करें।

विभिन्न रोटरी क्लबों द्वारा की गई अनेक परियोजनाओं को चिन्हांकित करता हुआ क्रियाशील रोटरी रोटेरियनों को दूसरों की जिंदगी में ''बदलाव लाने के लिए'' प्रेरित करता है। अंत में, चाऊ मुखौटे बनाने वालों ने चारिदा गाँव के मुखौटे बनाने की इस कम विदित कला के बारे में हमारे ज्ञान का संवर्धन किया। संक्षेप में, मैगज़ीन इसे पढ़ने के लिए दिए गए समय के योग्य थी। शानदार कार्य को जारी रखे।

डॉ परवेश के सबलोक,
रोटरी क्लब पांवटा साहिब - मंडल 3080

रोटरी क्लब तिनेवेली के प्लेटिनम जयंती समारोह और क्लब द्वारा की गई वैश्विक अनुदान परियोजना पर जयश्री का लेख बहुत बढ़िया और सूचनाप्रद था। मेरा उन सभी को सलाम है जो *रोटरी समाचार*, जिसने अंतर्राष्ट्रीय दर्जा प्राप्त कर लिया है, के लिए काम करते है।

पी चोकलिंगम, अध्यक्ष,
रोटरी क्लब तिनेवेली - मंडल 3212

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ, मंडल 3011, और रोटरी क्लब श्री गंगानगर, मंडल 3090, द्वारा किये गए लोकोपकारी कार्यों के बारे में पढ़ना संतोषजनक था। डीजी बाघ सिंह पन्नू का अंग दान को लेकर संकल्प प्रशंसनीय है। और बूडापेस्ट पर लेख हमें एक काल्पनिक दुनिया में ले गया।

नवीन गर्ग, रोटरी क्लब सुनाम - मंडल 3090

जूनून के साथ कैंसर से लड़ाई

मैं रोटरी क्लब अम्बाला के कैंसर से लड़ने के समर्पित प्रयासों पर अक्टूबर अंक के लेख से प्रभावित हुआ। लेख - *रोटरी क्लब अम्बाला के कैंसर अस्पताल को मिला फ्लाइंग एम्बेसडर* - स्पष्ट रूप से क्लब के रोटेरियनों के कैंसर से लड़ने के जूनून को व्यक्त करता है। उन्होंने मिलान अनुदान और यूएसए के रोटरी क्लब बोका रेटोन की मदद से उच्च स्तरीय सुविधाओं वाले एक विशाल कैंसर अस्पताल का निर्माण करके एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण सीख यह है कि एक 100 बिस्तरों वाले कैंसर अस्पताल को प्रदान करने के बाद उन्होंने कार्य करना बंद नहीं किया है। बल्कि वे अब विस्तारण मोड पर है और उनका अतिरिक्त 30 बिस्तरों के साथ सर्वोच्च गुणवत्ता वाले मेडिकल उपकरणों को शामिल करने का लक्ष्य है। डॉ जय देव को मेरा हार्दिक आभार जिन्होंने इस परियोजना के लिए रु 8 करोड़ का योगदान दिया है।

डॉ प्रसन्नजीत घोष,
रोटरी क्लब ग्रीन लैंड सिलचर - मंडल 3240

भारत-पाक संबंधों को बेहतर करना

मैं रो ई अध्यक्ष इयन रिसेली द्वारा सन्देश एक शांतिपूर्ण दुनिया की ओर बार-बार पढ़ता हूं। यह मुझे मोहित करता है। युद्ध का संकट और आगामी, छह राष्ट्रपति पद के शांतिपूर्ण सम्मेलन की श्रृंखला भारत और पाकिस्तान के संदर्भ पर उनकी टिप्पणी विचार-चिंतित हैं। शांति के बिना, जीवन कभी खुश और समृद्ध न हो सकती है। दुनिया कभी जीवित और प्यारा नहीं होगी।

जब भारत और पाकिस्तान के रोटेरियन किसी भी रोटरी या अन्य घटनाओं में मिलते हैं, हम एक-दूसरे को बधाई देते हैं, मुस्कान का आदान-प्रदान करते हैं, हाथ मिलाते हैं और एक दूसरे को गले लगाते हैं।लेकिन सीमा विवाद सात दशकों से अधिक समय से अनसुलझे रह गया है। क्यों भारत और पाकिस्तान की सरकार इसे हल करने में असफल रही है? यह समय है रोटरी के शांति और संघर्ष निवारण / संकल्प के तहत भारत और पाकिस्तान को अपने मतभेदों को सुलझाने के लिए एक सौहार्दपूर्ण तरीके से मदद करने का।

भारत में हमारे पास पीआरआईपी, पीआरआईडी, पिछले टीआरएफ न्यासी और पीडीजी हैं। इसी तरह, पाकिस्तान में, रोटरी नेताओं की एक अच्छी संख्या है।आइए रोटरी नेताओं के मंच पर एक साथ मिलकर चर्चा करें कि भारत और पाकिस्तान को बातचीत शुरू करने के लिए राजी करने का तरीका जानें। यहां, रोटरी दोनों देशों के लिए एक मित्र की भूमिका निभाएंगी।

रामकृष्ण के
रोटरी क्लब पुत्तूर - मंडल 3181

अपने विचार संपादक को भेजें: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**

Governors Council

RI Dist 2981	DG	P S Ramesh Babu
RI Dist 2982	DG	Dharmesh R Patel
RI Dist 3000	DG	P Gopalakrishnan
RI Dist 3011	DG	Ravi Choudhary
RI Dist 3012	DG	Sattish Singhal
RI Dist 3020	DG	G V Rama Rao
RI Dist 3030	DG	Dr K Sunder Rajan
RI Dist 3040	DG	Dr Zamin Hussain
RI Dist 3053	DG	Rajkumar Bhutoria
RI Dist 3054	DG	Maullin Manubhai Patel
RI Dist 3060	DG	Ruchir Anirudh Jani
RI Dist 3070	DG	Parvinder Jit Singh
RI Dist 3080	DG	T K Ruby
RI Dist 3090	DG	Bagh Singh Pannu
RI Dist 3110	DG	Vinay Kumar Asthana
RI Dist 3120	DG	Ranjeet Singh
RI Dist 3131	DG	Abhay Gadgil
RI Dist 3132	DG	Vyankatesh Vithal Channa
RI Dist 3141	DG	Prafull J Sharma
RI Dist 3142	DG	B M Sivarraj
RI Dist 3150	DG	J Abraham
RI Dist 3160	DG	Madhu Prasad Kuruvadi
RI Dist 3170	DG	Anand G Kulkarni
RI Dist 3181	DG	M M Chengappa
RI Dist 3182	DG	G N Prakash
RI Dist 3190	DG	Asha Prasanna Kumar
RI Dist 3201	DG	Vinod Krishnan Kutty
RI Dist 3202	DG	Sivashankaran P M
RI Dist 3211	DG	Suresh Mathew
RI Dist 3212	DG	Chinnadurai Abdullah
RI Dist 3231	DG	Jawarilal Jain K
RI Dist 3232	DG	R Srinivasan
RI Dist 3240	DG	Sunil Saraf
RI Dist 3250	DG	Vivek Kumar
RI Dist 3261	DG	Harjit Singh Hura
RI Dist 3262	DG	Ajay Agarwal
RI Dist 3291	DG	Brojo Gopal Kundu

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2017–18)

DG B M Sivarraj — RI Dist 3142
Chair – Governors Council

DG R Srinivasan — RI Dist 3232
Secretary – Governors Council

DG Abhay Gadgil — RI Dist 3131
Secretary – Executive Committee

DG Vivek Kumar — RI Dist 3250
Treasurer – Executive Committee

DG P Gopalakrishnan — RI Dist 3000
Member – Advisory Committee

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

के एल इंस्टिट्यूट
में स्पष्टवादिता और ताज़गी

कुआ लालंपुर अंचल इंस्टिट्यूट की सबसे स्वागत योग्य और मुख्य विशेषता रही वरिष्ठ नेताओं की स्पष्टवादिता, ईमानदारी और खुलापन जिन्होंने भारत में रोटरी की कमी और समस्याओं को स्पष्ट करते हुए ना तो किसी की आलोचना की और ना ही किसी पर छींटाकशी। पीआरआईपी के आर रवींद्रन ने गरमागरम सत्र में मध्यस्थता की जिसमें उन्होंने बड़े-बड़े नेताओं - रो ई अध्यक्ष इयान राय्सली, टीआरएफ ट्रस्टी अध्यक्ष पॉल नेटजेल और पीआरआईपी राजेंद्र साबू और कल्याण बेनर्जी को कटघरे में ला खड़ा किया। अब यह प्रामाणिक हो गया है कि रो ई अध्यक्ष को भारत से कई मेल मिलते हैं, जिस में लोग एक दूसरे पर इल्ज़ाम लगाते हैं ''और इसकी प्रति रो ई बोर्ड के हर सदस्य, टीआरएफ न्यासी और वो सब सभी लोग जिनके पास ई मेल है'' को भेजी जाती है। बेनर्जी ने कहा यह हम सब जानते हैं हम हिन्दुस्तानियों को ''शिकायत करने का बहुत शौक है, छोटी-छोटी बात पर भी हम चिट्ठी लिख देते हैं और उसकी प्रतियां दुनिया भर में सबको भेज देते हैं। हमें इसे रोकना चाहिए। अपनी समस्याओं को खुद सुलझाना चाहिये।''

राय्सली ने कहा कि कुछ जगहों पर ''सदस्यता के आंकड़े बताने में बेईमानी की ख़बर मिली है,'' जिसे केवल वहाँ का रोटरी नेतृत्व ही सुधार सकता है। कल ''मुझसे एक डीजी ने पूछा था कि रो ई इस समस्या के बारे में क्या कर रहा है। और मैंने उससे कहा कि समस्या की तरह ही समाधान भी आप ही के पास है।'' ऐसी बातों से रोटरी में अन्यत्र वैसी ही धारणा बनती है जैसा हैमलेट में कहा गया कि डेनमार्क में कुछ ना कुछ गड़बड़ ज़रूर है।

'फ्रैंक्ली स्पीकिंग' सत्र के दौरान पीआरआईपी साबू के सर्वविदित विचार कि वे ज़ोन इंस्टिट्यूट या PETS/SETS जैसे कार्यक्रमों को अपने क्षेत्र से बाहर विदेशों में आयोजित करने के खिलाफ हैं पर रवींद्रन द्वारा ली गयी चुटकी के जवाब में, साबू ने ऐसी परिपाटी पर भरपूर प्रहार किया जब ऐसे आयोजनों को विदेशी स्थानों में आयोजित किया गया, तो सारा ध्यान दर्शनीय स्थलों, मनोरंजन और अन्य विकर्षणों पर केंद्रित हो गया, और प्रशिक्षण का मूल उद्देश्य, दूसरे स्थान पर खिसक गया। ''रवि, यह अनुचित है। यहाँ कुआलालंपुर में बैठकर, इंस्टीट्यूट का मज़ा लेते हुए, तुम मुझसे यह पूछ रहे हो!'' जवाब में रवीन्द्रन ने बिजली की गति से तीर छोड़ा : ''लेकिन उचित कहने के लिए कहा किस ने?''

एक और दिलचस्प सवाल, जिसका जवाब देते हुए दल के सदस्यों ने असहमति व्यक्त की वो था, टीआरएफ न्यासी निर्वाचित नहीं बल्कि नियुक्त किये जाते हैं जैसे की रो ई निदेशक। जहां अध्यक्ष नेटज़ेल इससे सहमत हुए वहीं बेनर्जी असहमत। ''यदि हम ऐसा करते हैं, तो हम विवादों में घिर जायेंगे और ऐसी परिस्थितियों में फंस जायेंगे जो आरामदेह नहीं हैं।'' साबू ने बेनर्जी से सहमति जताई और कहा कि अगर न्यासी चुने जाते हैं तो ''वे अपने पूर्ण अधिकार के साथ आएंगे और दो समानांतर निकाय बन जाएंगे और फिर मुझे संशय है कि रोटरी इंटरनेशनल दूसरे स्थान पर खिसक सकता है क्योंकि सभी पैसे टीआरएफ के पास होंगे।'' रविंद्रन ने कहा कि इस सत्र के माध्यम से वह, व्यापक रोटरी दुनिया को मण्डल में क्या होता है, इसका स्वाद दे रहा था..... स्वस्थ विचार-विमर्श। जहां बोर्ड के सदस्य या न्यासी असहमत तो होते हैं मगर पूरी शिष्टता से।

और, मुझे लगता है, बिना ठेस पहुंचाये, भारतीय रोटेरियनों को, दुनिया भर में झूठी मेल भेजे बग़ैर, अपने मतभेदों और समस्याओं को, सभ्य तरीके और स्वस्थ चर्चा से सुलझाने का संदेश दिया गया है?

कुल मिलाकर, इंस्टिट्यूट के अध्यक्ष आर थेनाचंद्रन और उनकी टीम को सुनियोजित और सुव्यवस्थित रूप से निष्पादित इंस्टिट्यूट के लिए पूरे अंक मिलने चाहियें, जिसका सबसे तसल्लीबख़्श पहलू था भारतीय व्यंजन। और, सबसे ख़ुशगवार लमहे हवाईन नाईट के रहे जहां सूट, टाई और साड़ीयों को रंगीन कपड़े और सजावटी सामान से तबदील किया गया, नाच गाना भी बेशुमार हुआ !

लेकिन सबसे यादगार,अध्यक्ष राय्सली की टिप्पणी थीं: ''कितने तरीकों से मैं ये कहता हूं कि चार कसौटी जांच ऐसी नहीं है जिसे सिर्फ दीवार पर टांग दिया जाए।'' अधिक जानकारी अगले अंक में, जहां इंस्टिट्यूट की विस्तृत सूचना जारी रहेगी। रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट की ओर से वर्ष 2018 की शुभकामनाएँ।

रशीदा भगत

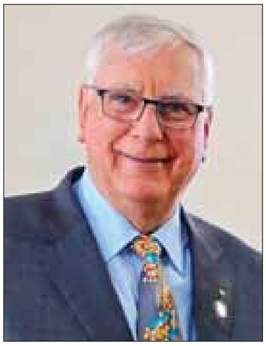

हमरी विविधता... हमारी ताकत

प्रिय साथी रोटेरियन,

रोटरी में हमारी विविधता ही हमारी ताकत है। यह विचार हमारे संगठन के शुरुआती दिनों जितना ही पुराना है, जब पहली बार वर्गीकरण प्रणाली प्रस्तावित की गई थी। इसके पीछे की अवधारणा सरल थी: कि एक क्लब जिसके पास विभिन्न पृष्ठभूमियों एवं क्षमताओं वाले सदस्य है वह उस क्लब के मुकाबले बेहतर सेवा देने के लिए सक्षम होगा जिसके पास ऐसी सदस्यता नहीं है।

वर्षों से, रोटरी में विविधता का विचार अधिक व्यापक रूप से परिभाषित हुआ है। हमने जाना है कि एक क्लब जो अपने समुदाय का वास्तविक रूप से प्रतिनिधित्व करता है वह उस समुदाय की प्रभावी रूप से सेवा करने के लिए अधिक योग्य है। आने वाले दिनों में, यह स्पष्ट है कि रोटरी में विविधता कितनी महत्वपूर्ण रहेगी: आज केवल सशक्त सेवा के लिए ही नहीं, बल्कि भविष्य में एक सशक्त संगठन के लिए भी।

हमारी सदस्यता में संबोधित करने के लिए विविधता के सबसे आवश्यक पहलुओं में से एक है हमारे सदस्यों की उम्र। जब आप किसी भी रोटरी समारोह में अपने चारो ओर देखते है, तो यह तुरंत स्पष्ट हो जाता है कि उस कमरे में मौजूद उम्र सीमा हमारे संगठन के एक चिरस्थायी भविष्य का वादा नहीं करती है। हमारी सदस्यता एक उच्च रिकॉर्ड स्तर के करीब है, और हम हमेशा नए सदस्यों को शामिल करते है - फिर भी उन सदस्यों में कुछ ही सदस्य इतने युवा है जो भविष्य में कई दशकों तक रोटरी सेवा दे सकते है। आने वाले कल के मजबूत रोटरी नेतृत्व को सुनिश्चित करने के लिए, हमें आज युवा एवं योग्य सदस्यों को शामिल करना होगा।

हम लिंग के मुद्दे पर भी चर्चा किये बिना रोटरी में विविधता पर विचार नहीं कर सकते। यह कल्पना करना मुश्किल है कि मात्र तीन दशक पहले महिलाएं रोटरी से नहीं जुड़ सकती थी। हालाँकि हम तबसे बहुत आगे आ चुके है, लेकिन उस भ्रामक नीति की विरासत अभीभी हमारे साथ है। बहुत से लोग अब भी यही सोचते है कि रोटरी केवल पुरुषों का संगठन है, और उस विचार का हमारी सार्वजानिक छवि और सदस्यता वृद्धि पर हानिकारक प्रभाव पड़ा। आज, महिलाएं रोटरी की सदस्यता का मात्र 21 प्रतिशत से कुछ अधिक है। यद्यपि निश्चित रूप से यह बड़ी तरक्की है, हमें उस मुकाम तक पहुँचने के लिए एक लम्बा रास्ता तय करना है जिसे प्रत्येक क्लब का लक्ष्य होना चाहिए: रोटरी में पुरुष एवं महिलाओं की समान संख्या के साथ एक ऐसा लैंगिक संतुलन जो दुनिया के संतुलन से मेल खाता हो।

हम में से प्रत्येक व्यक्ति जिस भी कारण से रोटरी से जुड़ा हो, हम इसलिए रुके हुए है क्योंकि हमने रोटरी की सदस्यता में मूल्यों को पाया और यकीन करते है कि दुनिया के लिए हमारी सेवा का मूल्य है। ऐसे क्लबों का निर्माण करके जो दुनिया को उसकी विविधता में प्रतिबिंबित करें, हम *रोटरी परिवर्तन ला रही है* के लिए और अधिक स्थायी मूल्यों का निर्माण करेंगे।

इयन एच एस राय्सली
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल, 2017-18

रो ई निदेशक

का संदेश

चलिए अपने पेशे द्वारा सेवा करें

प्रिय रोटेरियन,

जिन सबसे प्रसन्न लोगों को मैं जानता हूँ वे वो लोग है जो प्रसन्नता का असली मतलब समझ चुके है। किसी इंसान की अधिकांश क्षमता उसके अपने पेशे को समझने से जुड़ी होती है और उनके द्वारा चुने हुए क्षेत्र में मिली सफलता उनकी खुशियों को बढ़ा देती है। प्रसन्न एवं सफल व्यक्तियों का असल रहस्य उनके दैनिक जीवन में वे जो भी करते है उसमें नैतिकता को लागू करने में है। जो जितनी अच्छी सेवा देता है उसे उतना अधिक फायदा होता है। जो लोग चतुष्पथी परीक्षण का अनुसरण करते है वे उनके जीवन में सत्य का मतलब और उसके सफलतापूर्वक उपयोग को जानते है। अपने पेशे में दूसरों की सेवा करने के मौकों को तलाशिए। हम में से बहुत से लोग सेवानिवृत्ति के बाद एक नयी ज़िंदगी की शुरुआत करने की योजना बनाते है। बहुत से लोग अपने कैरियर में 30 या 40 साल कड़ी मेहनत करते है लेकिन इस बात पर कम विचार करते है कि जब वह कार्य पूर्ण हो जाएगा तब वे क्या करेंगे। भले ही सेवानिवृत्ति में हमारी सारी वित्तीय जरूरतें पूर्ण हो चुकी हो फिर भी हमें काम करने की दरकार रहती है। बल्कि सेवानिवृत्त होने के बाद हमारे पास दूसरों की सेवा करने का अधिक समय होता है। हमें अभी से सेवानिवृत्ति के बाद निष्क्रियता की उपेक्षा कर, क्रियाशील रहने के लिए अच्छी तरह से योजना बनाने की पहल करनी चाहिए।

कुछ महीने पहले, एक रोटेरियन ने मुझे एक 76 वर्षीय लाइब्रेरियन पालम कल्याणसुन्दरम के बारे में एक कहानी भेजी थी। इस व्यक्ति की करुणा और उदारता को व्यक्त करने के लिए कोई शब्द नहीं है। कल्याणसुन्दरम, जो 30 सालों से एक लाइब्रेरियन के रूप में कार्य कर रहे है, पुस्तकालय विज्ञान में स्वर्ण पदक विजेता है और उनके पास साहित्य एवं इतिहास में मास्टर डिग्री है। एक लाइब्रेरियन के रूप में कार्य करने के अलावा, वह एक होटल में दो वक्त के खाने और छोटी सी तनख्वाह के लिए एक वेटर के रूप में भी कार्य कर चुके है।

कल्याणसुन्दरम अपनी सेवानिवृत्ति तक अपने हर माह की तनख़्वाह अनाथों के कल्याण के लिए **दान** कर देते थे और अभी भी जरुरतमंदों के लिए अपनी मासिक पेंशन दान कर देते है। वह गरीबों और जरुरतमंदों की मदद करने के लिए अपनी माँ से प्रेरित एवं प्रोत्साहित है। वह इस सिद्धांत पर विश्वास करते है: *इस बारे में चिंता ना करें की आप कैसे बोलते है। यह प्रयास करें कि लोग आपके बारे में अच्छा बोले।* अब उनकी जिंदगी का एक रोचक हिस्सा आता है। उन्हें एक अमेरीकी संस्थान से उनके द्वारा अनाथों की मदद के लिए किये गए उल्लेखनीय कार्य के लिए बहुत बड़ी राशी मिली। लेकिन उन्होंने पूरी राशी दान कर दी। कल्याणसुन्दरम ने उनके पास की हर चीज़ दान कर दी और वह छोटे-मोटे काम से पैसा कमाकर अपना गुज़ारा करते है। इस सज्जन व्यक्ति ने जरुरतमंदों की मदद के लिए जो भी किया मैं वास्तव में उसकी प्रशंसा करता हूँ। उनकी अपार करुणा ने लोगों में जागरूकता पैदा की है। हम उन्हें एक उदाहरण के रूप में लेंगे और अपने पेशे के माध्यम से सेवा करेंगे।

इस अमेरीकी संस्थान ने कल्याणसुन्दरम को *सहस्राब्दी पुरुष* के रूप में सम्मानित किया और रु 30 करोड़ की राशी उपहार में दी जिसे उन्होंने दान कर दी। हम ऐसे अनुकरणीय व्यक्तियों से सीखते है। चलिए हम भी, रोटरी के माध्यम से, दूसरों की जिंदगियों को बेहतर बनाये।

आप सभी को खुशियों और समृद्धि भरे वर्ष 2018 की शुभकामनाएं!

सी भास्कर

निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

फाउंडेशन न्यासी
अध्यक्ष का संदेश

हम अभियोज्य लोग हैं।

नव वर्ष की शुभकामनाएं!

हम इस रोटरी वर्ष के मध्य में है। 2018 में उम्मीद करने के लिए बहुत कुछ है क्योंकि हम रोटरी संस्थान की सेवा की दूसरे शताब्दी के पहले वर्ष को पूर्ण कर रहे है। हमारे संस्थान के साथ साझेदारी में काम करते हुए, रोटेरियन अनेक तरीकों से बदलाव ला रहे है जिन्हें हम हमारे शुरुआती समय में सोच भी नहीं सकते थे।

पहला, हमारी विशिष्ट पोलियो उन्मूलन पहल हमें पोलियो मुक्त विश्व के ऐतिहासिक दिवस के निरंतर करीब ला रही है। सीएटल में हमारे ज़बर्दस्त विश्व पोलियो दिवस के समारोह, एवं रोटरी सदस्यों द्वारा दुनिया भर में हज़ारों स्थानीय समारोहों के आयोजन के बाद, हम इस वर्ष के 50 मिलियन डॉलर के पोलियो अनुदान संचयन लक्ष्य (जिसमें मंडल प्राधिकृत निधि योगदान शामिल है) की ओर तेजी से बढ़ रहे है। हम पहले से ही उस लक्ष्य के समीप आ रहे है, कुछ हद तक उन रोटेरियनों एवं मित्रों के प्रयासों के कारण जिन्होंने इस अभियान हेतु धन इकठ्ठा करने के लिए हाल ही में आयोजित हुई 'माइल्स टू एंड पोलियो' बाइक सवारी में हिस्सा लिया।

दूसरा, हमारे संस्थान का इस वर्ष का 360 मिलियन डॉलर का व्यापक निधि संचयन लक्ष्य आपको और अन्य रोटेरियनों को दुनियाभर में लोगों की लगातार मदद करने के लिए समर्थ बनाएगा।

साथ ही, टीआरएफ़ अक्षय निधि का निर्माण: 2025 तक 2025 पहल अच्छी तरह प्रगति कर रही है। हमारा लक्ष्य है वर्ष 2025 तक 2.025 बिलियन डॉलर की अक्षय निधि का निर्माण करना ताकि संस्थान की दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित की जा सके और भविष्य में आसानी से आवश्यक स्रोत प्रदान किये जा सके।

एक अन्य प्रभाव शांति निर्माण और रोटरी शांति केंद्र कार्यक्रम में हमारे कार्य से जुड़ा है। रोटरी शांति फ़ेलोशिप के लिए आवेदन इस महीने से उपलब्ध है। महान उम्मीदवारों की ताक में रहिये और हमारे पूर्व शांति निर्माताओं को अपने साथ अपनी परियोजनाओं के लिए सलाहकार का काम करने का न्योता देकर उनका समर्थन कीजिये।

फ़रवरी और जून के मध्य, रोई अध्यक्ष इयान एच. एस. रिसले छह अध्यक्षीय शांति निर्माण सम्मेलनों का आयोजन कर रहे है, जो संवहनीय शांति और प्रत्येक ध्यान केन्द्रित करने योग्य क्षेत्र में हमारे कार्य के मध्य संबंधों को प्रदर्शित करेगा। आप उपस्थित रहने के लिए आमंत्रित है!

बेशक, रोटरी वर्ष का सबसे बड़ा समारोह 23 से 27 जून तक टोरंटो में होने वाला 2018 रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन होगा। हम ना केवल इस रोटरी वर्ष की झलकियों का उत्सव मनाएँगे, बल्कि रोटरेक्ट की 50वीं सालगिरह का भी उत्सव मनाएँगे।

नए वर्ष में, चलिए यह बताना जारी रखे कि हम कार्य करने वाले लोग है! और दुनिया को यह देखने दीजिये कि हम रोटेरियन *परिवर्तन ला रहे हैं*।

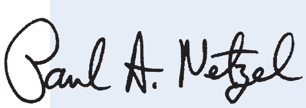

पॉल ए नेटज़ेल
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

फाउंडेशन के बारे में
अपने विचार मुझे भेजें।
Paul.Netzel@rotary.org.
हम सुन रहे हैं।

Häcker
kitchen. germanMade.

DELHI	MUMBAI	BENGALURU	KOCHI	COIMBATORE	CHENNAI	HYDERABAD	AHMEDABAD	LUDHIANA	JAIPUR	INDORE	THRISSUR	MANGALURU
9313134488	9322987229	9740999350	9895058285	9500210555	9442081111	9700058285	9879538977	9815048222	9414058718	9425803599	7025991000	7899119955

E-mail: info@hacker-kitchens.com
Website: www.haecker-india.com / www.haecker-kuechen.com

मुझे खेलों से मोहब्बत है ... कई मायनों में यह जीवन का पर्याय है। आप हमेशा नहीं जीत सकते, खासकर तब जब मैं किसी टीम का समर्थन करता हूं! लेकिन खेल टीमवर्क के महत्व पर ज़ोर देता है क्योंकि जब हम मिल कर काम करते हैं,तो प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा किये गए कार्यों से कहीं ज़्यादा हासिल करते हैं।''

कुआलालंपुर में रोटरी अंचल के इंस्टिट्यूट में रो इ अध्यक्ष इयन राय्सली ने बड़ी साफ़गोइ से हास्य, विनोद में भीगे इन शब्दों के साथ अपना उद्घाटन सम्बोधन शुरू किया। उन्होने पूछा, खेल जगत की 2017 में सबसे बड़ी जीत कौन सी है ? - (''और यह श्रीलंका पर भारतीय क्रिकेट टीम की जीत नहीं है!''), अगर यही सवाल मैं आरआई डी 1360 के डीजी से करूँ ''मैं जानता हूँ उनका जवाब क्या होगा और मैं उससे सहमत होऊंगा! वो कहेंगे यह है, आइसलैंड फुटबॉल टीम का विश्व कप फाइनल में प्रवेश । आइसलैंड की जनसँख्या सिर्फ 330,000 है और इसकी टीम 32 विश्व कप फाइनल तक पहुंच चुकी है, जबकि फुटबॉल के दिग्गज देशों जैसे नीदरलैंड्स या अमेरिका की आबादी 50 गुना अधिक है वहीं इटली की टीम का योग्यता प्राप्त नहीं कर पाना इससे भी बड़ा झटका रहा।''

यह कमाल वे इसलिए कर पाये क्योंकि ''आइसलैंड एक टीम के रूप में खेलती हैं।'' इसमें अन्य सभी टीमों के साथ-साथ रोटरी जैसे बड़े और विशाल संगठनों के लिए भी एक संदेश है। हमारी कोशिशों के असर को बढ़ाने में टीमवर्क महत्वपूर्ण है, राय्सली ने कहा

किसने सोचा था कि आइसलैंड की टीम फुटबॉल विश्व कप के अन्तिम 32 में पहुंचेगी, ठीक उसी तरह ये भी ''किसने सोचा होगा कि पोलियो नेस्तनाबूद हो सकता है, लेकिन 30 साल के प्रयासों के बाद, रोटरी और हमारे सहभागी सफलता की कगार पर बैठे हैं।''

एक चुनौती जो हमने स्वीकार की

रो इ अध्यक्ष ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी के चर्चित भाषण में से मनुष्य को चन्द्रमा

हमारा प्रभाव बढ़ाने के लिए टीमवर्क महत्वपूर्ण है

रशीदा भगत

पर भेजने के बारे में कहे गए शब्दों को उद्धरित किया, उन्होंने कहा कि ''हम ऐसी चीजों को नहीं चुनते हैं, जो आसान हैं, बल्कि उनका चयन करते हैं जो मुश्किल हैं। क्योंकि वो लक्ष्य हमारी ऊर्जा और कौशल को संगठित कर उसे आँकने में सहायक होगा । यह एक ऐसी चुनौती है जिसे हम टालना नहीं चाहते, स्वीकार करने को तैयार हैं, और जिसे हम जीतने का इरादा रखते हैं। हो सकता है वे रोटरी के पोलियो उन्मूलन अभियान के बारे में बात कर रहे हों !''

इसी तरह रोटरी, पोलियो उन्मूलन की सफलता के कगार पर था क्योंकि ''हमने अच्छे सहयोगीयों के साथ दृढ़ता से कड़ी मेहनत की है परन्तु यह टीम वर्क भी है ... नीचे क्लब के स्तर तक। जब हम मिल कर काम करते हैं तो हम बड़ी जीत हासिल करते हैं।''

राय्सली ने कहा कि वो एक एकाउंटेंट हैं इसीलिये नम्बरों के बहुत शौक़ीन थे क्योंकि संख्याओं द्वारा विचार अभिव्यक्त किये जा सकते हैं, ''संख्या सरल और स्पष्ट होती हैं, करीब करीब सभी भाषाओँ में काम करती हैं, और कई बार शब्दों की अपेक्षा आंकड़ों की मदद से आप अपनी बात बेहतर तरीके से समझा सकते हैं।''

लंबे समय से, रोटरी के बारे में दो नम्बरों का ज़िक्र होता रहा है, इसमें 1.2 मिलियन सदस्य हैं और इसके क्लबों की संख्या 37,500 है। जहाँ

> संख्या सरल और स्पष्ट होती हैं, सभी भाषाओँ में काम करती हैं, और कई बार शब्दों की अपेक्षा आंकड़ों की मदद से आप अपनी बात बेहतर तरीके से समझा सकते हैं।
>
> रो ई अध्यक्ष **इयन राय्सली**

रो ई अध्यक्ष इयन राय्सली।

असामान्य रूप से विकेन्द्रीकृत भी है। रो इ अध्यक्ष होने के बावजूद भी एक -एक क्लब पर उसके अध्यक्ष की तुलना में मेरा नियंत्रण कम है। और ऐसा ही होना भी चाहिए और आज रोटरी के प्रभावशाली होने की वजह भी यही व्यवस्था है।

रो ई अध्यक्ष **इयन राय्सली**

इस से संस्था के आकार का पता चलता है पर ये पता नहीं चलता कि इसके सदस्य कौन हैं और क्या करते हैं । हालांकि रोटरी एक विशाल संगठन है परन्तु यह ''असामान्य रूप से विकेन्द्रीकृत भी है। रो इ अध्यक्ष होने के बावज़ूद भी एक -एक क्लब पर उसके अध्यक्ष की तुलना में मेरा नियंत्रण कम है।'' अंत में प्रत्येक क्लब किस तरह चलेगा यह वही क्लब तय करता है ''और ऐसा ही होना भी चाहिए और आज रोटरी के प्रभावशाली होने की वजह भी यही व्यवस्था है।''

विविधता में शक्ति

रोटरी की शक्ति उसकी विविधता में है और इसे इसकी वर्गीकरण प्रणाली में संजोया गया जिससे यह निश्चित हुआ कि क्लब व्यवसायिक रूप से भिन्न हों, विभिन्न कौशल व योग्यता के कारण ही वे समुदाय के लिए किए गए कार्यों में अधिक प्रभावी हो सके। विविधता ने बल दिया है और यह केवल विभिन्न व्यवसायों के लिए ही नहीं अपितु विभिन्न हितों, भाषाओं, विचारों, संस्कृतियों और पृष्ठभूमि के लिए भी सच है ।

''लेकिन आयु और लिंग दो ऐसे क्षेत्र हैं जहां विभिन्नता विशेष रूप से आवश्यक है। सिर्फ एक बड़ी सदस्य संख्या ही पर्याप्त नहीं है बल्कि हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि जिन्हें हम रोटरी में लाएं वे लंबे समय तक बने रहें और आगे चल कर नेतृत्व प्रदान करें। परन्तु ऐसा नहीं हो रहा है और हमें इस के लिए काम करने की आवश्यकता है।''

'लचीली' सदस्यता

अध्यक्ष राय्सली ने आशंका व्यक्त की कि रोटरी में सदस्यता के आंकड़े ''लचीले'' हैं ।

''खबर है कि सदस्यता के आंकड़ों के प्रति हम ईमानदार नहीं हैं और रोटरी नेतृत्व ही इसे सुधार सकता है। कल मुझसे एक डीजी ने पूछा था कि रो इ इस समस्या के बारे में क्या कर रहा है। और मैंने उससे कहा कि समस्या की तरह ही समाधान भी आप ही के पास है। इस चुनौती को स्वीकार करना आप सभी के ऊपर है।''

उन्होंने कहा, बड़ी संख्या में योग्य महिलाएं जो व्यावसायिक नेतृत्व प्रदान कर रही हैं, ''उन्हें सदस्य बनाने का हमारे पास बहुत बड़ा अवसर है, और यही अवसर भारत सहित दुनिया के अधिकांश हिस्सों में भी उपलब्ध है, इसलिए मैं आग्रह करता हूं कि आप इस मौके का हाथ से ना जाने दें।''

हम जानते हैं जिस समुदाय में रोटरी क्लब है वह उस समुदाय से बेहतर है जहाँ रोटरी क्लब नहीं है। लेकिन वह क्लब एक आदर्श क्लब होना चाहिए जिसकी सदस्यता में विविधता हो और समाज के सभी वर्गों से जुड़ा हो साथ ही समाज की समस्याओं को पहचान कर उनका समाधान कर सके। ''कुछ अन्य संस्थान और संगठनों की तरह ही इस तरह के क्लब समुदाय को समृद्ध बनाते हैं।''

राय्सली ने बताया कि दुनिया के इस हिस्से में आ कर रोटरी में उन्हें क्यों हमेशा खुशी मिलती है; ''जब कल्याण (बेनर्जी) अध्यक्ष थे और जूलियट डीजी थे तब उन्होंने मुझे ट्रस्टी मनोनीत किया। कोरिया में जूलियट के मण्डल सम्मेलन में रवि

रोटेरियनों की वजह से सीरियाई शरणार्थियों को क्या फर्क पड़ा

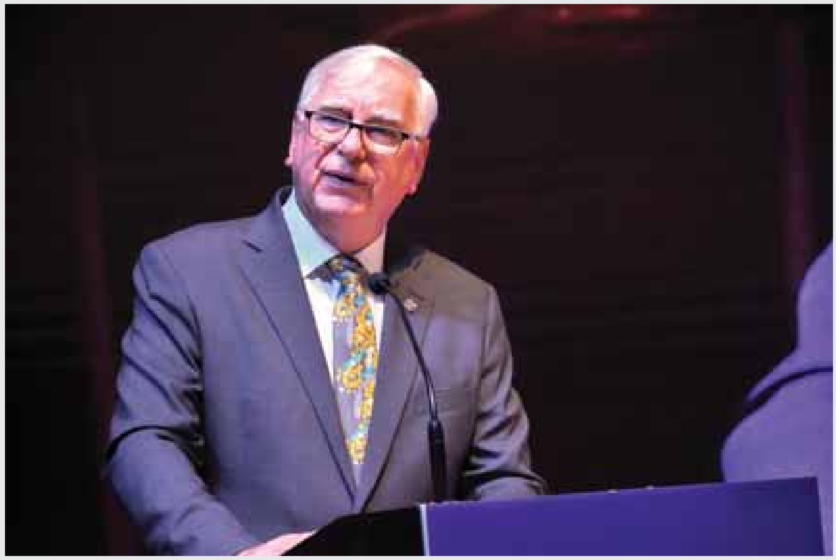

केएल इंस्टीट्यूट के उद्घाटन सत्र में रोइ अध्यक्ष राय्सली ने अध्यक्ष - निर्वाचित रहते हुए दक्षिणी स्वीडन के स्केन में रोटरी क्लब की एक परियोजना की चर्चा की जिसने दिल छू लिया। यहाँ शरणार्थी समुदाय की एक बड़ी आबादी है और बढ़ती जा है जिसमे काफी शरणार्थी सीरिया में गृहयुद्ध की वजह से भागे थे। ''हम सभी कई सालों से सुन रहे हैं, यह युद्ध एक संकट है। एक व्यक्ति क्या कुछ कर सकता है इस भारी पैमाने पर? आप पूछ सकते हैं, लेकिन, रोटरी में, आप केवल एक ही व्यक्ति नहीं हैं।''

स्केन के रोटेरियनों ने सोचा कि वे क्या कर सकते थे; उन्होंने नए शरणार्थियों को अपना नया जीवन व्यवस्थित करने में मदद करने के लिए एक विशाल गोदाम का निर्माण किया। ''उन्होंने समुदाय से बरतन,रसोई की चीजों से लेकर कोट,स्वेटर सहित सभी चीजों का दान स्वीकार किया।'' न सिर्फ रोटेरियंस बल्कि कुछ समय से स्वीडन में बसे शरणार्थियों ने भी इस के लिए सेवा का दान किया। नए शरणार्थी जो अभी आए थे और जिनके पास कुछ भी नहीं था वे अपने न घर बनाने से पहले यहां से सामान ले सकते थे। ''यह सब के लिए फायदेमंद था। यहां रोटरी ने उन लोगों के जीवन में एक बड़ा परिवर्तन किया जो सब कुछ खो चुके थे। ऐसी परियोजनाओं का बहुत मूल्य है।''

लेकिन परेशानी यह है कि जब हम वैश्विक स्तर पर हमारे संगठन को देखते हैं, तो दूसरों को रोटरी की अहमियत, उसके मूल्य बताना बहुत मुश्किल होता है, फिर चाहे वे भावी सदस्य हों या सहभागी। रोटरी के आदर्श क्या हैं और यह कितने बड़े स्तर पर कार्य कर रही है यह बताना अपने आप में एक चुनौती है । मुझे यकीन है कि मैं यहां अकेला ही नहीं हूं, जिस से जब रोटरी के बारे में पूछा गया तो काफी देर मुँह खुला रहा और बहुत देर तक सोचने के बाद जवाब दिया। ऐसा नहीं है कि हम नहीं जानते कि यह क्या है और क्या करती है, लेकिन यह इतनी बड़ी है और इतना ज़्यादा काम कर रही है कि इसे एक दो वाक्यों में समाहित करना असंभव है।''

यह समस्या न केवल रोटेरियंस को अजीब स्थिति में डाल देती है बल्कि दुनिया में ''हमारी भूमिका और मूल्यों को संप्रेषित करना भी एक चुनौती है, इसलिए मैंने मंडल अध्यक्ष के माध्यम से वर्ष के अंत में क्लब अध्यक्षों को सिर्फ दो नंबर मुहैया कराने के लिए कहा है-रोटेरियंस और उनके परिवार वालों द्वारा स्वेच्छा से दिया गया समय और उनकी ओर से सेवा में किए गए निवेश का मूल्य नकद और कुल घण्टे।''

राय्सली ने कहा कि उनका लक्ष्य हैं, इस रोटरी वर्ष के अंत में आंकड़ों को इकट्ठा करूँ फ़िर, ''सबको बताऊँ कि रोटरी सिर्फ 1.2 मिलियन सदस्यों और 37,500 क्लबों का संगठन ही नहीं है, वरना हम अपने समुदायों को करीब 1 या 2 बिलियन डॉलर या शायद 3 बिलियन डॉलर का वार्षिक योगदान भी देते हैं।

पर इन आंकड़ों को एकत्रित करने का काम प्रत्येक क्लब को स्वयं करना होगा। ''मुझे लगता है जब हम गणना करेंगे कि जो परिवर्तन हम दुनिया में लाये हैं, उसकी कीमत क्या है तो हम सभी आश्चर्य में पड़ जाएंगे।'' व्यक्तिगत रूप से रोटेरियंस इस बात से सहमत होंगे कि रोटरी की वजह से उनके संपर्क व कुशलता बढ़ी है जिससे वे समृद्ध हुए हैं और उन्हें संतुष्टि प्राप्त हुई है। मैं खुद की बात करूँ तो एक रोटरीयन होने के कारण किसी भी चीज़ से अधिक रोटरी ने मुझे एक बेहतर इन्सान बनाया है। मैं क्या करता हूँ और क्यों करता हूं, अब मैं इस पर अधिक ध्यान देता हूँ। लोगों से बातचीत में इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, अब मैं लोगों की देखभाल ही नहीं करता बल्कि उस पर अमल भी करता हूँ।''

उन्होंने कहा कि रोटरी ने उन्हें अन्य दूसरे लोगों के जीवन में भी परिवर्तन लाने का रास्ता दिखाया और ''उनके खुद के जीवन में जो अनगिनत परिवर्तन आए हैं उसे किसी भी तरह से नहीं आंक सकते।''

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल के साथ रो ई अध्यक्ष इयन राय्सली।

साल्ट लेक सिटी कन्वेंशन में बिल गेट्स ने इतने सालों से हमारे द्वारा किये जा रहे कार्यों की पुष्टि की और कहा हम सोच भी नहीं सकते कि हमारे द्वारा किये गए कार्यों का असर, कितना ज़्यादा हुआ है।

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर
पॉल नेटज़ेल

(पीआरआईपी के आर रवींद्रन) अध्यक्ष प्रतिनिधि थे और वहाँ उन्होंने मुझे अपने सम्मेलन का सह अध्यक्ष बनाया। ब्रिस्बेन में 2003 के कन्वेंशन में अशोक महाजन और मैंने सार्जेंट के रूप में काम किया था और 2007 में ट्रस्टी-निर्वाचित गुलाम (वाहनवटी) हमारे मंडल में अध्यक्ष प्रतिनिधि रहे हैं।''

इस्तकबाल-तहे दिल से

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए, टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटजेल ने कहा कि 2007 के साल्ट लेक सिटी सम्मेलन में गेट्स फाउंडेशन के बिल गेट्स के पिता, बिल गेट्स सीनियर, ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि पिछले दशक में उन्होंने दुनिया भर में अपनी यात्रा के दौरान कई भयावह समस्याओं को देखा है ''मुझे आश्चर्य भी होता है कि कैसे चमत्कारिक तरीके से रोटेरियन्स ने दुनिया भर में लाखों का जीवन बदल दिया है।''

रोटरी की शुरूआत और टीआरएफ़ के उद्भव से ही रोटेरियंस ये कर रहे हैं - जीवन में परिवर्तन। ''गेट्स पूरी तरह से इस पर केंद्रित थे कि उस समय पोलियो में रोटरी के द्वारा किये गए कार्यों के दौरान उन्होंने क्या पाया । और ये ठीक उससे पहले हुआ जब गेट्स फाउंडेशन ने रोटरी और टीआरएफ़ के साथ अपने आधिकारिक संबंध स्थापित किये और हमारे काम को आगे बढ़ाने के लिए बड़ी धनराशि प्रदान की।''

नेटज़ेल ने बताया कि सीनियर गेट्स ने इतने सालों से ''हमारे द्वारा किये जा रहे कार्यों की पुष्टि की और कहा हम सोच भी नहीं सकते कि हमारे द्वारा किये गए कार्यों का असर, कितना ज़्यादा हुआ है।'' पोलियो में रोटरी के काम से पता चला कि सहभागिता से हम क्या हासिल कर सकते हैं। ट्रस्टी चेयर ने पोलियो उन्मूलन में रोटरी के काम के परिमाण को आंकड़ों में दर्शाया । 1988 में, दुनिया के 125 देशों में प्रतिदिन 1000 पोलियो के मामले आते थे और साल में 350,000। ''पिछले साल तीन देशों में पोलियो के 37 मामले थे और इस साल 30 नवंबर तक 16 मामलों की सूचना मिली है- 11 अफ़गानिस्तान और पांच पाकिस्तान में।''

पोलियो के खिलाफ रोटरी की लड़ाई में उन्होंने जो आंकड़े सूचीबद्ध किये वो काफी प्रभावशाली थे — 20 मिलियन स्वयंसेवक, 2.5 बिलियन बच्चे प्रतिरक्षित। पोलियो के एक करोड़ साठ लाख मामले रोके गए और 1.5 मिलियन लोगों को मृत्यु से बचा लिया गया। ''टीकाकरण की वज़ह से आज कितने सारे बच्चे और वयस्क जीवित हैं,चल रहे हैं, साँस ले रहे ले रहे हैं और ना जाने कितने ही काम कर पा रहे हैं इस के लिए रोटेरियंस को धन्यवाद! कुल मिलाकर,14 बिलियन डॉलर का निवेश किया गया और इस पहल के लिए रोटेरियंस 1.7 बिलियन डॉलर जुटाने के लिए जिम्मेदार हैं और यह शानदार काम है।हमें यह ध्यान रखना है की समापन रेखा हमारे सामने ही है, हो सकता है पोलियो का आखिरी मामला कल (अफ़गानिस्तान में) दर्ज किया गया; तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने कहा। संस्थान के अध्यक्ष पीडीजी आर थेनाचंद्रन ने सबका स्वागत किया और सचिव पीडीजी दीपक शिकारपुर ने धन्यवाद प्रस्ताव पढ़ा।''

चित्र : रोटेरियन श्रीधर भारती

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

töhl
luxury leathercraft
töhl
Exclusively for Rotarians - get 25% off your next tohl.in purchase
USE COUPON CODE 'ROTARYOFFER' AT CHECKOUT
shop töhl's luxury leathercraft online at tohl.in
The Sac & Satchel Company, MF 4, Developed Plots, Industrial Estate, Ekkattuthangal,Chennai – 32
email: customercare@tohl.in / phone: +91-8300112000

के एल संस्थान

''मेरा सपना अपने अंचल में निन्दा मुक्त, सशक्त रोटरी।'' : रो ई निदेशक सी भास्कर

रशीदा भगत

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कुआलालंपुर रोटरी अंचल के संयोजक और रो ई निदेशक सी भास्कर ने कहा कि हमारे अंचल में रोटरी की उपस्थिति मजबूत थी जिसमें भारत, श्रीलंका और नेपाल शामिल हैं। ''हमारे यहाँ 1,60,000 रोटेरियंस हैं, जो विश्व रोटरी का 13 प्रतिशत हैं। पिछले तीन सालों में सदस्यता बढ़ी है और इस साल अभी तक अंचल ने 6,400 रोटेरियंस को जोड़ा है।''

उन्होंने याद किया कि आरआई निदेशकों के अनुस्थापन (ओरिएन्टेशन) कार्यक्रम के दौरान, रो ई के दिवंगत प्रेसिडेंट इलेक्ट सैम ओवरी ने उनका सदस्यता लक्ष्य पूछा था, उन्होंने कहा 10 प्रतिशत और सोचा ओवरी खुश होंगे लेकिन वो मुस्कराए और चुप रहे। भास्कर को लगा वो खुश नहीं हुए तो उन्होंने कुरेदा पर जवाब में ओवरी ने फिर प्रश्न किया, आपके अंचल के देशों की कुल जनसँख्या कितनी है? ''मैंने कहा 1.25 बिलियन तो वो बोले, तुम्हारी महत्वाकांक्षा 1.25 मिलियन सदस्य होनी चाहिये। मैं भौंचक्का रह गया, पूछा, जनसँख्या के एक प्रतिशत रोटेरियंस, यह कैसे सम्भव है? ओवरी ने कहा, 'जब स्वीडन की जनसँख्या के एक प्रतिशत रोटेरियंस हो सकते हैं तो फ़िर अफ़्रीका सहित हमारे अंचल यह चुनौती क्यों नहीं ले सकते ?'

यह बात जँच गई, भास्कर ने कहा, और ''अब मैंने 2025 तक अपने अंचल में'' 1.25 मिलियन सदस्य बनाने का नया लक्ष्य रखा है।

सम्मेलन में : (दाएं से) वसंती तिनचंद्रन, रो ई अध्यक्ष इयन राय्सली, जूलियट राय्सली, ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल, पीआरआईपी गण राजेंद्र के साबू, उषा साबू, कल्याण बेनर्जी, के आर रवींद्रन, वानती रवींद्रन, आरआईडी जॉन मैथ्यूस और मेरी एल्लन मैथ्यूस।

रो ई निदेशक ने सभी वर्तमान डीजी के साथ चर्चा में कहा, लेकिन यह आसान नहीं होगा और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए रोटेरियंस, विशेषकर क्लब और मण्डल नेताओं को अपने अंचल में तीन बिंदुओं को अमल में लाना होगा:

- क्लबों को समर्थन देना और सशक्त करना
- मानवीय सेवा परियोजनाओं की वृद्धि करना
- रोटरी की सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाना

एक महत्वाकांक्षी सदस्यता लक्ष्य

बाद में इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने और अपने अंचल में रोटरी को मजबूत करने के लिए उठाई गई पहल को सूचीबद्ध किया। ''क्लबों की कार्यप्रणाली में सुधार करने का निर्णय लिया गया, और क्लबों को कहा गया कि उनमें से जिनके पास संविधान और उप-नियम नहीं हैं, उन्हें 30 सितंबर से पहले तैयार कर सदस्यों में प्रसारित करना होगा।''

सभी डीजी, अपनी आधिकारिक यात्रा के दौरान इसकी जांच करने पर सहमत हुए और उन्हें मण्डल निर्देशिका में उप-नियमों को छापने की भी सलाह दी गई। रो ई के पिछले पाँच वर्षों के सदस्यता और टीआरएफ़ दान के आंकड़ों के आधार पर प्रत्येक जिले के लिए एक SWOT विश्लेषण तैयार किया और डीजी को बताया गया।

एक वस्तुपरक कार्य पत्र के माध्यम से रोटरी क्लबों की रणनीतिक योजना को आसान बना दिया गया है जिसे झएढ के दौरान, प्रत्येक क्लब सचिव को अपने अध्यक्ष के साथ इसे तैयार करने के लिए कहा गया था। अधिकांश डीजी ने ऐसा कर लिया है।

प्रशिक्षण पर जोर

भास्कर ने कहा कि इस वर्ष सभी डीजी को संपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रमों को ''अत्यंत गंभीरता'' से लेने के लिए कहा गया है और इसे वह सबसे महत्वपूर्ण समझते हैं और साथ ही रो ई पुस्तिका के आधार पर कुछ नई पहल के साथ झएढ और डएढ के लिये एकसमान एजेंडा तैयार किया गया है।

पहली बार क्लब अध्यक्ष पुस्तिका सभी क्षेत्रीय भाषाओं में छापी गई है। इससे उन लोगों को मदद मिलेगी जो 'क्लब में क्या करें, क्या ना करें' समझने के लिए अंग्रेजी का अनुसरण नहीं करते हैं। मण्डल स्तर पर 'PETS और SETS' कार्यक्रम अनिवार्य कर दिया गया है। ''हमने समान पाठ्यक्रम और संकाय सहित एक कार्यक्रम 'दिशा' बनाया है जिस के अंतर्गत मूल रूप से प्रमुख अधिकारियों - मण्डल सदस्यता, टीआरएफ और सार्वजनिक छवि के अध्यक्षों को प्रशिक्षित किया गया है।''

इसके बाद, सदस्य बनाने और उन्हें रोके रखने की प्रक्रिया समझने के लिए पिछले पांच वर्षों के आंकड़ों का मण्डल वार विश्लेषण किया गया क्यूँकि सदस्यता, एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता है ।

सदस्यों को इसके मापदंड समझाना एक बड़ी चुनौती थी कि क्लबों में शामिल होने के लिए वे किसे आमंत्रित करें, इसलिए हमने यह जानकारी तैयार कर सभी डीजी को प्रसारित की ताकि वे इसे अपने -अपने क्लब अध्यक्षों के साथ साझा करें। सभी डीजी कमज़ोर और निष्क्रिय पड़े क्लबों के साथ काम कर रहे हैं, और उन्होंने वादा किया है कि क्लब के विलय या नए सदस्य बना कर, वे यह सुनिश्चित करेंगे कि प्रत्येक क्लब में जून 2018 के अंत तक कम से कम 20 सदस्य ज़रूर हों। लोग रोटरी न छोड़ें, इस के लिए मैंने दो या तीन सदस्यता सेमिनार आयोजित करने के लिए भी मण्डलों को प्रोत्साहित किया है, भास्कर ने कहा।

महिला क्लब अत्यन्त कुशल और समर्पित सिद्ध हुए हैं, विशेष रूप से मानवीय सेवा परियोजनाओं में और साथ ही सक्षम फंड मैनेजर भी साबित हुए हैं। हम चाहते हैं कि हमारी 25 प्रतिशत सदस्य महिलाऐं हों।

टीआरएफ में रिकॉर्ड योगदान

टीआरएफ पर चर्चा करते हुए भास्कर ने अपने अंचल के देशों

संयोजक और रो ई निदेशक सी भास्कर संस्थान का प्रारंभ करते हुए।

में कोई सुधार हासिल नहीं किया जा सकता। इसलिए हैदराबाद में हमने पहली बार,एक केंद्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें रो इ कर्मियों के साथ डीआरआर, आरआरसीएस, आरसीएस और रोटरी क्लब भी शामिल हुए और अब मुझे पूरा यकीन है कि हम रोट्रैक्ट की गतिविधियों में वृद्धि के साथ उनकी सार्थक भागीदारी भी देखेंगे।''

इन गतिविधियों को प्रचारित करने के लिए जनवरी 2018 *रोट्रैक्ट न्यूज़* का एक त्रैमासिक ऑनलाइन संस्करण शुरू किया जा रहा है जोकि रोटरी और रोटरैक्ट्स के बीच तालमेल बिठाएगा।

को शीर्ष पर बनाये रखने के लिए पूर्व ट्रस्टी चेयर कल्याण बेनर्जी को बधाई दी। एक नेता के रूप में ''हम उनके अथक प्रयासों के लिए धन्यवाद करते हैं, हमारे अंचल ने 20 मिलियन डॉलर दिये हैं, जो ना सिर्फ अब तक का सबसे अधिक योगदान है, बल्कि इसने टीआरएफ में हमें, विश्व में दूसरे स्थान पर भी पहुंचा दिया है। अब पथ ट्रेंडसेटर (वर्तमान डीजी) को अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों से आगे निकलना एक चुनौती है, और हमें दिखा देना है कि हम चुनाव लड़ने में ही नहीं बल्कि धन जुटाने में भी आक्रामक हैं!

रोटरैक्ट्स, हमारे अंचल में, रोटरी का जीवन बीमा हैं, भारत में हमारे यहाँ रोट्रैक्ट क्लबों की संख्या सबसे अधिक है: जनवरी 2018 *रोट्रैक्ट न्यूज* का एक त्रैमासिक ऑनलाइन संस्करण शुरु किया जा रहा है।

इस वर्ष अपने अंचल का लक्ष्य 30 मिलियन डॉलर निर्धारित किया है। टीआरएफ़ योगदान पर भी पांच साल का क्लब-वार विश्लेषण तैयार किया गया है ताकि क्लब के नेता यह समझ सकें कि उन्हें सदस्यों में, हर साल, ''टीआरएफ में सहयोग करने की आदत डालनी है। हमें उम्मीद है कि इस साल कम से कम 50 प्रतिशत क्लब टीआरएफ में योगदान करेंगे।''

एंडोमेंट्स और प्रमुख उपहारों पर ग़ौर करने के लिए, पहली बार, मण्डल स्तर पर एंडोमेंट्स व उपहार प्रमुख की नियुक्ति की गई, और वे डीजी और ईएमजीए के मार्गदर्शन में काम करेंगे।

सीएसआर कोष

भास्कर ने बताया कि भारत सरकार ने अपनी अनिवार्य सीएसआर नीति के ज़रिये रोटरी जैसी सेवा संस्थांओं के लिए एक विशाल अवसर प्रदान किया है जिसके तहत प्रतिवर्ष रु 1,800 बिलियन करोड़ रुपये सामुदायिक कल्याण कार्यक्रमों पर खर्च करने के लिए उपलब्ध होंगे। टीआरएफ ट्रस्टीज़ ने यह पैसा स्वीकार करने के लिए भारत में रोटरी को अनुमति दे दी है और संभावित कॉर्पोरेट दाताओं के साथ संबंध बनाने के लिए एक सीएसआर अध्यक्ष को भी नियुक्त किया है।

भारत भी वैश्विक अनुदानों का प्रमुख प्राप्तिकर्ता रहा है; ''हमारे अंचल में निष्पादित वैश्विक अनुदान की गुणवत्ता में सुधार के लिए, ट्रस्टीज़ ने एक वर्षीय पायलट प्रोजेक्ट अनुमोदित किया है जिसमें अनुभवी पूर्व मण्डल अध्यक्ष, स्वयंसेवी पर्यवेक्षक के रूप में, पूर्ण हो चुके अनुदान की देखरेख करेंगे, वो भी बिना किसी लागत के।''

रोट्रैक्ट समाचार

''रोटरैक्ट्स, हमारे अंचल में, रोटरी का जीवन बीमा हैं, साथ ही दुनिया में हमारे यहाँ रोट्रैक्ट क्लबों की संख्या सबसे अधिक है : लेकिन यह खेदजनक है कि समन्वय के अभाव में रो ई डेटा बेस अपडेट नहीं किया गया। यह भी सच है कि ताज़ा आंकड़ों के बिना वास्तव

महिला सदस्यता पर ध्यान

भारत में महिला रोटेरियंस की निष्ठा और समर्पण को यथोचित सम्मान देते हुए रो इ निदेशक ने बताया की मण्डलाध्यक्षों को विशेष रूप से महिला सदस्यों को आमंत्रित करने के लिए के लिए कहा गया है। हमारे अंचल में शुरू हुए ''नए महिला क्लब अत्यन्त कुशल और समर्पित सिद्ध हुए हैं, विशेष रूप से मानवीय सेवा परियोजनाओं में और साथ ही सक्षम फंड मैनेजर भी साबित हुए हैं। हम चाहते हैं कि हमारी 25 प्रतिशत सदस्य महिलाऐं हों; पर अभी हम इस श्रेणी में सबसे नीचे हैं।''

अंत में, भास्कर ने निष्कर्ष में कहा: ''मेरा एक सपना है, 2025 तक हमारे अँचल में 1.25 मिलियन रोटरियंस और 2025 तक ही टीआरएफ के लिए 50 मिलियन डॉलर का वार्षिक योगदान। और हर साल कम से कम 500 योग्य मानवीय परियोजनाओं का निष्पादन। पिछले, लेकिन कम से कम, भारत में निन्दा से मुक्त और स्वस्थ रोटरी चाहता हूँ।''

चित्र: रोटेरियन श्रीधर भारती

Vijay Jalan appointed RRFC

Past District Governor Vijay Jalan has been appointed as Rotary Regional Foundation Coordinator for RI Zones 4 and 6A with immediate effect until June 30, 2020. He holds a record for the highest collection for TRF in India till now and has also served as Rotary Coordinator for the same zones during 2014–17.

FIND A CLUB

ANYWHERE IN THE WORLD!

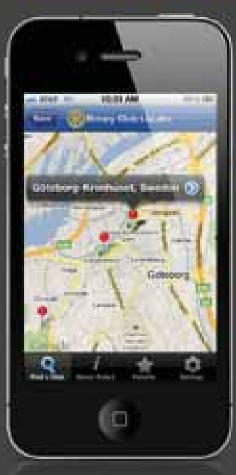

Get Rotary's free Club Locator app and find a meeting wherever you go!

www.rotary.org/clublocator

District Wise TRF Contributions as on November 2017

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions
India					
2981	15,789	1,037	0	0	16,826
2982	15,754	70	2,725	0	18,549
3000	17,914	5,253	33,195	0	56,362
3011	40,325	284	39,598	0	80,207
3012	47,068	6,693	6,090	3,016	62,867
3020	14,069	934	19,950	42,478	77,432
3030	203	22,724	1,050	0	23,977
3040	448	0	10,435	0	10,884
3053	4,383	0	11,550	0	15,933
3054	6,526	102	162,650	0	169,278
3060	23,235	501	206	13,000	36,943
3070	17,114	148	24,219	289	41,771
3080	87,715	5,035	10,500	0	103,250
3090	508	0	0	0	508
3100*	3,925	0	0	0	3,925
3110	26,049	2,343	60,631	0	89,023
3120	67,893	508	0	0	68,401
3131	101,822	(4,400)	135,722	48,094	281,238
3132	25,980	860	2,625	0	29,465
3141	218,293	10,568	176,664	4,000	409,524
3142	149,834	2,686	350	(1,000)	151,870
3150	34,633	8,141	9,050	50,000	101,825
3160	38,581	1,000	0	0	39,581
3170	20,325	7,765	3,007	0	31,097
3181	24,246	481	0	78	24,805
3182	18,925	0	20,843	0	39,768
3190	73,130	300	6,095	16	79,540
3201	54,448	2,421	76,104	0	132,973
3202	17,664	1,733	0	0	19,397
3211	40,804	0	0	(10,000)	30,804
3212	184,069	32,338	0	1,000	217,407
3231	52,617	349	61,250	16,000	130,217
3232	38,958	10,234	23,664	0	72,856
3240	24,303	225	0	555	25,083
3250	28,718	0	0	0	28,718
3261	23,769	100	0	0	23,869
3262	67,382	1,808	0	0	69,189
3291	31,007	24,973	48,009	1,538	105,528
India Total	**1,658,426**	**147,212**	**946,182**	**169,064**	**2,920,883**
3220 Sri Lanka	21,901	10,092	0	1,217	33,211
3271 Pakistan	8,195	24,006	0	0	32,201
3272 Pakistan	1,463	(584)	0	1,000	1,879
3281 Bangladesh	239,610	11,216	71,110	37,013	358,949
3282 Bangladesh	60,758	1,401	500	1,000	63,660
3292 Nepal	104,515	15,053	120,241	0	239,809
South Asia Total	**2,094,868**	**208,396**	**1,138,034**	**209,294**	**3,650,591**
World Total	**38,782,438**	**14,495,146**	**6,195,861**	**8,300,951**	**67,774,395**

** Non-districted*

Source: RI South Asia Office

के एल संस्थान

डिस्ट्रिक्ट कांफ्रेंस से तड़क-भड़क और शोशेबाज़ी निकाल दूर करें - उषा साबू

रशीदा भगत

जो लोग उषा साबू को जानते हैं, उस छोटी सी कोमल सी दिखनेवाली महिला को जो रोटरी की भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दुनिया दोनों ही में अच्छी तरह जानी जाती हैं, वे इस बात से भी वाकिफ़ हैं कि वे फौलादी जिगर रखती हैं। और आप इस बात से बेफिक्र रह सकते हैं कि ज़रूरत पड़ने पर वे अपनी मुलायम आवाज़ में कुछ सख्त घूँसे भी ज़रूर जमा सकती हैं। कुआला लंपूर ज़ोन इंस्टिट्यूट में उनका भाषण इस बात की उम्दा मिसाल था। जिस सत्र में उन्होंने *सर्विस इज़ डिवाइन* विषय पर भाषण दिया, उसकी अध्यक्षता रोटरी इंटरनैशनल के पूर्व डायरेक्टर शेखर मेहता ने की।

श्रोताओं को सियाचिन जैसे सबसे कठिन क्षेत्र में देश की रक्षा कर रहे जवानों को दीपावली पर मिठाइयाँ भेजने के लिए संगठित करने की अपनी पहल के बारे में बताने के बाद उन्होंने शांति से कहा, ''अब कृपया मुझे कुछ बेबाक बातें करने और दूसरे देशों के मुकाबले हमारी कुछ डिस्ट्रिक्ट्स में रोटरी के कामकाज के तौर-तरीकों पर अपने अनुभव बाँटने की इजाज़त दें।''

यह कह कर कि उन्होंने अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और बाकी जगहों में कई डिस्ट्रिक्ट कांफ्रेंसों में शिरकत की है, उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की एक डिस्ट्रिक्ट कांफ्रेंस का उदाहरण दिया जिसमें लगभग 600 रोटेरियनों ने हिस्सा लिया था। ''वे उस कांफ्रेंस में पूरे समय मौजूद थे जिसमें सैंडविच, एक फल, केक, जूस और कॉफी का लंच (दोपहर का भोजन) एक बॉक्स में दिया था। समय की उनकी पाबंदी, वहाँ फैली शांति और कांफ्रेंस के कार्यक्रमों में उन रोटेरियनों की भागीदारी अद्भुत थी।''

वहाँ कोई सम्मान समारोह (अवॉर्ड सेरेमनी) नहीं था और कांफ्रेंस में अवॉर्ड उन बहुत कम रोटेरियनों को ही दिये गए थे जो उनके काबिल थे। यही पद्धति हमें दूसरी जगहों पर भी दिखाई दी। ''मैंने कहीं पर भी तड़क-भड़क, और भोजन, मनोरंजन तथा मुफ्त गिफ्ट पर ऐसा झमेला नहीं देखा जैसा हमारे ज़ोन्स में होता है। क्या हमें इस पर नहीं सोचना चाहिए?''

इस बात पर आश्चर्य जताते हुए कि यह सब बदलने में पहल कौन करेगा, उषाजी ने कहा, ''इस वक्त हम गिफ्ट, भोजन और कई बार मुफ्त शराब के लिए भी डिस्ट्रिक्ट में अपने पहलेवाले (गवर्नर) से होड़ लगाते हैं। तो हमारी कांफ्रेंस और रोटरी के बाकी कार्यक्रम नज़र में ज़्यादा नहीं आते क्योंकि उनमें दिखाने के लिए कुछ होता ही नहीं है।'' साल के अंत में रोटेरियनों को दिये जानेवाले अवॉर्ड की संख्या का स्तर भी बहुत बड़ा रूप लेता जा रहा है।

''कुछ अवॉर्ड देने में कोई बुराई नहीं है ये अच्छा काम करने पर दी जानेवाली सच्ची प्रशंसा के लिए हैं। लेकिन बदलते वक्त में सोच में भी बदलाव लाने और रोटरी की छवि सुधारने के लिए नये प्रगतिशील विचारों को लाने की ज़रूरत है।''

उन्होंने कहा कि शायद क्लब और व्यक्तियों को दिये जानेवाले अवॉर्ड नौकरी करते वक्त अपनी जान गँवा देनेवाले सैनिकों और पुलिसकर्मियों के होनहार बच्चों को स्कॉलरशिप के रूप में दिये जा सकते हैं। यदि उन्हें अपना लिया जाए, शिक्षित किया जाए और नौकरी दिला दी जाए, तो रोटरी ज़्यादा दिखाई देगी। यह इत्तला करते हुए कि उनकी टिप्पणियाँ ''किसी व्यक्ति विशेष या समारोह की आलोचना करने के लिए नहीं हैं,'' उन्होंने कहा कि वे रोटरी की सार्वजनिक छवि सुधारने और ''हमारे अच्छे कर्मों की सुगंध समाज में फैलाने के लिए आत्मावलोकन'' करने की कोशिश कर रही हैं। उन्होंने कहा, ''मैं रोटेरियन नहीं हूँ, लेकिन 57 वर्षों से एक रोटेरियन की पत्नी हूँ; जब रोटरी की छवि धूमिल होती है तो मुझे चोट पहुँचती है। जब रोटरी को उसके अच्छे कामों के लिए सराहा जाता है तो मुझे गर्व होता है। रोटरी का भविष्य वर्तमान में है और वर्तमान हमारे हाथ में है। इसलिए, दोस्ती और सेवा की उचित भावना के साथ चलिए, हम वो सेवा करें जिससे समाज में बदलाव आ सके।''

दीपावली की मिठाई

दीपावली पर सियाचिन में जवानों को मिठाई भेजने के अपने विचार की उत्पत्ति के बारे में उन्होंने बताया कि एक बार ट्रेन से सफर करते हुए वे आर्मी के एक अफसर से बात कर रही थीं जो सियाचिन में तैनात था। ''मैंने जिज्ञासावश उनसे पूछ लिया कि 19,000 फीट की ऊँचाई और फ्रीज़िंग पॉइंट से कई डिग्री नीचे के क्षेत्रों में काम करते वक्त सैनिक किस तरह का जीवन जीते हैं। उन्होंने मुस्कुराते हुए पूछाः 'क्या आप अंदाज़ा लगा सकती हैं कि हम सैनिक कितने वक्त के अंतराल के बाद नहाते हैं -- एक पखवाड़े में, एक सप्ताह में, या फिर एक महीने में?'

मैंने कहीं पर भी तड़क-भड़क, और भोजन, मनोरंजन तथा मुफ्त गिफ्ट पर ऐसा झमेला नहीं देखा जैसा हमारे ज़ोन्स में होता है।

पानी बहुत महँगी वस्तु है और उन्हें नहाने, दाँत साफ करने और पीने के लिए बहुत कम कोटा दिया जाता है। गरम भोजन उनके लिए एक विलासितापूर्ण बात है। उनका भोजन विमान से गिराया जाता है और जब मौसम खराब होता है तो कई दिनों तक विमान सेवा नहीं मिलती।

उन्हें यह जानकर धक्का लगा कि इन पुरुषों को ''पानी विमान द्वारा पहुँचाये गए केरोसिन (मिट्टी का तेल) से पिघलायी गई बर्फ से ही मिलता है। तो पानी बहुत महँगी वस्तु है और उन्हें नहाने, दाँत साफ करने और पीने के लिए बहुत कम कोटा (निश्चित मात्रा) दिया जाता है। गरम भोजन उनके लिए एक विलासितापूर्ण बात है। उनका भोजन विमान से गिराया जाता है और जब मौसम खराब होता है तो कई दिनों तक विमान सेवा नहीं मिलती। आप हमारे सैनिकों की प्रतिबद्धता, साहस और त्याग की कल्पना कर सकते हैं।''

इस वर्णन से वे अवाक रह गईं। ''मैं इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि पानी और गरम भोजन जिसे हम कोई महत्व ही नहीं देते क्योंकि वह हमें इतनी आसानी से मिल जाता है, उन लोगों को उपलब्ध ही नहीं होता। उस अफसर से अचानक हुई मेरी यह मुलाकात मेरे ज़ेहन में विचारों के कई बाँध खोल गई और मेरा ज़मीर मुझे कचोटने लगा।'' 2016 में दीपावली से कुछ दिन पहले यह विचार उन्हें बार-बार सालने लगा कि इन उत्सवों का उन सैनिकों के लिए क्या महत्व होगा जो अपने परिवारों से इतनी दूर हैं ''और क्या हम कुछ मिठाई बाँटकर उन्हें अपना आभार व्यक्त नहीं कर सकते?'' उन्होंने अपना विचार अपने पति रोटरी इंटरनैशनल के पूर्व प्रेसिडेंट राजेन्द्र साबू, डिस्ट्रिक्ट 3080, से बाँटा। उन्हें यह विचार अच्छा लगा और दीपावली से सिर्फ एक दिन पहले मिठाई के 4,500 डिब्बे भारतीय वायु सेना का एक विमान मुफ्त में सैनिकों तक ले गया। उन डिब्बों में एक ग्रीटिंग कार्ड था जिस पर लिखा थाः ''आप हैं तो हम हैं।''

सैनिकों को इसकी आशा नहीं थी। वे बहुत खुश हुए और अपना आभार दिल को छू लेनेवाले इस संदेश के साथ व्यक्त कियाः ''हम आप के लिए ही हैं।''

इस साल भी दीपावली पर मिठाइयाँ भेजी गईं। उषाजी ने कहा कि यह पहल सराही गई, प्रचारित हुई और रोटरी के लिए काफी ख्याति लाई। उन्होंने कहा कि इसे जारी रखा जाना चाहिए। ''यदि हर रोटेरियन इसमें भाग ले तो इसके लिए किसी फाउंडेशन ग्रांट या 'फंड रेज़िंग' की ज़रूरत नहीं है। इसमें पैसा कम लगता है लेकिन इसके पीछे भावना बड़ी है।''

चिकित्सा मिशन में स्वयंसेवा

इससे पहले GETS में रोटेरियनों की पत्नियों/पतियों के एक सत्र को संबोधित करते हुए उषा साबू ने अफ्रीका, भारत और कुछ और जगहों पर कई मेडिकल मिशनों में स्वयंसेवा के अपने अनुभव बाँटे और कहा कि वे उन पलों को संजो कर रखती हैं। रोटरी ने उनके जीवन में 1961 में दस्तक दी जब उनके पति राजेन्द्र साबू ने उसमें सदस्यता हासिल की। जैसे-जैसे साल गुज़रते गए, उन्हें कई पद मिले जैसे क्लब की फर्स्ट लेडी, फिर डिस्ट्रिक्ट की और आखिर में रोटरी इंटरनैशनल की फर्स्ट लेडी का। लेकिन इन सब पदों से उन्हें ''कोई संतोष नहीं मिला और मुझे अपने अंदर एक खालीपन सा महसूस हुआ। मैंने रोटरी हर स्तर पर देखी थी, भव्य समारोहों में, सेवेन-कोर्स मील के साथ अभिजात वर्ग के होटलों में, राष्ट्रपतियों और राष्ट्राध्यक्षों के साथ मुलाकतों में, कभी न समाप्त होनेवाले भाषणों और तालियों की गड़गड़ाहट में, फूलों और उपहारों में।''

लेकिन वे अपने जीवन में एक अलग ''पहल'' जोड़ना चाहती थीं ''और वह वे तब कर पाईं जब साबू और उन्होंने मेडिकल मिशन द्वारा अपना समय, साधन और दिल दूसरों तक पहुँचने के लिए इस्तेमाल करने का फैसला किया।'' पिछले 19 सालों में, 1998 से ले कर अब तक वे अफ्रीका, भारत, कंबोडिया और मंगोलिया में 30 मेडिकल मिशनों में काम कर चुकी हैं, ''जिससे न सिर्फ उन्होंने हज़ारों

सत्र चेयर पीआरआईडी शेखर मेहता, उषा साबु के साथ।

82 वर्ष पार करने के बाद मैं न थकी हूँ और न ही रिटायर हुई हूँ। अपने रोटेरियन पति का हाथ पकड़ने और मानवता की सेवा करने से मुझे हिम्मत मिलती है। हमें तो अभी मील के कई पत्थरों तक का सफर तय करना है, बहुत ज़िंदगियों को छूना है।

ज़िंदगियों को छुआ है बल्कि अपनी ज़िंदगी को भी पूरी तरह रूपांतरित किया है।''

वे कहती हैं कि उन दोनों से अकसर पूछा जाता है कि वे अफ्रीका में काम क्यों करते हैं जब अपने ही देश में इसकी बहुत ज़रूरत है। ''लेकिन हम अफ्रीका जाते हैं क्योंकि राजा (साबू) और मुझे लगता है कि भारतीय रोटेरियन होने के नाते हमें इस विशेष तरीके से 'वर्ल्ड अंडरस्टैंडिंग एंड पीस' के लिए योगदान करना चाहिए।''

उन्होंने इन मेडिकल मिशनों को कभी भी इस नज़रिये से नहीं देखा कि कितने ऑपरेशन किये गए क्योंकि ''वे जीते-जागते लोग हैं जो पीड़ा भोग रहे हैं और जिन्हें हमारी देखभाल की ज़रूरत है। हमारे लिए अंकों से ज़्यादा ज़रूरी है कि हर ऑपरेशन न सिर्फ मरीज़ों के लिए बल्कि उनके परिवारों के लिए भी एक ज़िंदगी बदल देनेवाला अनुभव बन जाए।'' इन मेडिकल मिशनों में भाग लेनेवाले सर्जनों की तारीफ करते हुए उन्होंने मालावी में पैदा हुए तीन दिन के एक ऐसे बच्चे का उदाहरण दिया जिसकी आंतें उसके पेट के बाहर निकली हुई थीं और जिसे स्थानीय सर्जनों ने छूने से मना कर दिया था। ''हमारे सर्जनों ने फौरन वह नाज़ुक और मुश्किल ऑपरेशन किया और बच्चा अब बिल्कुल स्वस्थ है।'' इथियोपिया का एक व्यक्ति दोनों आँखों में मोतियाबिंद के कारण रोशनी खो चुका था और वह रीढ़ की हड्डी में भारी नुक्स के कारण ऑपरेशन के लिए लेट नहीं सकता था। भारतीय सर्जनों ने बैठी हालत ही में उसका ऑपरेशन करके ''उसकी रोशनी लौटा दी और एक और कठिन ऑपरेशन करके उसकी रीढ़ की हड्डी का नुक्स भी दूर कर दिया। आप उसकी और उसके पूरे परिवार की खुशी का अंदाज़ा लगा सकते हैं। हर मेडिकल मिशन में ऐसे ऑपरेशन किये जाते हैं और वे रूह को छूनेवाली खूबसूरत मानवीय कहानियाँ बना जाते हैं जो हमारे काम का सबसे बड़ा इनाम होती हैं।''

इस बात पर ज़ोर देते हुए कि सेवा का कोई भी काम छोटा नहीं होता, उषाजी ने कहा, ''वह देनेवाले और लेनेवाले दोनों के दिलों को छूता है। रुवांडा में नरसंहार के बाद बुरी तरह फटे और बिगड़े चेहरे देखने के बाद अब मैं अपने चेहरे और शरीर पर फैले ल्यूकोडर्मा के दाग़ों की चिंता नहीं करती। मैं यह सोचकर खुद को भाग्यशाली समझती हूँ कि मेरा शरीर स्वस्थ है।''

इन मेडिकल मिशनों में उन्होंने ''रोटरी की सच्ची भावना'' देखी; ''वहाँ कोई विलासितापूर्ण सामग्री नहीं थी, आराम का सामान नहीं था और कई बार तो ज़रूरत की चीज़ें भी नहीं थीं। ऐसे में हमारे साहस की परीक्षा होती है; हम स्वयंसेवी अपनी यात्रा के लिए रोटरी से कोई वित्तीय मदद नहीं लेते लेकिन रोटरी हमें एक बेशकीमती इनाम देती है - सेवा करने और विश्व का नागरिक बनने का अवसर।''

अपनी बात समाप्त करते हुए उन्होंने कहा कि ''आधी सदी से भी ज़्यादा समय तक एक रोटेरियन की पत्नी हुए बिना वे यह सब करने की सोच भी नहीं सकती थीं। 82 वर्ष पार करने के बाद मैं न थकी हूँ और न ही रिटायर हुई हूँ। अपने रोटेरियन पति का हाथ पकड़ने और मानवता की सेवा करने से मुझे हिम्मत मिलती है। हमें तो अभी मील के कई पत्थरों तक का सफर तय करना है, बहुत ज़िंदगियों को छूना है। दिल की बीमारियों से त्रस्त कई बच्चे, रोशनीविहीन बुज़ुर्ग, फटे गुप्तांगों से आहत महिलाएं और पोलिओ से पीड़ित न जाने कितने बच्चे हमारा इंतज़ार कर रहे हैं।''

चित्र: रशीदा भगत

Rasheeda Bhagat

Next Institute - Chennai!

Team Rotary News

At the Kuala Lumpur Zone Institute RI Director C Basker announced that the next Institute will be held in Chennai from Oct 5–7. PDG ISAK Nazar will Chair the Institute. The event will be held at Hotel Leela Palace, one of Chennai's iconic hotels and the metro's first Leela property, where Chettinad architecture and opulence come together to create an aura of regal splendour.

The key people behind the next Zone Institute, for which a record 210 registrations were done in KL itself, are:

Convener RI Director **C Basker**

Chairman **PDG I S A K Nazar,** D 3232

Secretary **PDG Dr N Subramanian,** D 3011

Treasurer **PDG P T Ramkumar,** D 3232

Vice Chairman **PDG G Olivannan,** D 3232

Joint Secretary **PDG Natarajan Nagoji,** D 3232

Registration Committee Chair: **DGN G Chandramohan,** D 3232

Venue and Accommodation Chair: **DG R Srinivasan,** D 3232

Rtn Sridhar Bharathy

Top: PDG ISAK Nazar introduces the Zone Institute 2018 team. From L: Mala Baskar, Afzalunissa Nazar, DGN G Chandramohan, PDGs N Subramanian, Krish Rajendran, PRID P T Prabhakar, PDGs R Raja Ramakrishnan, Ranjit K Bhatia, R Theenachandran, Basu Dev Golyan, Guddati Viswanadh, Bhashkumar Rajan, Sam Patibandla and Natarajan Nagoji. Also seen: RID C Basker greeting PDG Vinod Bansal; **Above:** (Standing from L) PP D Dev, PDG V Ravindran, DGE C R Chandrabob, PDG ISAK Nazar, PP G Balasubramaniam and DG Vyankatesh Vittal Channa. (Seated from L) PP A Shankaran, DG R Srinivasan and PP D Vijayakumar at the registration counter in the KL Institute.

GETS

नेतृत्व पर साबू के दस मुख्य संदेश

रशीदा भगत

डीजीई और उनकी पत्नियों/ पतियों के समूह के सामने खड़े हुए वे ''अत्यधिक सकारात्मकता से भर गए थे। मैं ऊर्जा की एक और तरंग देख रहा हूँ जो आपके कार्य के प्रति आपकी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता, ईमानदारी, धारणाओं, मूल्यों और सबसे ज़्यादा, निष्पक्षता से आपको अपने नेतृत्व के कार्य को निभाने में सक्षम बनाएगी,'' गैट्स के एक मुख्य सत्र में इग्नाइट द लीडर इन यू विषय पर बोलते हुए रोटरी इंटरनैशनल के पूर्व प्रेसिडेंट राजेन्द्र साबू ने यह बात कही।

उन्होंने कहा कि ''अपनी डिस्ट्रिक्ट्स में नेतृत्व के भविष्य के संरक्षक'' के रूप में अच्छा रहेगा यदि वे सब ओलिंपिक्स के प्रसिद्ध तैराक माइकेल फेल्प्स का वह जवाब याद रखें जो उन्होंने यह पूछे जाने पर दिया था कि क्या वे दूसरे मार्क स्पिट्ज़ बनना चाहेंगे। मार्क तब तक के चोटी के कीर्तिमानधारी तैराक थे। फेल्प्स ने कहा था, ''मार्क अभी तक के सबसे महान तैराक हैं लेकिन मैं दूसरा मार्क नहीं बनना चाहता। मैं पहला माइकेल फेल्प्स बनना चाहता हूँ। साबू को इस बात का पूरा विश्वास था कि यदि विराट कोहली से पूछा जाता कि क्या वे दूसरे सचिन तेंदुलकर बनना चाहेंगे तो उनका भी यही जवाब होता।''

इसी तरह आनेवाले सभी गवर्नर ''दूसरों के कंधों पर बैठने के बजाय खुद अपने पैरों पर ऊँचा खड़ा होकर रोटरी में नयी ऊँचाइयाँ छू सकते हैं,'' उन्होंने कहा ।

नेतृत्व और उसकी उत्पत्ति पर बोलते हुए साबू ने कहा कि एक सिद्धांत है कि कुछ लोग पैदा ही नेता होते हैं। ''यदि आप नेता पैदा हुए हैं तो मैं आपके सामने शीश नवाऊँगा क्योंकि मैं बतौर नेता पैदा नहीं हुआ।'' दूसरा सिद्धांत है कि नेता उत्प्रेरक घटनाओं के कारण बनते हैं जैसे वैध टिकट होने के बावजूद महात्मा गांधी को दक्षिण अफ्रीका में फर्स्ट क्लास कंपार्टमेंट से बाहर धकेल दिया गया था। उन्होंने कहा कि यदि वैसा नहीं हुआ होता तो शायद वे सिर्फ एक वकील ही बने रहते और उस महात्मा में रूपांतरित न हुए होते जिसने हमें सत्याग्रह दिया था।

साबू ने कहा तीसरा सिद्धांत है कि हर किसी में नेतृत्व के निष्क्रिय गुण होते हैं जो धूल छंटने पर प्रकट हो जाते हैं। फिर उन्होंने 2018-19 की क्लास को विचार करने के लिए दस बारीक बातें बताईं।

सकारात्मक सोचें - साबू ने कहा कि ठीक थॉमस एडिसन की तरह जो 38 बार असफल हुए, डीजी कभी भी कोशिश नहीं छोड़ें। यह कहने के बजाय कि ''मैं नहीं कर सकता या नहीं कर सकती, यदि आपको खुद पर यह विश्वास है कि आप कर सकते हैं, तो मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि आप कर लेंगे।'' उन्होंने अपने जीवन से एक उदाहरण देते हुए बताया कि जब वे आरआई के प्रेसिडेंट मनोनीत किये गए थे तो उनके बेटे याशो जर्मनी की एक कंपनी के साथ उनके एक संयुक्त उद्यम में मैनेजिंग डायरेक्टर बने। लेकिन पिता की अनुपस्थिति के कारण उनकी जर्मन पार्टनर के साथ कशमकश शुरू हो गई, और बात अदालत तक पहुँच गई।

''मेरे बिज़नेस में वह सबसे ज़्यादा मुश्किल का दौर था और मैंने आरआई के प्रेसिडेंट पद से इस्तीफा तक देने की बात सोची थी। लेकिन अपने बेटे के साथ बात करने के बाद मैं निश्चिंत हो गया। वह दृढ़ था और उसका रुख बहुत सकारात्मक था। वह उस कच्चे लोहे की तरह था जिसे भट्टी में झोंक दिया गया हो और जो उत्तम स्टेनलेस स्टील बन कर बाहर निकला हो। आज वह भारत में जेबघड़ी बनानेवाले सबसे बड़े समूह में सर्वोच्च स्थान पर है। वह वहाँ पहुँचा क्योंकि उसने अपनी सकारात्मक सोच नहीं छोड़ी। तो जब आपके पास कोई वजह या लक्ष्य होता है तो आपके अंदर का नेता जाग जाता है। आपके जीतने के पत्ते हैं सकारात्मकता और निष्पक्षता।''

पदों की बात नहीं सोचें - बिल्कुल वैसे ही जैसे दशकों पहले गुजरात में त्रिभुवनदास भाई ने दूध की नवनिर्मित सहकारी संस्था अमूल का चेयरमैन बनने की कोई इच्छा नहीं संजोई थी। इसी कारण मोरारजी देसाई ने उन्हें वह ज़िम्मेदारी सौंपी, और उन्होंने सालों तक आनंद में दूध पैदा करनेवाले किसानों की श्रेष्ठता से सेवा की। सच्चे नेता पदों की कामना नहीं करते।

साबू ने कहा कि ''मैं खुद को महान नेता नहीं मानता।'' उन्होंने बताया कि वे क्लब प्रेसिडेंट और बाद में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर के ओहदे लेने के अनिच्छुक थे। लेकिन जब वे डीजी बने तो कुछ लोगों ने उनसे कहा कि अगले वर्ष जुलाई में वे कोई भी नहीं रहेंगे। उस पर उन्होंने कहा कि चूँकि उनकी खुद को किसी ऊँचे ओहदे पर बैठाने की कोई योजना नहीं थी, तो उनकी इस तरह की कोई दुर्गति होना भी संभव नहीं था। ''तो इसलिए अपने मन में किसी पद का जुनून मत सवार होने दीजिये; एक अच्छा नेता हमेशा अपने काम से बनता है।''

अपने मूल्यों को अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बनाएँ - इसके लिए सबसे पहली ज़रूरत है एक अवगुणरहित चरित्र की। ''दिखावा नहीं चलता। लोग मूर्ख नहीं हैं, वे हमें वैसे ही ताड़ लेते हैं जैसे हम खुद को आईने में देखकर जान लेते हैं कि अंदर क्या है।''

बाएं से : पीआरआईडी मनोज देसाई, पीआरआईपी राजेन्द्र के साबू, पीआरआईपी के आर रवीन्द्रन और पीआरआईडी वाई पी दास।

लोकलुभावनवाद नाम का ज़हर - उन्होंने कहा कि डिस्ट्रिक्ट के नेताओं को रोटरी के सही मूल्यों को आत्मसात कर लेना चाहिए ''जो हमें दयालु, विचारशील और अपने बच्चों तथा बाकी रोटेरियनों के लिए अनुकरणीय बनना सिखाते हैं।'' लोकप्रियता ऐसा ज़हर है जिससे हर हालत में बचना चाहिए और चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो, सही रास्ता ही चुनना चाहिए।

ईमानदारी - उन्होंने कहा कि रोटरी व्यापार और व्यवसाय में बहुत ऊँचे नैतिक मापदंड का पक्षधर है और यही वह आधार स्तंभ है जिस पर रोटरी की इमारत खड़ी है। ''आप सब इस स्तंभ के संरक्षक होंगे और आपको यह सुनिश्चित करना है कि यह कमज़ोर न पड़े।'' अपने एक और अनुभव का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि जर्मन कंपनी से उनकी व्यावसायिक साझेदारी (बिज़नेस पार्टनरशिप) के दौरान जर्मन उन पर पूरा विश्वास करते थे और उनकी उत्कृष्ट विशेष मशीनों की नकल करके खुद की दूसरी समानांतर फैक्टरी खोलने में उन्हें ज़्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती। ''लेकिन मैंने उनके विश्वास को आघात नहीं पहुँचाया और मैंने ईमानदारी पर अपनी सोच पर कभी पश्चाताप भी नहीं किया।''

निवेश की दुनिया में यह बात मानी जाती है कि ''नैतिक दीवालियापन वित्तीय दीवालियेपन से पहले आता है।'' सत्यम के रामालिंगा राजू इस बात के अच्छे उदाहरण हैं कि जब आप ईमानदारी को खिड़की से बाहर फेंक देते हैं तो क्या होता है।

बड़ा सोचें, बड़ा करें - एक नेता को हमेशा तात्कालिक वर्तमान से आगे का सोचना चाहिए। साबू ने कहा, ''हम कई बार सम्मेलनों में भोजन, कार्यक्रमों, समय के सही उपयोग के बारे में सोचते हैं और शिकायत करते हैं। यह नेतृत्व नहीं है।'' उन्होंने रोटरी इंटरनैशनल के पूर्व प्रेसिडेंट, ऑस्ट्रेलिया के क्लेम रेनूफ, का उदाहरण दिया जिन्होंने दुनिया को पोलियो-मुक्त करने के अपने सपने को साकार करने के लिए पूरे रोटरी विश्व को प्रेरित कर दिया था। यह सपना अब पूरी तरह साकार होने की कगार पर है। साक्षरता, शेल्टर बॉक्स, मेडिकल मिशन, और जल परियोजनाओं की तरह और कई नये विचार भी उभरकर सामने आए हैं, उन्होंने कहा।

उन्होंने यह भी कहा कि बड़ी सोच पर यदि फौरन अमल किया जाए तो उससे महान परिणाम

मिलते हैं जैसे उत्तराखंड में आई आपदा और श्रीलंका में आई सुनामी के बाद स्कूल बनाने तथा गुजरात में आए भूकंप के बाद गाँव बनाने में हुआ।

अपनी टीम होशियारी से चुनें - उन्होंने सभी मौजूद डीजी इलेक्ट से कहा कि एक डीजी होने के नाते उन्हें ''अपनी टीम बुद्धिमानी से चुननी होगी और महत्वपूर्ण पद सिर्फ इसलिए कुछ लोगों को नहीं दे देने होंगे क्योंकि उन्होंने चुनाव जीतने में उनकी मदद की थी। यह ठीक उस तरह है जैसे हम अपने बिज़नेस या व्यवसाय में अपनी मदद किये जाने के लिए मुख्य पद चापलूसों को नहीं दे देते। काम करने के लिए उत्तम लोगों का चुनाव करें क्योंकि वे आपके स्थाई समर्थक बनेंगे और आपका लक्ष्य पाने में आपकी मदद करेंगे।'' साबू ने कहा कि यदि अमल करने के लिए सही लोगों का चुनाव नहीं किया जाए तो महान योजनाएं भी असफल हो जाती हैं। एक बार सही टीम का चुनाव हो जाए तो ''आपको उनके साथ टीम का कैप्टन और उसका एक हिस्सा बन कर खड़ा होना चाहिए, इसलिए नहीं कि आप सर्वश्रेष्ठ हैं बल्कि इसलिए कि आप उस टीम का हिस्सा हैं जिसमें सब खिलाड़ी सर्वश्रेष्ठ हैं।''

इसके बाद साबू ने उन डीजी का उदाहरण दिया जिनसे उन्होंने कमान संभाली थी, दिवंगत आर के बैरी। उन्होंने एक ऐसे उम्मीदवार का गवर्नर बनने के लिए समर्थन किया था जो उस पद के लिए उचित नहीं थे। ''उन्होंने बाद में मुझसे कहा: 'राजा, मैंने नर्क देख किया।' सही रास्ते पर रहो और अपने साल के अंत में तुम खुश रहोगे।''

रास्ते में न खड़े हों - आरआई के पूर्व प्रेसिडेंट ने कहा कि एक अच्छे नेता को अपनी महत्वाकांक्षाएं, अहम और सबसे ऊपर, अपनी मूर्खता को रास्ते से हटा देना चाहिए। इंटरनैशनल असेंबली में उन्हें कई बार यह देख कर दुख हुआ है कि ''कई गवर्नर-इलेक्ट अपने खुद के आरआई प्रेसिडेंट से मिलने के बजाय अगले साल के आरआई प्रेसिडेंट से मिलने का उतावलापन दिखाते हैं। कारण स्पष्ट है। वे अपना साल समाप्त होने के बाद अगले साल के लिए अभी से अपनी नियुक्तियाँ सुनिश्चित करवाना चाहते हैं। जब आपका लक्ष्य ही ऐसा हो तो आप बहकावे में हैं। -- डिस्ट्रिक्ट में अपने खुद के प्रदर्शन की कीमत पर।'' उन्होंने फिर सॉक्रेटिस का उदाहरण दिया जो सिर्फ उन्हीं को अपना शिष्य बनाते थे जिन्हें तालाब में मछलियाँ दिखाई देती थीं, न कि खुद की छवि।

लचीलापन और दृढ़ता - उन्होंने कहा कि सशक्त होना एक और बढ़िया ज़रिया है ''लेकिन नम्र और लचीला हो कर, कठोर और इतना सख्त, भुरभुरा हो कर नहीं'' कि आप टूट जाएं, बिल्कुल वैसे ही जैसे एक चीनी दार्शनिक ने कहा था। ''दोस्तों, हर चीज़ जिसमें घास और पेड़ भी शामिल हैं, जब ज़िंदा है तब लचीली है, और जब मर जाती है तो सूखी और भुरभुरी हो जाती है।'' लेकिन साथ ही उन्होंने एक चेतावनी भी दी। वह यह कि लचीलेपन का यह मतलब नहीं कि आप अपने ''उन मूल्यों से जिन्हें आप संजो कर रखते हैं, उन सिद्धांतों से जिनके आधार पर आप जीते हैं, या उन आदर्शों से जो आपके संगठन ने अपनाए हैं, समझौता कर लें। यदि आपको कुछ गलत दिखाई देता है तो हिम्मत करके उठिये और उसके खिलाफ आवाज़ उठाइये। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो इसका मतलब होगा कि आप उसमें सहयोग दे रहे हैं। सच्चाई, ईमानदारी, गरिमा और नेकनीयती को दोबारा परिभाषित नहीं किया जा सकता।''

आप ग़लत भी हो सकते हैं - उन्होंने कहा कि आपको एक और सिद्धांत याद रखना चाहिए कि आप ग़लत भी हो सकते हैं और ''मुझसे ग़लती हो गई, आई एम सॉरी'' कहना न सिर्फ आपका बल्कि दूसरे व्यक्ति का भी आत्मसम्मान बढ़ाने में बहुत मददगार साबित होगा।

जो कहें वो करें - उन्होंने यह बात उस स्कूल के बच्चों के एक संदेश का उदाहरण दे कर स्पष्ट की जिसका वे प्रबंधन देखते हैं। बच्चों ने अपनी शिक्षिका से कहा: ''ह्मारे माता-पिता की शिकायत रहती है कि हम उनकी बात नहीं सुनते। मैडम, प्लीज़ उन्हें बताइये कि हमारी उन पर हमेशा नज़र रहती है।'' इसी तरह कृपया ध्यान रहे कि बाकी रोटेरियन चाहे आपकी बात नहीं सुन रहे हों, ''लेकिन उनकी आप पर, मुझ पर, और बाकी सब पर, खासकर उन पर जो रोटरी में ऊँचे पदों पर पहुँच रहे हैं, हमेशा नज़र रहती है।''

अपना भाषण समाप्त करने से पहले उन्होंने दो विचार सामने रखे; गुणवत्ता और विनम्रता के। ''अपने आचरण में, अपनी टीम में, योजनाओं में, कांफ्रेंस में, सदस्यता में, हर बात में गुणवत्ता को अपना चरित्र बना लें।

दूसरा संदेश, विनम्रता पर, विशेष रूप से कक्ष में बैठे डीजी इलेक्ट की पत्नियों और पतियों के लिए था। साबू ने याद करते हुए कहा कि जब वे डिस्ट्रिक्ट गवर्नर बने थे तब उनकी पत्नी उषा ने कहा था: 'भगवान, आपने मेरे पति को गवर्नर बना दिया; अब मुझे इतनी शक्ति दीजिये कि मैं उन्हें विनम्र रख सकूँ।'

चित्र: रशीदा भगत

DO YOU HAVE AN INSPIRING STORY?

Tell us a story.
A story that changed a life or many.
We believe that a Rotarian's life changing story is worth telling.

Rotary My Story is a collection of stories written by Rotarians. Stories which are an inspiration for readers or stories which narrate a Rotarian's experience of bringing a tangible change to a life or many.

Your story can be penned in English, Hindi or Kannada. Please limit the number of pages to three A4 size sheets and use font size '10' if you are typing .

Rotary My Story will be a collector's edition and will be released in 4 volumes.

Best stories will win prizes. This is icing on the cake.

- Prizes:
  a) Winning Entry: Rs.50,000/- (1 No.)
  b) 1st Runner Up: Rs.25,000/- (1 No.)
  c) 2nd Runner Up: Rs.15,000/- (1 No.)
  d) Special Recognition: Rs.5,000/- (10 Nos.)

All published stories shall carry a prize of Rs.1000/- with certificate.

If you choose to email your story: rotarymystory@gmail.com
For any questions: knowmore.rotarymystory@gmail.com
Visit us : www.rotarymystory.com

We all have a life story and a message that can inspire others to live a better life.

**The decision taken by our selection panel will be final. Please refer to our website for terms and conditions.*

Rotary My Story - AN INITIATIVE OF ROTARY BANGALORE ORCHARDS.

Published by - Paola Dakoju Ravishankar Foundation.

के एल संस्थान 2017

दार्शनिक सिंचाव के साथ सीधी बात

जयश्री

दो आध्यात्मिक गुरुओ, महात्रिया रा और स्वामी सुखबोधानंद, ने प्रतिनिधियों को उत्साहित किया।

महात्रिया रा

यदि आपको 2025 तक भारत में 1.25 मिलियन सदस्यों के लक्ष्य को हासिल करना है, तो रोटरी का परिचय कम से कम 15 मिलियन शिक्षित भारतीयों से कराइए। सम्मेलनों में विभिन्न देशों के राष्ट्र गान बजाने के बजाय, एक 'रोटरी गान' बजाइए।

कार्यसूची को संकुचित कीजिये, भाषणों की बजाय वार्तालाप कीजिये।

गैर-रोटेरियनों से रोटरी के बारे में बात कीजिये।

दार्शनिक एवं *इन्फ़िनिथेइस्म* के संस्थापक महात्रिया रा द्वारा दिए गए ये कुछ सुझाव थे। ''मैं बहुत से कुलीन रोटेरियनों को उनके मोबाइल चलाते हुए देखता हूँ...कुछ तो अब भी सो रहे है और जब भी वे जागते है, भाषण ज़ारी रहता है।'' सदस्यों के अवरोधन पर ध्यान देने वाले वक्ताओं पर टिप्पणी करते हुए, उन्होंने कहा कि क्लब के अध्यक्षों को एक साप्ताहिक बैठक को 'केवल सुनने' के लिए समर्पित करना चाहिए। हर एक के पास एक विचार है, प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसकी आवाज सुनी जाए। ''दुर्भाग्यवश, हमारे पास ऐसा मंच नहीं है जहाँ हम एक दूसरे से सीख सके, हम सामूहिक बुद्धिमानी का फायदा नहीं उठा रहे है। वक्ताओं को आमंत्रित करने पर बहुत सारा ध्यान है लेकिन क्लब के सदस्यों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों को सुनने का बमुश्किल कोई ख्याल है। जब आप आपके दल को सुने जाने का वह अवसर प्रदान करेंगे, तो वह अधिक लगाव को जन्म देगा। फिर आप अपने सदस्यों को रोक सकते है,'' उन्होंने कहा।

रोटरी के कार्यक्रमों में गैर-रोटेरियनों को आवश्यक रूप से आमंत्रित किया जाना चाहिए ताकि उन्हें संगठन का प्रत्यक्ष अनुभव हो सके। ''अन्यथा, यह उस शाकाहारी सम्मेलन की तरह होगा जहाँ सभी शाकाहारियों को आमंत्रित किया गया होगा, वे शाकाहारियों से शाकाहार की बात करेंगे, सभी शाकाहारी शाकाहार की अच्छाई के गुणगान करेंगे और सम्मेलन के बाद सभी शाकाहारी लोग शाकाहारी रहेंगे और सभी गैर-शाकाहारी लोग गैर-शाकाहारी रहेंगे। क्या एक शाकाहारी सम्मेलन को गैर-शाकाहारियों को आमंत्रित नहीं करना चाहिए? यदि एक को भी बदला जा सका तो कुछ उपलब्धि तो हासिल होगी। मेरे विचार से मेरे जैसे गैर-रोटेरियनों को रोटरी के अच्छे कार्यों के बारे में अधिक सुनना चाहिए, बजाय रोटेरियनों को रोटेरियनों से रोटरी के बारे में बात करने के।''

एक सफल जीवन के लिए उनके आदर्शों की सूची:

- किसी भी रिश्ते से तभी जुड़े जब आप कुछ दे सकते हो, ना की इस वजह से कि आप क्या ले सकते हो... क्योंकि यह आपको किसी के रहम पर छोड़ देता है। इसे भौतिक होने की आवश्यकता नहीं है। सही समय पर दी गई शाबाशी परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त है। उन्होंने कहा जब वरिष्ठ नेतृत्वकर्ता हॉल में प्रवेश कर रहे थे, उन्होंने पीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन को लोगों की तरफ हाथ हिलाते और समारोह में उन्हें आमंत्रित करते हुए देखा। ''मुझे पता है रोटरी के नियम बहुत सख्त है, लेकिन इस बर्ताव से वह लोगों के चेहरे पर मुस्कान लाए, उन्हें सम्मानित महसूस करवाया और सम्मिलित होने का एहसास दिलाया। एक छोटी सी प्रतिक्रिया कभी-कभी लोगों को खास महसूस करवाने के लिए काफी होती है।''

रो ई निदेशक सी भास्कर और पत्नी माला की उपस्थिति में महात्रिया रा को डीजी जवाहरलाल जैन और उनकी पत्नी सुमित्रा ने सम्मानित किया।

- कहीं से भी परेशानी आने दीजिये, भारत में शिकायत मुक्त रोटरी के लिए हल आपसे आयेगा, क्योंकि हल केवल आपके पास है। समस्या के बारे में ज्यादा विचार मत कीजिये, अपनी समझ का 10 प्रतिशत से भी कम हिस्सा समस्या पर लगाइए, 90 प्रतिशत उसका उपाय ढूँढने में लगाइए।
- सवाल कहाँ से कहाँ तक का नहीं है; सवाल यहाँ से कहाँ तक का है? अपनी पूर्व की उपलब्धियों की ख़ुशी मत मनाइये। कल की सफलता को आज की प्रशंसा की जरुरत नहीं है। किसी स्तर पर खुद से कहिये कि यह एक नयी शुरुआत है। पोलियो मामलों की संख्या का उल्लेख करते हुए, उन्होंने कहा, ''16 नयी शुरुआत है। यह जानना शानदार है कि 350,000 मामलें अब नीचे गिरकर 16 मामलों पर आ गए है, लेकिन अब इसे 12 मामलों तक लाने के लिए कार्य कीजिये, और फिर वहाँ से शून्य तक के लिए। एक मिलियन पेड़ लगाना परियोजना नहीं है, उनको बड़ा करना परियोजना है। आप बहुत सारे पेड़ लगा सकते है; फोटो खिंचवाते है, पुरस्कार लेते है। लेकिन जब अगले वर्ष आप वहाँ जाते है, आधे पेड़ वहाँ नहीं होते है। ऐसी परियोजना शुरू करें जिसे आगामी तीन अध्यक्ष आगे ले जा सके।''
- जितना बड़ा लक्ष्य, उतनी ही अधिक अभिप्रेरणा। जितना श्रेष्ठ विचार, उतनी ही महान प्रेरणा। जितनी ऊँची वेदिका, उतना गहरा समर्पण। जब हम सब एक साथ एक दल के रूप में आते है, तो हम एक दूसरे को प्रेरित करते है और अन्य लोगों को प्रेरित करते है। यदि आपके पास एक पर्याप्त मजबूत 'क्यों' नहीं है, तो आप दूसरों को प्रेरित नहीं कर सकते।
- फोकस केवल किसी एक चीज़ को 'हाँ' कहने की योग्यता ही नहीं, अपितु शेष 99 को 'ना' कहने का अनुशासन भी है। बहुत सारी परियोजनाओं की भीड़ मत लगाइए। जब आप एक डीजी या अध्यक्ष का पद सँभालते है तो आप बहुत सारी चीज़ें करने के लालच में होते है। लेकिन याद रखिये 10 परियोजनाओं के लिए अपना 100 प्रतिशत देना 100 चीज़ों पर अपना 10 प्रतिशत देने से बेहतर है।

स्वामी सुखबोधानंद (बाएँ) सत्र के अध्यक्ष पीआरआईडी पी टी प्रभाकर के साथ।

स्वामी सुखबोधानंद

देने *के लिए एकजुट* विषय-वस्तु पर बोलते हुए, स्वामी सुखबोधानंद ने यह अवलोकन किया, हम तकनीक के जानकार तो है, लेकिन समझ अभी भी कम है। सामूहिक विनाश के हथियार बढ़ चुके है, राष्ट्र एक दूसरे को बर्बाद करने के लिए और अधिक संगठित है, लेकिन क्या यह विकास है? उन्होंने पूछा, इस ओर ध्यान दिलाते हुए कि संवेदना और सहानुभूति समय की मांग है ताकि लालच, भ्रष्टाचार और नफरत से भरी दुनिया को ठीक किया जा सके।

''पत्थर एक बार मंदिर जाता है और भगवन बन जाता है; मगर इंसान बार-बार मंदिर जाकर भी पत्थर ही रहता है। मंदिर और मस्जिद क्या गज़ब की जगह है... भिखारी लोग बाहर मांगते है और अमीर लोग अंदर मांगते है,'' उन्होंने ज़ोरदार आवाज़ में कहा।

अगर आप वास्तव में अपने चारों ओर 'देखेंगे', तो आप अनुभव करेंगे कि देने के लिए बहुत कुछ है। सच्ची दृष्टि परिस्थिति और वातावरण को अवशोषित करना है, ना कि ऊपरी तौर पर चीज़ों को देखना। आप समझ जाएँगे कि देना वास्तव में विस्तार करना है। प्रतिक्रिया देने की बजाय उत्तर देना सीखिए। एक मुस्कुराहट के साथ दीजिये।

सुखबोधानंद ने दर्शकों को अपनी बात समझाने के लिए बीच बीच में चुटकुले एवं हास्यपूर्ण उदाहरण देकर उन्हें अपनी बातो में व्यस्त रखा। ''अच्छा करने के लिए सही समय आने का इंतजार करने के बारे में,'' उन्होंने कहा, एक हितकर परिस्थिति का इंतजार क्यों करना, यह सब दिमाग में है। पूरा हॉल हँसी से तब गुंजायमान हो उठा जब उन्होंने एक उर्दू कविता सुनाई: जवानी में, एक आदमी ने कहा था, तक़दीर है मगर किस्मत नहीं खुलती; ताजमहल बनाना चाहता हूँ, मगर मुमताज़ नहीं मिलती। जब उसे एक लड़की मिली, उसने कहा, तक़दीर है मगर किस्मत नहीं खुलती, मुमताज़ मिल गई है मगर शादी नहीं करती। शादी के बाद, वह विलाप करता है: तक़दीर है मगर किस्मत नहीं खुलती, ताजमहल बनाना चाहता हूँ, मगर मुमताज़ नहीं मरती!

ख़ुशी से दीजिये; सकारात्मकता से रहिये; खूब प्यार कीजिये... कुछ अन्य विचार थे जो उन्होंने प्रतिनिधियों के साथ साझा किये।

सत्र की अध्यक्षता पीआरआईडी पी. टी. प्रभाकर ने की थी।■

GETS

पिछले 100 सलों में रोटेरियनों ने 4.1 बिलियन डॉलर एकत्रित और निवेश कियें है

रशीदा भगत

गवर्नर्स (2018-19) के रूप में आपका सत्र, रोटरी फाउंडेशन की दूसरी शताब्दी का द्वितीय वर्ष होगा और इन 100 वर्षों में हमने जो कार्य पूर्ण किये हैं उनके मद्देनज़र हमारे सामने अदभुत व असीम संभावनाएं हैं,'' कुआलालंपुर जोन इंस्टिट्यूट में GETS (गवर्नर्स इलेक्ट ट्रेनिंग सेमिनार) के पूर्णकालिक सत्र को संबोधित करते हुए टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटजेल ने ''एक नई सदी में प्रवेश'' विषय पर ये कहा।

कुछ शानदार आँकड़ों का अनावरण करते हुए जब उन्होंने बताया कि पिछले 100 वर्षों के दौरान रोटेरियंस ने न केवल 4.1 बिलियन डॉलर एकत्रित किये बल्कि वितरित भी किये साथ ही निवेश भी किया है। ''ज़रा सोचिये, कितनी बड़ी राशि है ये... लगती है ना अविश्वसनीय। 2016-17 में जब कल्याण बेनर्जी टीआरएफ ट्रस्टी चेयर थे, हमने 304 मिलियन डॉलर की रिकॉर्ड राशि एकत्रित की थी, और आप सभी (भारत से) इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे। यदि इस बार हम प्रति वर्ष कम से कम 300 मिलियन डॉलर से शुरुआत करें, तो सोचिये कि हम अगले 100 वर्षों में क्या - क्या कर सकते हैं।''

गूगल अर्थ सा नज़रिया

उन्होने कहा कि वे जो कर रहे हैं वह उसी प्रकार है जैसे रोटरी और टीआरएफ को गूगल अर्थ की तरह देखना । नेटज़ेल ने कहा कि जुलाई 2018 में जब डीजीई के इस बैच का कार्यकाल शुरू होगा तो उन्हें भी अपने अपने मंडल पर इसी तरह का नज़रिया रखना होगा।

उन्होंने कहा, टीआरएफ शताब्दी वर्ष के दौरान, बेनर्जी ने एक व्यापक कोष बनाने की परिकल्पना की थी, और उन्होंने इस वर्ष यह लक्ष्य 360 मिलियन डॉलर निर्धारित किया है। 2018-19 के लिए

बाएं से : टीआरएफ ट्रस्टी इलेक्ट गुलाम वाहनवटी, टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, रो ई निदेशक सी भास्कर और जॉन मैथ्यूस।

प्रस्तावित लक्ष्य की घोषणा आगामी ट्रस्टी चेयर रॉन बर्टन द्वारा सैन डिएगो के अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन में की जायेगी। ''एक व्यापक कोष बनाने का लक्ष्य इसलिये भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वार्षिक कोष और पोलियो कोष की सम्मिलित राशि से कहीं अधिक होता है। पिछले कई सालों से हमने सिर्फ इन्हीं दोनों के बारे में बात की है, और दोनों ही महत्वपूर्ण भी हैं, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में हम और अधिक विवेकशील हो गए हैं।''

इस के अलावा भी कई और क्षेत्र महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं और इन की पहचान साल के शुरुआत में ही कर, इनके लिये धन एकत्र करने की योजना बनाई जाती है और लक्ष्य प्राप्त किए जाते हैं।

विशाल परिदृश्य के तहत, ट्रस्टीज़ ने एक और महत्वपूर्ण लक्ष्य प्राप्त करने की योजना बनाई है - वर्ष 2025 तक रोटरी फाउंडेशन एंडोमेन्ट फण्ड 2025 का निर्माण ''इसका मतलब है कि सन 2025 तक हमें 2 बिलियन और 25 मिलियन डॉलर एकत्रित करने हैं। जब ऐसा हो जायेगा तो हम नक़द एक बिलियन डॉलर का निवेश करेंगे साथ ही 1 बिलियन 25 मिलियन डॉलर हम विरासत की प्रतिबद्धता के लिये सुरक्षित रखेंगे।''

वर्तमान परिदृश्य

वस्तु स्थिति स्पष्ट करते हुए 31 अक्टूबर को नेटज़ेल ने बताया, टीआरएफ के पास 1.1 बिलियन डॉलर का एन्डोमेन्ट फंड था, इनमें से बैंक में नकदी के अलावा ''एक तिहाई उपहार और प्रतिबद्धताओं में ,संकल्प पूरा करने और भुगतान करने में लगा, 420 मिलियन डॉलर निवेश भी किये गये I बाकी दो-तिहाई हिस्सा हम विरासत प्रतिबद्धताओं की मद में रख रहे हैं जिस से - राज्यों को उपहार, प्रतिबद्धता, जीवन बीमा पॉलिसियां और इसके अतिरिक्त भविष्य में दाताओं की देय प्रतिबद्धता को मिला कर देखा जा तो तकनीकी रूप से, हम ने सन 2025 तक 2025 मिलियन डॉलर तक पहुंचने का क़रीब आधा सफ़र तो तय कर ही लिया हैं।''

ट्रस्टी चेयर ने कहा कि अंत में जब यह राशि इकट्ठी हो कर निवेशित की जाएगी तो हमेशा के लिए हर साल लगभग 100 मिलियन डॉलर की न्यूनतम अनुमानित आय प्राप्त होगी जिसका उपयोग टीआरएफ़ कार्यों में किया जायेगा।

आखिर यही तो है रोटरी; ''सपनों को हक़ीकत में बदलना। नई शताब्दी में प्रवेश के साथ ही प्रान्तपाल, निदेशक, ट्रस्टी, क्लब अध्यक्ष सहित हम सभी को सपने देखने की जरूरत है, और रोटरी लीडर के रूप में हमारा लक्ष्य होगा उन सपनों को साकार करना।''

नेटज़ेल ने कहा कि वे कई बार भारत की यात्रा पर आये हैं ''मैंने हमेशा आप को जोश और ऊर्जा से भरा पाया और निरंतर नयी संभावनाओं को तलाश कर उन का समाधान करते देखा है। आप धन्य हैं क्योंकि आप दुनिया के उस क्षेत्र में रहते हैं जहां लोगों की जरूरतें सबसे ज़्यादा हैं। निदेशक सी भास्कर जैसे वरिष्ठ नेताओं, के नेतृत्व में, आप सदैव अपनी क्षमता से अधिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तत्पर रहते हैं।''

भविष्य

आगामी वर्षों में टीआरएफ़ किस ओर अग्रसर है, नेटज़ेल ने कहा कि पिछले 100 सालों में हमने कई सबक सीखे हैं, भविष्य की योजना बनाते समय उनका विश्लेषण भी किया है। और आगामी गवर्नर्स को भी अपने मंडल और क्लब स्तर पर इसी प्रक्रिया को दोहराना होगा। ''पिछले पाँच वर्षों के दौरान इवान्स्टन में एक सबक सीखा और व्यक्त भी किया, रोटरी एक संगठन है। मैंने 'वन रोटरी' की कई

वर्ष 2025 तक रोटरी फाउंडेशन एंडोमेन्ट फण्ड 2025 का निर्माण इसका मतलब है कि सन 2025 तक हमें 2 बिलियन और 25 मिलियन डॉलर एकत्रित करने हैं।

अलग-अलग परिभाषाओं को सुना, पर मेरा मानना है कि यह तीन बुनियादी तत्व का प्रतिनिधित्व करता है- क्लब, आरआई और फाउंडेशन ।''

साथ ही पिछले 30 वर्षों में पोलियो के माध्यम से हमने यह सीखा कि समाज सेवा के लिए सहभागिता अति महत्वपूर्ण हैं। ''आप ही वो माध्यम हैं जो छोटे छोटे टुकड़ों को जोड़ता है। आरआई और टीआरएफ के साथ आप क्लब के माध्यम से ज़मीनी स्तर पर रोटरी का प्रतिनिधित्व करते हैं, और यही भूमिका आपको इतना महत्वपूर्ण बनाती है।''

आने वाले वर्षों में दो विषय महत्वपूर्ण हैं - शांति और सहभागिता।, यदि रोटेरियंस और बाकी दुनिया बीमारी, निरक्षरता को खत्म कर आर्थिक विकास लाना चाहते हैं तो शांति महत्वपूर्ण है - ये दुनिया में लंबे समय से शांति में रुकावट बनी रही हैं। ''इसीलिए हम इस अवधारणा को पुनर्स्थापित करना चाहते हैं कि हमारे सभी छह क्षेत्रों में सकारात्मक शांति निर्माण बढ़ाने के तत्व हैं, और इसीलिए 2002 में रोटरी शांति केंद्र कार्यक्रम सात विश्वविद्यालयों और छह केंद्रों के माध्यम से शुरू किया गया था।''

''हमारे पास 100 देशों में 1,052 पूर्व रोटरी पीस एलुमनाई हैं और अब उन्हें पहचानने का समय गया है। पिछले 12-15 महीनों से, पूर्व निदेशक के आर रवींद्रन की अगुवाई में एक 'भविष्य योजना समिति' काम कर रही है, जो हमें बतायेगी कि 2002 से अब तक, हमने रोटरी पीस कार्यक्रम के माध्यम से क्या - क्या सीखा है, जनवरी 2018 में सैन डिएगो में यह रिपोर्ट ट्रस्टीज़ को मिल जायेगी।''

उन्हें विश्वास है कि यह समिति कुछ नई चीजें बताएगी जिन्हें उनके डीजी कार्यकाल में शुरू कर दिया जायेगा। ''हम 2030 में कहाँ होंगे इस की बड़ी तस्वीर देखना चाहते हैं साथ ही कुछ प्रेरक साझेदारीयां भी विकसित करना चाहेंगे ।''

मैंने हमेशा भापत को जोश और ऊर्जा से भरा पाया और निरंतर नयी संभावनाओं को तलाश कर उन का समाधान करते देखा है।

नेटज़ेल ने कहा कि दुनिया में पोलियो उन्मूलन में भारतीय रोटेरियंस का विशिष्ट व् गौरवपूर्ण स्थान है। आज विश्व पोलियो मुक्त है, सिर्फ दो देशों को छोड़कर जहाँ पोलियो के 16 मामले दर्ज़ हुए हैं ... 11 अफगानिस्तान और पांच पाकिस्तान से, ''ज़रा सोचिये, जहां 1988 में विश्व में एक दिन में पोलियो के 1,000 मामले आते थे और साल में 350,000, और कहाँ इस साल सिर्फ 16 केस । शीघ्र ही हम पोलियो के अंतिम केस की तरफ बढ़ रहे हैं और इसकी बहुत अधिक संभावना है कि आपके बैच के गवर्नर ही यह घोषणा करें की अब दुनिया में पोलियो का कोई भी मामला नहीं है। सोच के देखिये। दुनिया में पोलियो बहुत पहले से, ईसा पूर्व पांचवी, छठी शताब्दी से मौज़ूद है।''

परन्तु जब पोलियो का कोई भी मामला ना पाया जाये तो उस वर्ष हमारी ज़िम्मेदारी और ज़्यादा बढ़ जायेगी क्योंकि दुनिया को पोलियो मुक्त घोषित करने में वहां से तीन वर्ष लगेंगे, तब तक काम ख़त्म नहीं होगा । ''मैं आप में से कई लोगों को जानता हूँ जो भारत को पोलियो मुक्त करने के बाद अन्य ज़िम्मेदारियाँ निभा रहे हैं और मानव स्वभाव भी यही है। हम रोटेरियंस हैं, उद्यमी हैं; हमें काम दे दो, इसे पूरा करेंगे और फिर नई चीजों की ओर बढ़ जाएंगे । लेकिन जब तक 36 महीनो तक पोलियो का कोई भी मामला नहीं आता तब तक हमारा काम पूरा नहीं होगा, इसीलिए हमें उसी ऊर्जा और उत्साह के साथ 60 देशों के 400 मिलियन बच्चों का पोलियो से बचाव करना होगा।''

बेनर्जी का नेतृत्व

बाद में फाउंडेशन के एक सत्र में, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने बताया कि टीआरएफ शताब्दी वर्ष के दौरान, जब कल्याण बेनर्जी ट्रस्टी चेयर थे, ''हमारे बीच कई बार चर्चा हुई कि इस साल हम लक्ष्य क्या रखें, आखिरकार कल्याण बेनर्जी ने कहा : 'ठीक है, मेरा व्यापक लक्ष्य है - 300 मिलियन डॉलर।' हम सभी को एक झटका लगा लेकिन फिर सब ने महसूस किया कि हम 'व्यापक लक्ष्य' की बात कर रहे हैं और वो भी शताब्दी वर्ष में। अगला शताब्दी वर्ष 100 साल बाद आयेगा इसलिए हमारा लक्ष्य भी विशिष्ट होना चाहिए।''

गुप्ता ने कहा कि पिछले साल 300 मिलियन डॉलर एक विशिष्ट लक्ष्य था, ''और इसकी खूबसूरती तो देखिये , ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल ने इस साल 360 मिलियन डॉलर का लक्ष्य निर्धारित किया है, लेकिन किसी ने इस पर कोई कोई सवाल नहीं उठाया। इससे साबित हो जाता है कि एक बार जब आप बड़ा लक्ष्य प्राप्त लेते हैं तो फिर उसे बढ़ाते ही जाते हैं । कल्याण (बेनर्जी), आपके महान नेतृत्व के लिए बहुत - बहुत धन्यवाद।''

अगली बड़ी परियोजना ?

इसके बाद, गुप्ता ने टीआरएफ ट्रस्टी के आर रविंद्रन और आर आई प्रेसिडेंट इयान रिजले के बीच हुई एक रोचक चर्चा बताई कि रोटरी की अगली प्रमुख परियोजना क्या होगी? ''निष्कर्ष निकला कि रोटरी विश्व ऐसी योजना के लिए राज़ी नहीं है, जिसमें 30 साल का समय लगे और अरबों डॉलर खर्च हों पर साथ ही हमें अपनी आँखें खुली भी रखनी होंगी। अगर हमारे पास पोलियो उन्मूलन परियोजना की सफलता की कहानी नहीं होती तो आज रोटरी कहां होता ? क्या हम इतनी बड़ी धन राशि जुटा पाते जितनी हम आज जुटा पा रहे हैं ? इसका उत्तर है, नहीं। इसीलिये हमें योजनाओं की ज़रुरत है...इसकी प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और यह योजना हमारे छः क्षेत्रों में कोई भी हो सकती है पर स्तरीय होनी चाहिए; यह योजना क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय कहीं भी हो सकती है पर जो कुछ भी हम तय करेंगे वो ना केवल मापनीय होगी बल्कि पूर्ण करने योग्य भी होगी।''

अंत में, के एल इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष आर थेनाचंद्रन ने सबका स्वागत किया और सचिव दीपक शिकारापुर ने धन्यवाद प्रस्ताव पढ़ा।

चित्र : रशीदा भगत

पिछले 100 वर्षों के दौरान रोटेरियंस ने न केवल 4.1 बिलियन डॉलर एकत्रित किये बल्कि वितरित भी किये साथ ही निवेश भी किया है। ज़रा सोचिये, कितनी बड़ी राशि है ये... लगती है ना अविश्वसनीय।

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल

विश्व पोलियो दिवस के उपलक्ष्य में कार रैली का आयोजन

वी मुत्तुकुमारण

टीमवर्क तब सामने आया जब मंडल 3231 के सभी 68 रोटरी क्लबों ने 24 अक्टूबर को विश्व पोलियो दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित एक मेगा कार रैली में भाग लिया। डीजी के जवारीलाल जैन ने इस अभियान का नेतृत्व किया जिसमें 1,000 से अधिक कारों का काफिला तिरूवन्नामलाई, वेल्लोर, तिरुवल्लुर और कांचीपुरम मंडलों से होकर गुजरा, जहाँ संबंधित मंडल के कलेक्टरों ने अपने-अपने मंडल में रैली को झंडा दिखा कर रवाना किया।

पोलियो उन्मूलन, डेंगू और स्वच्छ भारत अभियान के बारे में आम जनता को जागरूक और संवेदनशील बनाने के लिए एक लाख से अधिक लीफलेट्स संपूर्ण मार्ग पर वितरित किया गया और 100 डिजिटल बैनर तैयार किए गए। रोटरी क्लब तिरुवन्नामलाई प्राइड के अध्यक्ष ए अंबाजसू ने कहा, ''जबकि मुख्य कारवां 16 प्रमुख शहरों से होकर गुजरा, हमने 50 शेयर ऑटो भी किराए पर लिया, जिसने रोटरी के संदेश को फैलाने के लिए गाँवों और छोटे शहरों की बार-बार यात्राएं की।''

डी जी जवारीलाल जैन (दाएँ से छठे) के साथ रोटेरियन।

30 सरकारी विद्यालयों के लगभग 8,000 छात्रों ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। रैली के समापन में डीजी जैन ने कहा,''रोटरी शुरु से लेकर आज तक पोलियो को जड़-मूल से समाप्त करने का कारण है। पोलियो मुक्त दुनिया सुनिश्चित करना हमारी प्रतिज्ञा है।'' ■

सम्मेलन

टोरंटो का भ्रमण

रैंडी ड्रूज़िन

जब आप रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2018 के लिए 23 से 27 जून तक टोरंटो में होंगे, तो अपने निर्धारित समय में से कुछ समय इस खूबसूरत शहर को देखने के लिए निकालिए। प्रतिष्ठित सीएन टावर टोरंटो के सबसे प्रसिद्ध पर्यटक आकर्षणों में से एक है जो हर साल लगभग 1.5 मिलियन पर्यटकों का स्वागत करता है। इस टॉवर में दो पर्यवेक्षण क्षेत्र और दो रेस्टोरेंट है जहाँ से अत्यंत मनोहर नज़ारे दिखाई देते है। साहसिक कारनामे के लिए, यह टावर 1,168 फीट की ऊँचाई पर स्थित इसके मुख्य चबूतरे की बाहरी किनार पर हाथ खुले करके चलने की पेशकश करता है।

दिमाग को सुकून पहुंचाने के लिए, आप सैंट लॉरेंस मार्केट की सैर कर सकते है जिसमें दर्जनों विक्रेता खाद्य सामग्रियां और विशेष व्यंजन बेचते है, या आप डिस्टिलरी डिस्ट्रिक्ट में विचरण कर सकते है जो एक नवीनीकृत किया हुआ एतिहासिक क्षेत्र है जिसे एक मनोरंजन एवं खरीददारी इलाके में परिवर्तित कर दिया गया है।

आप गोथिक रिवाइवल शैली में निर्मित महल कासा लोमा का भी भ्रमण कर सकते है। 1914 में कनाडियाई करोड़पति द्वारा निर्मित इस महल में लगभग 100 सज्जित कमरे है और तो और खूफिया गलियारे और 5 एकड़ के उद्यान है। किसी समय में निजी निवास ''हाउस ओन द हिल'' रहा यह पहाड़ी पर स्थित घर अब एक संग्रहालय और आतिथ्य स्थल है।

प्रकृति का आनंद लेने के लिए, हाई पार्क की सैर कीजिये जो धंसे हुए बगीचों, लटकती टोकरी के बगीचों, प्राकृतिक रास्तों एवं जलधाराओं वाला एक विशाल हरा क्षेत्र है या एक नाव से टोरंटो आइलैंड जाइये, जहां पर घास के मैदान, जंगल, झील, और रेतीले तट है।

टोरंटो में होने वाले 2018 रोटरी सम्मेलन के लिए *riconvention.org* पर पंजीकरण कीजिये।

टीआरएफः एक दूसरी सदी की ओर

रशीदा भगत

जहाँ द रोटरी फाउंडेशन ने ट्रस्टी चेयर पॉल नेट्ज़ेल की अध्यक्षता में अपनी दूसरी सदी की शुरूआत कर दी है, वहीं पूर्व आरआई प्रेसिडेंट और पूर्व ट्रस्टी चेयर कल्याण बेनर्जी, जिन्होंने टीआरएफ के शताब्दी वर्ष में 300 मिलियन डॉलर के लक्ष्य का बड़ा सपना देखा था, 304 मिलियन डॉलर की रेखा पार कर उससे आगे निकल गए थे - ने पिछले कुछ दशकों में टीआरएफ की कुछ बड़ी उप्लब्धियाँ याद कीं।

कुआला लंपूर ज़ोन इंस्टिट्यूट में GETS के एक सत्र में उन्होंने टीआरएफ की अध्यक्षता के अपने दौर में अपने सामने आईं चुनौतियों की एक फेहरिस्त बताई। उनकी पत्नी बिनौता के 17 साल बाद दूसरी किडनी के प्रत्यारोपण (ट्रांसप्लांट) के बाद कुछ अप्रत्याशित समस्याएं उत्पन्न हो गई थीं जिनका प्रत्यारोपण से कोई संबंध नहीं था लेकिन जिन्होंने उन्हें अस्पताल में रखा और ''मुझे यहाँ से वहाँ दौड़ाया। आधी अवधि के आसपास जनवरी 2017 में एक वक्त ऐसा आया जब मैंने इस्तीफा देना चाहा था। लेकिन तब आपके जैसे अच्छे दोस्तों ने मुझे समझाया कि यदि ऐसा हुआ तो साल का बाकी हिस्सा, बिना तैयारी के मेरी जगह किसी को लाने से, और भी बेकार हो सकता है और शताब्दी वर्ष को पूरी तरह बरबाद कर सकता है। तो मैं अपने पद पर डटा रहा और विश्व भर में हर कोई इस चुनौती का सामना करने के लिए खड़ा हो गया।''

एटलांटा कन्वेंशन के एक दिन पहले एक स्पष्ट चित्र उभराः ''रोटेरियनों की उदारदिली से, कर्मचारियों के पूरे समर्थन से और दुनिया भर से ग़ज़ब के अप्रत्याशित उपहारों के लगातार आते रहने से, रोटरी वर्ष समाप्त होने तक हम 300 मिलियन अमेरिकी डॉलर के अपने लक्ष्य को पार कर चुके थे,'' बेनर्जी ने कहा।

उन्होंने कहा कि एक सदी पहले जब आरआई प्रेसिडेंट आर्च सी क्लंफ ने दुनिया में अच्छा काम करने के लिए एंडोमेंट फंड (पुण्यार्थ राशि) की प्रस्तावना रखी थी तो ''उन्होंने एक साधारण सा प्रस्ताव रखा था जिसके परिणाम असाधारण हुए। उसने दूरगामी परिणामों वाली ऐसी घटनाओं की एक श्रंखला शुरू कर दी जो न सिर्फ रोटरी में बहुत बड़ा परिवर्तन लाई बल्कि जिसने दुनिया के हर हिस्से में लाखों पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की ज़िंदगियों में भी बहुत बड़ा बदलाव ला दिया।''

यूरोप में युद्ध के दौरान 1917 किसी भी तरह से पैसे जमा करने के लिए शुभ समय नहीं था। युद्ध के बाद का वातावरण बहुत खराब था; बाज़ार में जल्दी ही भारी गिरावट आ गई थी, विश्व अर्थव्यवस्था ढह चली थी, महामंदी (द ग्रेट डिप्रैशन) शुरू हो गई थी और दूसरे विश्व युद्ध की छाया में ''इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं था कि रोटेरियन आर्च क्लंफ के उम्दा विचार को अपनाने के लिए दौड़े चले नहीं आए।'' लेकिन वे जल्दी हार माननेवालों में से नहीं थे, उन्होंने कोशिश नहीं छोड़ी। ''1917 में आर्च क्लंफ के लिए कहा जाता था कि वे बहुत बड़े स्वप्नद्रष्टा थे।''

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेट्ज़ेल, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी और बिनोता की तस्वीर लेते हुए। टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता और पीडीजी गण राजकुमार और जॉन डैनियल भी चित्र में शामिल हैं।

लेकिन दुनिया भर में बहुत महत्वपूर्ण प्रॉजेक्ट्स के लिए "3.7 बिलियन डॉलर अमेरिकी डॉलर दे कर टीआरएफ उनके सबसे बड़े सपने से भी आगे निकल गया था।"

बेनर्जी ने कहा कि रोटेरियनों को याद रखना चाहिए कि टीआरएफ 1917 में सिर्फ 26.5 डॉलर से शुरू हुआ था, जिसकी आज के मूल्यांकन के हिसाब से कीमत लगभग 550 डॉलर है, बस एक स्मार्ट फोन खरीदने के लिए पर्याप्त, लेकिन दुनिया में अच्छा काम करने के महत्वाकांक्षी मिशन वाले फाउंडेशन की मूल रकम के लिए बहुत कम।"

टीआरएफ ने अपना पहला ग्रांट 1930 में 500 डॉलर (2017 के मूल्यांकन में 7000 डॉलर) का दिया था। उसकी हाल की कुछ रकम से तुलना कीजिये। "सिर्फ 2015-16 के रोटरी वर्ष में हमारे फाउंडेशन ने ग्लोबल और डिस्ट्रिक्ट ग्रांट के रूप में लगभग 100 मिलियन डॉलर दिये, 4 मिलियन डॉलर रोटरी पीस फेलोशिप के लिए दिये और 114.7 मिलियन डॉलर पोलिओ निर्मूलन के लिए।"

उन्होंने कहा हालांकि ये आंकड़े बहुत प्रभावित करनेवाले हैं "लेकिन जिन आंकड़ों की कभी भी जानकारी नहीं मिलेगी वे हैं उन लोगों की संख्या जिनका जीवन हमारे फाउंडेशन के काम से सुधर गया है, बदल गया है या बच गया है।"

सिर्फ 2015-16 के रोटरी वर्ष में हमारे फाउंडेशन ने ग्लोबल और डिस्ट्रिक्ट ग्रांट के रूप में लगभग 100 मिलियन डॉलर दिये, 4 मिलियन डॉलर रोटरी पीस फेलोशिप के लिए दिये और 114.7 मिलियन डॉलर पोलिओ निर्मूलन के लिए।

बेनर्जी के बताए गए आंकड़ों में से कुछ हैं -

- 16 मिलियन - इतने लोग आज चल पा रहे हैं लेकिन यदि रोटरी का ग्लोबल पोलिओ इरैडिकेशन इनिशिएटिव न होता तो वे पोलिओ से पक्षाघात के शिकार हो गए होते।
- 1.5 मिलियन - पोलिओ वैक्सीन के साथ दिये जानेवाले विटैमिन ए से इतनी जानें बची हैं।
- 268 - इतने लोगों पर हाल ही में भारत से रुवांडा गए ग्लोबल ग्रांट मेडिकल मिशन द्वारा ज़िंदगी बदल देनेवाले ऑपरेशन किये गए।
- 423,795 - घाना, भारत, नाइजीरिया, दक्षिण अफ्रीका और युगांडा में वर्ष 2016 में रोटरी फैमिली हैल्थ डेज़ में इतने लोगों को मुफ्त स्वास्थ्य सेवा मिली।
- 41,850 - टीआरएफ द्वारा पिछली सदी में इतने स्कॉलर्स की पढ़ाई पर निधि खर्च की गई है। यह प्रोग्राम शुरू किया गया था क्योंकि हमारा विश्वास था कि दूसरे देश में पढ़ने और रहने में समय व्यतीत करने से एक युवा का दुनिया को देखने का नज़रिया बदल जाएगा और उसमें रोटरी के सेवा और सहनशीलता के मूल्य आ जाएंगे।
- 1,067 - रोटरी पीस सेंटर कर्यक्रमों के इतने ग्रैजुएट आज दुनिया भर में राजदूत, पत्रकार, शिक्षक और पुलिस अफसर की हैसियत से शांति फैलाने का काम कर रहे हैं।

बेनर्जी ने अपने भाषण में पीस स्कॉलरों और आम लोगों द्वारा

पीआरआईपी और पूर्व टीआरएफ ट्रस्टी चेयर कल्याण बेनर्जी।

असाधारण प्रॉजेक्ट पूरे करने में रोटरी की मदद करने के कुछ किस्से बताए। जैसे अपनी एकमात्र पोती मुन्नी के 2001 में कच्छ में आए भूकंप में मारे जाने के बाद फातिमा बेगम द्वारा अपने जीवन की सारी जमा पूँजी - रु 85,000 - दान कर देने और रोटेरियनों से यह गुज़ारिश करने का किस्सा कि वह राशि वे तहस-नहस हुए भुज शहर में दोबारा बनाये जा रहे घरों के लिए इस्तेमाल करें। उन्होंने यह रकम अपनी हज यात्रा के लिए बचा कर रखी थी।

हालांकि आर्च क्लंफ ने रोटेरियनों को यह कभी नहीं बताया था कि उन्हें दुनिया में अच्छा काम कैसे करना है - उन्हें विश्वास था कि रोटेरियन इसका रास्ता खुद ही निकाल लेंगे -, उन्होंने इस बात की स्पष्ट जानकारी दी थी कि टीआरएफ को क्या नहीं करना चाहिए। "और वह था ईंटों और पत्थरों के स्मारक बनाना। इसके विपरीत उन्होंने अपनी कृति की कल्पना एक जीती-जागती, साँस लेनेवाली संस्था के रूप में की थी जो, उन्हीं के शब्दों में "अनश्वर मस्तिष्कों पर काम करें उन पर ऐसा प्रभाव छोड़े कि उनकी चमक अनंत काल तक अमर रहे।"

उनके शब्दों ने प्रारंभिक रोटेरियनों को एकदम शुरुआत से टीआरएफ की स्थापना करने के लिए प्रेरित किया: "ईंटों और पत्थरों से नहीं बल्कि ज़िन्दगियों, स्वास्थ्य और आशा से। और आज उनकी विरासत ज़िंदा है हर उस रोटेरियन में जिसने कभी भी ग्रांट का कोई प्रॉजेक्ट किया हो, किसी स्कॉलर को अपने घर में रखा हो, किसी बच्चे को पोलिओ प्रतिरक्षा की डोज़ दी हो, या हमारे फाउंडेशन में पैसा दिया हो। और वह उन लाखों लोगों में भी ज़िंदा है जिन्हें हमारे अच्छे काम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लाभ हुआ हो।"

चित्र: रशीदा भगत

Star Performers (TRF)

Zone 4		
Trophy	**RI District**	**IPDG**
Highest Total Contribution to TRF	3141	Gopal Rai Mandhania
Highest contribution to Annual Fund	3141	Gopal Rai Mandhania
Highest contribution to Endowment Fund	3011	N Subramanian
Highest Per Capita Giving to Annual Fund	3141	Gopal Rai Mandhania
Highest contribution to Polio Fund	3141	Gopal Rai Mandhania

Donor	Trophy	IPDG	District
Nitish Laharry Trophy	Highest Giving to Annual Fund	Gopal Rai Mandhania	3141
Binota and Kalyan Banerjee Trophy	Highest Giving to Endowment Fund	N Subramanian	3011
Usha and Raja Saboo Trophy	Highest Giving to Polio Fund	Gopal Rai Mandhania	3141
Usha and Raja Saboo Trophy	Highest Total Contribution to TRF	Gopal Rai Mandhania	3141

IPDG Gopal Rai Mandhania and spouse Seema receive the award from PRIP Rajendra Saboo in the presence of TRF Trustee Chair Paul Netzel, PRIP Kalyan Banerjee, TRF Trustee Sushil Gupta, PRID Manoj Desai, RID C Basker and TRF Trustee-elect Gulam Vahanvaty.

IPDG H R Ananth and spouse Girija with their award. DG Asha Prasanna Kumar, TRF Trustee Chair Paul Netzel, TRF Trustee Sushil Gupta, PRID Manoj Desai, PDG R Badri Prasad and DGN Sameer Hariani are also present.

— Zones 4, 5 and 6A

Zone 5		
Trophy	**RI District**	**IPDG**
Highest Total Contribution to TRF	3190	H R Ananth
Highest contribution to Annual Fund	3190	H R Ananth
Highest contribution to Endowment Fund	3020	S V S Rao
Highest Per Capita Giving to Annual Fund	3190	H R Ananth
Highest contribution to Polio Fund	3190	H R Ananth

Zone 6A		
Trophy	**RI District**	**IPDG**
Highest Total Contribution to TRF	3292	Jaya Shah
Highest contribution to Annual Fund	3292	Jaya Shah
Highest contribution to Endowment Fund	3120	Pramod Kumar
Highest Per Capita Giving to Annual Fund	3292	Jaya Shah

Maximum contribution towards AKS membership

3011	N Subramanian
3141	Gopal Mandhania
3190	H R Ananth
3211	John Daniel

IPDG N Subramanian receives his award from PRIP Kalyan Banerjee and TRF Trustee Sushil Gupta in the presence of TRF Trustee Chair Paul Netzel, PRID Manoj Desai and RID C Basker.

IPDG Jaya Shah receives an award from TRF Trustee Chair Paul Netzel in the presence of RRFC Vijay Jalan, EMGA Ashok Panjwani, TRF Trustee Sushil Gupta and PRID Manoj Desai.

Pictures by Rtn Sridhar Bharathy

Star Performers (Membership and

Zone 4		
Award Category	**Awardees**	**District**
Highest members growth	Pramod S Parikh	3132
Highest % of membership growth	Pramod S Parikh	3132
Highest growth in women members	Gopal Rai Mandhania	3141

Zone 5		
Award Category	**Awardees**	**District**
Highest members growth	Natarajan Nagoji	3230
Highest % of membership growth	Ratna Prabhakar Anne	3150
Highest growth in women members	Ravi D S	3182

Zone 6A		
Award Category	**Awardees**	**District**
Highest members growth	Jaya Shah	3292
Highest % of membership growth	Jaya Shah	3292
Highest growth in women members	Jaya Shah	3292

IPDG Gopal Rai Mandhania receives his award from TRF Trustee Chair Paul Netzel in the presence of PDGs Vijay Jalan, Bal Inamdar, Ashish Desai, DG Prafull Sharma, PDGs T N Subramanian, Jayant Kulkarni, TRF Trustee-elect Gulam Vahanvaty, RID C Basker and Institute Chairman R Theenachandran.

IPDG Chandrasekhar Kolvekar and spouse Ruta with TRF Trustee Chair Paul Netzel and RID C Basker.

IPDG K Vijayakumar receives an award from RID John C Matthews in the presence of PDGs R Asokan, Sathappa Periyanan, Sam Patibandla and DG Chinnadurai Abdullah.

Public Image) — Zones 4, 5 and 6A

Zone 4		
Award Category	**Awardees**	**District**
Public Image Award	Subramanian N	3011
AV Media Award	Chandrashekhar Kolvekar	3142
Social Media Award	Prashant Deshmukh	3131
Print Media Award	Pramod S Parikh	3132

Zone 6A		
Award Category	**Awardees**	**District**
Public Image Award	Brig Narayan Nayak	3262
AV Media Award	Major Deepak Mehta	3261
Social Media Award	Rintu Guha Niyogi	3240
Print Media Award	Pramod Kumar	3120

Zone 5		
Award Category	**Awardees**	**District**
Public Image Award	Muruganandam M	3000
Social Media Award	Vijayakumar K	3212
Print Media Award	Rao S V S	3020

Brand Ambassador Award Zone 4, 5 and 6A	
Awardees	**District**
Subramanian N	3011
Gopal Mandhania	3141

IPDG Prashant Deshmukh and spouse Padmaja receive an award from TRF Trustee Chair Paul Netzel in the presence of (from R) DG Abhay Gadgil, PDGs Vinay Kulkarni, Deepak Purohit, Deepak Shikarpur, Sudhir Rashingkar, Ashish Desai, Sam Patibandla and Rajadurai Michael.

IPDG John Daniel and spouse Meera receive the award from RID John Matthews in the presence of PDG K S Sasi Kumar, DG Suresh Mathew, PDGs Sam Patibandla and R Reghunath.

IPDG Narayan Nayak and Sunanda receive the award from TRF Trustee Chair Paul Netzel in the presence of PDGs Sibabrata Dash, Ashok Mahopatra and Ashwini Kar.

Pictures by Rasheeda Bhagat & Rtn Sridhar Bharathy

के एल संस्थान

हवाईयन

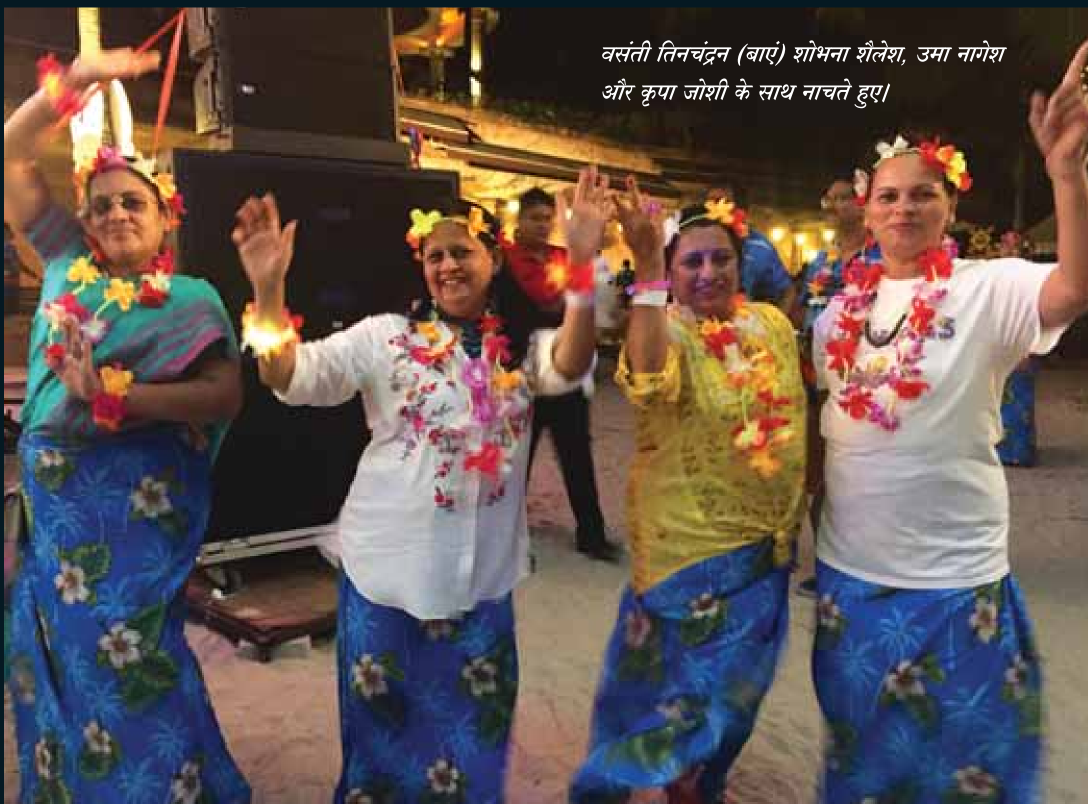

वसंती तिनचंद्रन (बाएं) शोभना शैलेश, उमा नागेश और कृपा जोशी के साथ नाचते हुए।

बाएं से : डीजी पी गोपालकृष्णन, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, आरआईडी सी भास्कर, पीडीजी दीपक शिखरपुर और प्रमोद परिख।

रोटेरियन श्रीधर भारती

बाएं से : जयश्री जयरामन, टीम लीडर - CSR और WinS, RISAO, वानती और पीआरआईपी के आर रवींद्रन के साथ।

मूड़

बाएं से : *पीआरआईपी गण राजेंद्र के साबु, कल्याण बेनर्जी, बिनोता बेनर्जी, उषा साबु, नायनतारा और पीआरआईडी अशोक महाजन।*

पीडीजी कमल संघवी

बाएं से : *टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल ए नेटज़ेल, रोई अध्यक्ष इयन रायसली, जूलियट राइसली, मेरी एल्लन, आरआईडी जॉन सी मेथ्यूस की पत्नी।*

खडे हुए : *टीआरएफ ट्रस्टी-इलेक्ट गुलाम वाहनवटी, माला भास्कर, आरआईडी सी भास्कर, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर और नलिनी प्रभाकर।*

चित्र: रशीदा भगत ; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

के एल संस्थान

हलके फुलके पल

रशीदा भगत

आर्कषण का केन्द्र

के एल इंस्टिट्यूट में एक व्यक्ति जो सभी के आकर्षण का केन्द्र रही वो थी पूर्व आर आई प्रेसिडेंट कल्याण बेनर्जी की धर्मपत्नी बिनोता बेनर्जी। दूसरे गुर्दा प्रत्यारोपण की तक़लीफ़ और अन्य परेशानियों से जूझने के बाद वो रोटरी के किसी बड़े समारोह में चार साल बाद लौटी थीं। जिस तरह से लोगों ने उन्हें घेर रखा था और उनके साथ फोटो, सेल्फी खिंचवाने के लिए आपा धापी हो रही थी, उसे देख कर स्पष्ट हुआ कि उनके पति क्यों कहते थे, ''रोटरी की दुनिया में बिनोता अलग स्थान रखती है, उसकी अपनी सत्ता है।''

रोटरी फाउंडेशन सभा स्थल पर, हमेशा की तरह मुस्कुराते हुए बेनर्जी ने आने के तुरंत बाद दिये सम्बोधन में आर आई निदेशक सी भास्कर द्वारा पिछली शाम को उनके आगमन पर आयोजित भव्य स्वागत के लिए धन्यवाद् दिया और कहा, अब वो ठीक है, वज़न कम हुआ है, लेकिन साहस भी कम नहीं हुआ हैं।

ड्रम की आवाज़ ... दूरी नहीं!

विकसित देशों की तुलना में हमारे यहाँ,विशेषकर सार्वजनिक समारोह में, ऊंची आवाज़ में बजाये जाने वाले संगीत पर के एल इंस्टिट्यूट में, आरआई अध्यक्ष इयान रिसले बोले कि अब वो अपने उद्घाटन भाषण देने के लिए पूरे आराम में हैं। हॉल में वी आई पी प्रदर्शन के दौरान ज़ोर ज़ोर से बज रहे ड्रम्स पर चुटकी लेते हुए उन्होंने कहा ,अंदर आते हुए ''मुझे ड्रम्स की आवाज़ अत्यन्त कर्णप्रिय लग रही थी और मेरे कान अभी भी उससे उबर रहे हैं साथ ही यह जान कर मैं पूरी तरह निश्चिंत हूँ, कि वैसे भी आपको मेरी आवाज़ सुनाई नहीं देगी,कोई बात नहीं, उन आवाज़ों को धन्यवाद ।''

लेकिन उचित कहने के लिए कहा किस ने!

केएल इंस्टीट्यूट के सबसे यादगार सत्र में से एक ''फ्रैंक्ली स्पीकिंग'' था,जिसमें सत्र के अंतिम चरण में आरआई अध्यक्ष इयान रिसले, ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ल, पीआरआईपी राजेंद्र साबू और कल्याण बेनर्जी जैसे वरिष्ठ रोटरी नेताओं से पीआरआईपी औ टीआरएफ़ ट्रस्टी के आर रवींद्रन ने करते अपने चुस्त अंदाज़ में रोई निदेशक सी भास्कर से परिहास किया कि क्या वे 15 मिनट और ले सकते हैं ? जब भास्कर हॉल में नहीं दिखे तो

पीडीजी मोहन मुल्हेरकर और उनकी पत्नी वीणा ने पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी और बिनोता को स्वागत रो ई निदेशक सी भास्कर और माला की उपस्थिति में किया।

बिनोता बेनर्जी अब ठीक है, वज़न कम हुआ है, लेकिन साहस भी कम नहीं हुआ हैं।

पूर्व रोई अध्यक्ष
कल्यान बेनर्जी

बाएं से : पीडीजी साम मोवा, राजेंद्र राय, डीजीई गण बाबु पेरम, बारजेश सिंघाल और पीडीजी बालकृष्ण इनामदार।

उन्होने चुटकी ली, ''वो शहर से भाग गये हैं, सो हम समय ले लेते हैं।''

और अगला सवाल गया साबू की तरफ़, जिनके बारे में सभी जानते हैं कि वे PETS / SETS और जोन इंस्टिट्यूट जैसे सम्मेलनों को दूर दराज़, विदेशों में आयोजित करने के खिलाफ हैं।

रवीन्द्रन ने पूछा: ''राजा, आप PETS/ SETS आदि को शहर से बाहर आयोजित करने का सदैव विरोध करते हैं। मैं आपसे पूरी तरह असहमत हूँ। लेकिन यहाँ ,क्या मलेशिया में इंस्टीट्यूट का आयोजन ... किसी भारतीय महानगर की तुलना में सस्ता नहीं है?''

साबू: ''रवि, यह अनुचित है। यहाँ कुआलालंपुर में बैठकर और इंस्टीट्यूट का मज़ा लेते हुए, तुम मुझसे पूछ रहे हो कि यह गलत है या सही।''

रवींद्रन: ''लेकिन उचित कहने के लिए कहा किस ने?''

(साबू के *फ्रैंक्ली स्पीकिंग* लेख में विस्तृत प्रतिक्रिया पढ़ें)

दो आलसी

GETS समापन की ओर बढ़ रहा था और ये समय था डीजीई की प्रतिक्रिया जानने का, उनमे से एक मंच पर आया और बोला, ''GETS में सब कुछ बढ़िया था पर प्रस्तोता और ट्रेनर थोड़े कमज़ोर थे। अगर ये सत्र लंच के बाद रखे जाते हम भी एक झपकी ले लेते, अन्यथा प्रशिक्षण सत्र बहुत बढ़िया थे।''

इसके जवाब में GETS के अध्यक्ष पीडीजी सैम मुववा ने मंच पर आने के बाद व्यंग्यपूर्वक कहा, ''मैं जानता हूं कि उनमें से एक मैं हूँ पर मुझे आश्चर्य है कि दूसरा कौन था?''

बाद में, जब रोई निदेशक सी भास्कर की बारी आई तो ठहाकों के बीच उन्होंने कहा, ''लगता है वो दूसरा मैं हूँ क्योंकि सुबह के सत्र में मैं ही था, आपने दोनों सही व्यक्तियों की पहचान कर ली है।''

राजा साबू की तुलना ताजमहल से... ताजमहल एक शीतल और खूबसूरत स्मारक है, लोग उस स्मारक को देखने जाते हैं जो किसी मृतक की याद में बनाया गया है। मैं उतना प्राचीन भी नहीं हूँ

पूर्व रोई अध्यक्ष
राजेन्द्र साबु

मैं उतना प्राचीन भी नहीं हूँ

GETS में पीआरआईपी राजेन्द्र के साबू के सम्बोधन ''इग्नाईट द लीडर इन यू'' से ठीक पहले पीडीजी अनिल अग्रवाल ने उनका परिचय कराते हुए ज़िक्र किया, जब उन्हें एक रोटेरियन ने कहा था कि ''हमारे मंडल में दो चीजें नहीं हैं; ताजमहल और राजा साबू।''

अपने वक्तव्य की शुरूआत में साबू ने चुटकी ली, ''राजा साबू की तुलना ताजमहल से... ताजमहल एक शीतल और खूबसूरत स्मारक है, लोग उस स्मारक को देखने जाते हैं जो किसी मृतक की याद में बनाया गया है। मैं उतना प्राचीन भी नहीं हूँ अनिल... फिर भी इस अद्भुत परिचय के लिए धन्यवाद।''

''और ये माना जाता है, मेरा भाषण एक प्रेरणादायक भाषण होना चाहिए लेकिन मुझे आश्चर्य है कि आखिरकार, एक अतीत, एक लम्बा अतीत भविष्य को प्रेरणा कैसे दे सकता है? जबकि, वास्तव में, आपके साथ पारस्परिक विचार विमर्ष से मुझे प्रेरित होना चाहिए!''

चित्र: रशीदा भगत

के एल संस्थान

टोस्टिंग टीआरएफ

रोटेरियन श्रीधर भारती

टोस्ट टु टीआरएफ : (बाएं से) टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, ईएमजीए के पी नागेश, टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल, आरपीआईसी साम पटीबंड्ला, रो ई अध्यक्ष इयन राय्सली, आरपीआईसी राजादुरै जी माईकेल और ईएमजीए अशोक पंजवानी।

सहयोगी : (बाएं से) मंजु दास, नयनतारा महाजन, टीआरएफ ट्रस्टी इलेक्ट गुलाम वाहनवटी, पीआरआईडी गण शेखर मेहता, अशोक महाजन, वाई पी दास, और राशी मेहता।

एक शांत क्षण : रो ई अध्यक्ष इयन राय्सली और जूलियट।

रोटेरियन श्रीधर भारती

नृत्य में मग्न : (दाएं से) जूलियट राय्सली के साथ पुनिता भाटिया और रीतु चौधरी।

मेन इन ब्लाक : पीआरआईडी मनोज देसाई, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी और पीआरआईडी शेखर मेहता।

पीजीडी अजय कला की पत्नी सुनिता, विजया गुप्ता, आर सी अशोक गुप्ता की पत्नी, पीआरआईपी के आर रवींद्रन, पीआरआईडी पांडुरंगा सेट्टी, पीडीजी अजय कला और पीआरआईडी पी टी प्रभाकर।

बाएं से :

(दाएं से) इन्स्टिट्यूट चेयरमेन आर तिनचंद्रन, इन्स्टिट्यूट कनवेनर और आरआईडी सी भास्कर, पीआरआईपी राजेंद्र के साबु, पीडीजी एस कृष्णस्वामी, टीआरएफ ट्रस्टी इलेक्ट गुलाम वाहनवटी और पीआरआईडी पी टी प्रभाकर।

(बाएं से) आर सी अशोक गुप्ता, पीडीजी नारायण नायक, एकेएस सदस्य सुधी जब्बर, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, डीजी सुरेश मैथ्यू और पीडीजी विश्राम पटेल।

(बाएं से) मेरलीन कामदार पीडीजी गण भरत पांडया, जे बी कामदार, कमल संघवी और सुभाष साहु।

बाएं से :

पारंपरिक स्वागत : डीजी आशा प्रसन्ना कुमार, आरआईडी सी भास्कर, रो इ अध्यक्ष इयन राय्सली, जूलियट और माला भास्कर।

दाएं से : ईएमजीए अशोक पंजवानी और मीरा, डीजीएन समीर हरैयानी (संस्थान के एम सी), उमा नागेश के साथ।

सेल्फी टाइम : (बाएं से) पीडीजी शरत चंद्रा, ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल, पीडीजी नारायण नायक और उनकी पत्नी सुनंदा।

चित्र: रशीदा भगत ; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

प्रगति में साझेदार

रेखा शेट्टी

कुआला लम्पुर में रोटरी संस्थान 2017 के दौरान, गवर्नर निर्वाचितों के साथियों के लिए एक दो-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। माला भास्कर के नेतृत्व में, साथियों ने 2018 में रोटरी के संचालन के लिए ना केवल जीवंतता, बल्कि अतुलनीय एवं अभिनव विचार भी प्रदान किये। दो दिवसीय उच्च संवादात्मक कार्यशाला के दौरान, उन्होंने ऐसे विचार साझा किये जो रोटरी आन्दोलन को परिवर्तित कर सकते है।

अब उन्हें डीजीयों की मदद करने के लिए सिर्फ चुनौती नहीं दी जा रही थी, बल्कि वास्तव में उनसे उनकी नारी शक्ति का योगदान देने के लिए कहा जा रहा था ताकि वे रोटरी के कार्य में विशाल सहयोग दे सके।

प्रार्थना गीत और रोटरी गीतों ने सत्र को एक विशेष ऊर्जा से भर दिया। एन जयंती राजा सीनिवासन और एन नलिनी ओलिवन्नन द्वारा एक रोचक और मनोरंजक प्रश्नोत्तरी सत्र का आयोजन किया गया, जिससे यह साबित हो गया कि जोड़ीदार आश्चर्यजनक रूप से कितने जानकार है।

गोल मेज प्रबंध के कारण सभी एक दूसरे से बात कर पा रहे थे और 'रोटरी के प्रति महिलाएं कैसे आकर्षित हो सकती है' के ऊपर प्रस्तुति नवीन और जीवंत थी। निदेशक जॉन मैथ्यूज़ की पत्नी मैरी एलन मैथ्यूज़ स्पष्टवादी एवं प्रभावी थी। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के उनके अनुभवों को भी साझा किया। वसंती थीनाचंद्रन ने मंडल बैठकों को अधिक प्रभावी बनाने के संदर्भ में एक रोचक प्रस्तुतिकरण पेश किया।

चर्चा में, महिला रोटेरियनों की संख्या में वृद्धि करने से लेकर, कैसे वे संस्थान में अपने योगदान को बढ़ावा दे सकती है के विषय शामिल थे। डॉक्टर शर्मिष्ठा देसाई ने परियोजनाओं पर एक प्रायोगिक प्रस्तुति दी। मंजू दास ने एक पत्नी के रूप में अपने संवेदनशील अनुभवों को साझा किया। मार्लिन कामदार ने वीआईपी लोगों और मेहमानों के लिए एक

आमतौर पर साथी गवर्नरों के निष्क्रिय समर्थक होते है। इस समूह में मैंने उन सभी को अत्यंत क्रियाशील पाया। कार्यक्रम के प्रारूप ने अधिक सहभागिता और पारस्परिक प्रभाव को भी स्वीकारा।

माला भास्कर

रो ई निदेशक सी भास्कर की पत्नी

डीजी गण के जीवन साथी एक प्रशिक्षण सत्र में।

अच्छा सहायक बनने के उनके रहस्य साझा किये। ऊषा साबू के अफ्रीका के उनके अनुभवों पर प्रेरक प्रस्तुतिकरण ने दर्शकों को और अधिक अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं की योजना बनाने के लिए प्रेरित किया। किरण जालान ने अपने उत्साहपूर्ण व्यक्तित्व से चर्चा में एक ख़ास असर डाला।

संचालित किये गए रोचक सत्रों में से नलिनी ओलीवन्नन द्वारा संचालित एक सत्र ने जोड़ीदारों के साथ विशेष परियोजनाओं और योजनाओं पर फोकस किया। नारी शक्ति को उनके मंडल में क्रियाशील करने के लिए उनमें से अधिकांश के पास सर्वोत्कृष्ट परियोजनाएं थी।

दम्पति विवाह के लिए प्राचीन भारतीय धारणा है जो एक सूत्र में बंधे साझेदारों की एक यात्रा है। जैसे बैल गाड़ी को एक साथ खींचते है। इस दो दिवसीय सत्र ने यह साबित कर दिया कि रोटरी साथियों के द्वारा प्रदान किये गए समान समर्थन और शक्ति पर भरोसा करती है।

अरस्तु ने लिखा था, 'दोस्ती वास्तव में एक साझेदारी है।'

''मैं साझेदारों के मध्य उत्साह और प्रतिबद्धता से चकित एवं प्रसन्न थी,'' माला भास्कर जोड़ीदार कार्यक्रम के विषय में कहती है। ''आमतौर पर साथी गवर्नरों के निष्क्रिय समर्थक होते है। इस समूह में मैंने उन सभी को अत्यंत क्रियाशील पाया। कार्यक्रम के प्रारूप ने अधिक सहभागिता और पारस्परिक प्रभाव को भी स्वीकारा।''

लेखक मंडल 3232 की पीडीजी है और उन्होंने 'कैसे जोड़ीदार संस्थान के दान को बढ़ाने के लिए अग्रसक्रिय कदम उठा सकते है' पर एक संवादात्मक सत्र का आयोजन किया।

माला भास्कर (बाएँ बैठे हुई) अन्य पत्नियों के साथ प्रचार में।

चित्र: रशीदा भगत

बातचीत दिल खोल के

रशीदा भगत

हम हिन्दुस्तानियों को शिकायत करने का बहुत शौक है, छोटी-छोटी बात पर भी हम चिट्ठी लिख देते हैं। और सिर्फ एक ही चिट्ठी नहीं उसकी प्रतियां दुनिया भर में सबको भेज देते हैं। जल्द से जल्द हमें इसे रोकना चाहिए। हालांकि, मुझे लगता है कि कुल मिलाकर भारत से मिलने वाली शिकायतों में कमी आ रही है । फिर भी मेरा मानना है कि हमें, हर किसी को अपनी शिकायत बताने की प्रवर्ति पर अंकुश लगाने की ज़रुरत हैं। कोई वज़ह नहीं कि हम अपनी समस्याओं को खुद ना सुलझा पाएं। इसे रो ई में जाने की जरूरत ही क्यूँ पड़े?''

और इस प्रकार क्वालालंपुर इंस्टीट्यूट के सर्वश्रेष्ठ सत्रों में से एक 'फ्रेंकली स्पीकिंग' के मध्यस्थ रहे पीआरआईपी के आर रविंद्रन द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब दिया पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी ने।

शुरुआत में रवींद्रन ने रो ई अध्यक्ष इयन राय्सली से ये सवाल पूछा था कि आपके कार्यकाल के दौरान रो ई संचालन में ''अब तक रोटरी की दुनिया का सबसे अच्छा और सबसे खराब बात क्या रहा।'' राय्सली ने जवाब दिया, ''सबसे अच्छी बात बताना आसान है; जूलियट और मैंने रोटरी की दुनिया को भरपूर देखा है, रोटरी के नाम पर हुए काम और इस की उत्कृष्ट परियोजनाओं को देखा है ... यह सब अत्यन्त उत्साहजनक है पर सबसे खराब है भारत से आने वाली ई-मेल की बाढ़, जहां लोग एक दूसरे पर बेईमान होने का आरोप लगाते हैं। और ये बहुत ज़्यादा आती हैं.. हफ्ते में चार या पांच।''

पहले तो पीआरआईपी राजेन्द्र साबू ने चुटकी ली : ''मुझे खुशी है कि मैं इस वर्ष अध्यक्ष नहीं हूं क्योंकि मैं उस काल से सम्बन्ध रखता हूं जब ई-मेल नहीं था।''

थोड़ा गंभीर होते हुए उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया, ''भारत में हम पद के लिये इतने लालायित क्यों रहते हैं? ज्यादातर शिकायतें किसी ना किसी चुनावी मतभेद को ले कर होती हैं। हालांकि मैं रो ई का पूर्व अध्यक्ष हूं, लेकिन इस दुनिया को छोड़ने से पहले, मैं कभी भी पूर्व रोटेरियन कहलाना नहीं चाहूँगा। रोटरी में शामिल होते समय, रोटरी की भावना को समझना चाहिए, और पद की लालसा नहीं रखनी चाहिये। मुझे समझ में नहीं आता कि हम बैठ कर मसलों को हल क्यों नहीं कर सकते।

बाएं से : *रो ई अध्यक्ष इयन राय्सली, टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल, पीआरआईपी राजेंद्र साबु और पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी।*

हमारे बीच में आगामी मंडल अध्यक्ष बैठे है; उसी पद के साथ यह जिम्मेदारी आती है कि परिवर्तन निरन्तर है।''

दुर्भाग्य से, साबू ने जोड़ा, इस व्यवहार की वजह से भारतीय रोटेरियंस द्वारा किये गये अच्छे कार्य भी लुप्त हो जाते हैं।

राय्सली ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''मुझे इसे सन्तुलित करने की ज़रूरत है; जूलियट और मुझे भारत में रोटरी के अन्तर्गत किये जा रहे बढ़िया काम देखने का अवसर मिला है। मसलन, उत्तर (उत्तराखंड) में बाढ़ के बाद, हमने स्कूलों के निर्माण को देखा। यह आश्चर्यजनक काम था और इस काम के लिए युवाओं में उत्साह भी गज़ब का था।

उन्होंने कहा, ''मैं मानता हूं कि रोटरी में हमारे यहाँ सांस्कृतिक मतभेद हैं और इसे ऐसे ही लेना चाहिए। लेकिन इसके बावजूद अगर शिकायत जायज़ हो तो भी, मुझे समझ में नहीं आता कि यह मुझे, बोर्ड के हर सदस्य, हर ट्रस्टी और वो सब सभी लोग जिनके पास ईमेल है उन्हें क्यों भेजी जानी चाहिए! हम बौखला जाते हैं और इस उपमहाद्वीप से परे हम में से वे लोग जो किसी न किसी रूप में नेतृत्व कर रहे हैं उन्हें वैसे ही लगता है जैसा *हैमलेट* में कहा गया कि डेनमार्क में कुछ न कुछ गड़बड़ ज़रूर हैं। इससे हमारी यह धारणा बनती है कि भारतीय रोटेरी खुद को संचालित नहीं कर सकती है, जबकि ऐसा नहीं है।''

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटजेल ने कहा, ''मुझे अध्यक्ष रायस्ली के विचार को दोहराने दें; मैं भी उसी तरह ईमेल के सैलाब में डूब जाता हूँ, लेकिन मेरे ख्याल से अगर हम भारत की यात्रा पर नहीं आते तो हमारा यह दृष्टिकोण सतही होता। परन्तु जब आप भारत आते हैं, यहाँ चल रहे शानदार काम काम देखते हैं तो बिल्कुल अद्भुत अनुभूति होती है।''

सदस्यता की गुणवत्ता

''भारत की दो बड़ी हस्तियों'' की ओर इंगित करते हुए रवींद्रन ने पूछा ''हमारे अंचल में, सदस्य बढ़ाने की प्रक्रिया में कहीं हम गुणवत्ता से समझौता तो नहीं कर रहे और ऐसे रोटेरियंस ला रहे हैं, जिन्हें रोटरी में नहीं होना चाहिए?''

जवाब में बेनर्जी ने कहा कि इंस्टीट्यूट के उद्घाटन सत्र के दौरान ''रो ई निदेशक सी भास्कर भारत की संख्या के बारे में बहुत आश्वस्त थे, लेकिन जब (रो ई) अध्यक्ष बोले, तो उस संख्या की विश्वसनीयता पर उन्हें संदेह हुआ। और मैंने कई बार रो ई में लोगों को यह विचार प्रकट करते हुए सुना है, भारत से प्राप्त संख्या में कितनी सत्यता है? मैं चिंतित हूँ, मैंने ऐसे क्लबों या मण्डलों के बारे में सुना है, जहां कुल सदस्य संख्या 1,000 हो सकती है, लेकिन रो ई में पेश की गई संख्या 750 है,बाकी 250 से देय राशि प्राप्त हो चुकी हो, लेकिन इसकी जानकारी रो ई को नहीं भेजी जाती।''

इस प्रश्न का सही उत्तर जो व्यक्ति दे सकता है, वो है दिल्ली में दक्षिण एशिया कार्यालय से जतिंदर सिंह ''मेरे बजाय! लेकिन मुझे लगता है संख्याओं के अलावा भी, गुणवत्ता में सुधार करने की आवश्यकता है। बड़े डॉक्टर,सर्जन,वकील, प्रोफेसर कहां हैं? क्या भारत में शीर्ष 10 उद्योगपतियों में से कोई हमारे सदस्य हैं? शायद शीर्ष 50 में भी नहीं है । समस्या यह है कि हम उनसे पूछते ही नहीं हैं।''

बेनर्जी ने अपनी नाराजगी व्यक्त की कि अक्सर भारतीय रोटेरियन उच्च पदाधिकारीयों को सम्मानित करने के लिए ''मानद सदस्य बनाने की जल्दबाज़ी करते हैं और मानद सदस्य केवल एक वर्ष के लिए सदस्य होता है। आने वाला आदमी यह नहीं जानता कि वर्ष के अंत में उनकी सदस्यता का कोई मतलब नहीं है। और शायद उसे परवाह भी नहीं होती। तो फिर हम मानद सदस्य बनाने के हथकण्डे क्यों अपना रहे हैं? उनके लिए इसका कोई मतलब नहीं है। और वास्तव में हम उन बड़े लोगों को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं जो सदस्य बन सकते हैं।''

अन्य देशों में ऐसा नहीं था; ''मैं बता सकता हूँ, यूगांडा में मुख्य न्यायाधीश, यूगांडा बैंक के अध्यक्ष आदि रोटरी सदस्य थे। परन्तु ये भारत में नहीं होता।''

रायस्ली को प्राप्त हो रहे ई मेल के अम्बार पर रवीन्द्रन ने साबू से पूछा कि ''क्या वह खुश है कि 1991-92 में रो ई अध्यक्ष के रूप में आपको वो सब नहीं देखना पड़ा जिसका सामना इयान कर हैं। क्या आपको लगता है कि आज के अध्यक्ष को विभिन्न विधाओं मैं प्रवीण होना चाहिए?''

साबू ने चुटकी ली, ''मुझे नहीं पता,लेकिन मेरा ख्याल है कि उस समय मैं अत्याधिक व्यस्त था! उस समय संचार का सबसे तेज़ माध्यम फ़ैक्स था और अध्यक्ष -निर्वाचित होने की वजह से मैं चाहता था कि मुझे फैक्स मिले क्योंकि 18 वीं मंजिल पर केवल एक फैक्स मशीन थी। और मुझे

बताया गया था: यह बहुत महंगा है, इसे आपके बजट में शामिल नहीं किया जा सकता।''

फिर वो बताने लगे कि किस प्रकार उन्हें सभी तरह के मुद्दों पर अग्रिम फैक्स संदेश भेजना पड़ता था, जिसमें ये फैक्स भी शामिल थे ''उषा और मैं शाकाहारी हैं ...पर कोई नहीं समझा कि शाकाहारी होता क्या है।''

रायस्ली ने तपाक से चुटकी ली ''कुछ भी नहीं बदला है!''

साबू ने याद किया कि उन्होंने अपनी पत्नी उषा से शाकाहारी भोजन की सूची,(बनाने की विधि सहित) तैयार करनेका अनुरोध किया था. एक बार, ब्राजील के दौरे से पहले, उनके सचिव ने अपने शाकाहारी व्यंजनों के साथ उन्हें पकाने की विधि पर 22 पेज फैक्स किए। यात्रा के दौरान जब भोजन परोसा गया, ''वो एक व्यंजन लाया जिसके ऊपर मछली रखी थी, उषा ने कहा यह तो मछली है। और परोसने वाले ने कहा: 'इसे निकाल दो।' इस प्रकार, रो ई निदेशक ने कहा कि आपने जो 22 पेज भेजे थे, उनमें से इस ने एक भी नहीं पढ़ा ! इस तरह का था हमारा संचार। हां, उस समय जीवन अलग था; मुमकिन है रफ़्तार धीमी थी, लेकिन काम काफ़ी था!''

न्यासी चुने क्यों ना जायें

आगे रवींद्रन ने नेट्ज़ेल से पूछा कि अध्यक्ष द्वारा टीआरएफ न्यासी की नियुक्ती करने की बजाय वे निदेशकों की तरह क्यों नहीं चुने जा सकते?

नेटज़ेल को लगा कि मौजूदा प्रणाली जिसमें एक स्वतंत्र समिति संभावित न्यासियों के नामांकन की समीक्षा करती है फिर अध्यक्ष-निर्वाचित को सिफारिश करती है, जिसे वे निदेशक मंडल के पास भेजते हैं। ''परन्तु इसमें एक महत्वपूर्ण चीज की कमी है। मुझे लगता है कि इस वयवस्था में दुनिया के सभी प्रमुख अंचलों का प्रतिनिधित्व नहीं होने की कमी है।'' इसलिए भविष्य में न्यासियों के चुनाव की भी सम्भावना है।

लेकिन बेनर्जी इससे असहमत दिखे और कहा यह नहीं भूलना चाहिए है कि टीआरएफ रोटरी इंटरनेशनल की ही शाखा है और ''यदि हम इनके दो स्वतंत्र निकाय बना देंगे, तो अप्रिय स्थिति में पड़ सकते हैं । आखिरकार, नामांकन समिति और सभी अध्यक्ष-निर्वाचित मिल कर नामों की सिफारिश करते हैं ,पर अंत में निदेशक मंडल ही न्यासीयों की सूची का अनुमोदन करता है। मुझे लगता है कि ये ठीक है। लेकिन लोगों को यह पसंद नहीं है, इसका कारण, मैं समझ सकता हूँ!''

साबू ने बेनर्जी से सहमति जताते हुए कहा, ''अगर न्यासी चुने जाते हैं तो वे अपने पूर्ण अधिकार के साथ आएंगे और दो समानांतर निकाय बन जाएंगे और फिर मुझे डर है कि रोटरी इंटरनेशनल दूसरे स्थान पर उतर सकता है क्योंकि सभी पैसे टीआरएफ के पास होंगे। एक ही सर्वोच्च संस्था बेहतर है-निदेशक मंडल और यदि सभी अंचलों का प्रतिनिधित्व नहीं है, तो न्यासीयों की संख्या में वृद्धि करें, लेकिन क़ायम उसी प्रक्रिया पर रहें।''

रो ई अध्यक्ष का 'अनौपचारिक सूत्र'

रवींद्रन ने मौजूदा ''अनौपचारिक सूत्र पर'' एक सवाल खड़ा किया, कि एक बार रो ई अध्यक्ष अमेरिका से और अगली दो बार अमेरिका से बाहर का होना चाहिए। रायस्ली ने कहा कि परिक्रामी आधार पर ऐसी सहमति रही है; पर ''मुझे दो कारणों से यह पसंद नहीं है। सबसे पहले, यह एक अलिखित समझौता है; दूसरा, इस भूमिका के लिए संभावित सर्वोत्तम व्यक्ति का चयन करने की जिम्मेदारी नामांकन समिति की है।'' उन्होंने हाल ही में निदेशक मंडल के साथ इस पर चर्चा की थी और उन्होंने सहमति जताई थी कि अलिखित समझौते की अवधारणा पुरानी और चलन से बाहर थी। इसलिए

डीजी जी वी रामाराव, रो ई अध्यक्ष इयन राय्सली को स्मृति चिन्ह प्रस्तुत करते हुए। चित्र में टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल, पीआरआईपी गण राजेंद्र साबू , कल्याण बेनर्जी और के आर रवींद्रन भी शामिल है।

मैंने सभी पूर्व निदेशकों को यह सुझाव देने के लिए लिखा है कि यदि वे नामांकन समिति में शामिल होना चाहेंगे तो राष्ट्रीयता का विचार किए बिना सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवार चुनने की जिम्मेदारी उनकी ही होगी।''

आगामी सीओएल में वो रो ई मंडल के माध्यम से प्रस्ताव रखेंगे कि एक ही देश से लगातार दो वर्षों में अध्यक्ष नहीं होना चाहिए। जहां तक संभव हो ''हमें इसे मुक्त कर देना चाहिए और नामांकन समिति को ही सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवार का चुनाव करना चाहिए।''

नेटज़ेल ने भी सहमति जताई कि यह सही तरीका था; क्योंकि वर्तमान प्रणाली पुरानी थी और इसमें बदलाव की ज़रुरत थी ।

साबू और बेनर्जी एकमत नहीं थे; उन्हें लगा कि यदि पद्धति को उलट दिया गया तो एक ही देश से आने वाले अध्यक्षों का ताँता लग सकता है।

रवींद्रन ने मज़ाक में टिपण्णी की, ''मैं उम्मीद कर रहा था कि भारत से लगातार तीन अध्यक्ष होंगे!'' राय्सली झट से बोले : ''और अगले 10 ऑस्ट्रेलिया से!''

रो ई अध्यक्ष इयन राय्सली और टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल।

संस्थान का आयोजन - विदेश में

रवींद्रन ने साबू के परिचित विचार कि वे ज़ोन संस्थान या MDPETS, PETS/SETS जैसे कार्यक्रमों को अपने क्षेत्र से बाहरविदेशों में आयोजित करने के खिलाफ हैं, पर मसखरी की ''मैं आपसे पूरी तरह असहमत हूँ। लेकिन यहाँ मलेशिया में इंस्टीट्यूट का आयोजन भारतीय महानगरों की तुलना में बहुत सस्ता है।''

साबू की प्रतिक्रिया: ''मुझे बहुत खुलकर बोलना चाहिए और मैं किसी के खिलाफ नहीं हूँ । लेकिन रुपए में रुपए का मूल्य ... मुझे लगता है कि कई कारणों से इंस्टिट्यूट का आयोजन अंचल के बाहर करना उचित नहीं है। हमें लगता है कि यह सस्ता है, लेकिन आपको उन प्रायोजकों का ध्यान भी रखना होगा जिनसे पैसा इकठ्ठा किया जा रहा है ... रु 10 लाख, रु 15 लाख या उससे भी अधिक। इनमें से कुछ लोग ये रुपये, किसी न किसी अनुग्रह के बदले में दे रहे हैं!''

संस्थान का आयोजन पीडीजी, वर्तमान डीजी और डीजी-निर्वाचित के लिए किया जाता है। लेकिन कुछ डीजी-निर्वाचित ने ऐसे संस्थान से लौट कर अपनी PETS/SETS का आयोजन ''दुबई या हांगकांग जैसे स्थानों पर रखा जहाँ वो मौज मस्ती के लिए जाते हैं और जिसमें प्रशिक्षण का कोई तत्व नहीं है। आज हम भारत में एक सम्मेलन करना चाहते हैं और लोग कहते हैं कि आपके पास भारत में संस्थान के लिए तो जगह है नहीं और आप सम्मेलन करना चाहते हैं? ये कुछ सवाल हैं जो हमें पूछने चाहियें।''

साबू ने कहा कि MDPETS का औचित्य था (जिसके उन्होंने सुझाव दिया कि रवींद्रन मजबूत समर्थक थे) कि रो ई अध्यक्ष की एक ही जगह पर इतने सारे क्लब अध्यक्षों से मुलाक़ात और परस्पर बातचीत हो जाती है। यह उनके लिए ठीक है, लेकिन यह मंडल, मंडल अध्यक्ष या क्लब अध्यक्षों के हित में नहीं है।''

अगर न्यासी चुने जाते हैं तो वे अपने पूर्ण अधिकार के साथ आएंगे और दो समानांतर निकाय बन जाएंगे और फिर मुझे डर है कि रोटरी इंटरनेशनल दूसरे स्थान पर उतर सकता है क्योंकि सभी पैसे टीआरएफ के पास होंगे।

पूर्व रो ई अध्यक्ष
राजेंद्र साबु

रवींद्रन ने जवाब दिया, ''मैं मध्यस्थ हूं इसलिए मैं आपके साथ बहस नहीं कर सकता, लेकिन देखते हैं कि पॉल इस के बारे में क्या कहते हैं।''

नेट्ज़ेल साबू से असहमत दिखे, कहा, ''30 वर्ष पहले कैलिफोर्निया में मेरे अंचल में MDPETS की शुरुआत हुई थी और मैं एक दर्जन से ज़्यादा में शामिल हो चुका हूँ, ऐसा कुछ भी नहीं है जो मण्डल अध्यक्ष को अपने क्लब अध्यक्षों से मिलने या उनके साथ काम करने से रोकता हो, जो कि महत्वपूर्ण है। और इतनी बड़ी सभा में रो ई अध्यक्ष, रो ई अध्यक्ष-निर्वाचित और रोटरी के अन्य गणमान्य व्यक्तियों से मिलना भी मुमकिन है। PETS के कितने मंडल सम्मेलनों में यह संभव है? इसलिए मैं MDPETS के पक्ष में हूँ।''

सत्र के निष्कर्ष में रविंद्रन ने बताया कि इसे इस तरह बुना गया ताकि संस्थान के प्रतिभागियों को पता चल सके कि रो ई निदेशक मंडल और न्यासी की कार्यप्रणाली क्या है। ''उच्चतम स्तर पर किस तरह बहस होती हैं। वे हमेशा सहमत नहीं होते लेकिन शिष्टता से असहमति जताते हैं और यही रोटरी को ताकत देता है; विभिन्न राय का सार निकलने की दक्षता और श्रेष्ठ निर्णय पर पहुंचना। और हमारे अंचल में अक्सर हम इसी की कमी पाते है ... यह वैसा ही है जैसे या तो यूँ ही करो वरना बिल्कुल नहीं!''

चित्र: रशीदा भगत

GETS में बहुत कुछ पहली बार

रशीदा भगत

रोई सामान्य अधिकारियों और मंडल नेतृत्वकर्ताओं के साथ-साथ डीआरआर के लिए भी प्रशिक्षण सत्रों के आयोजन के माध्यम से रोई निदेशक सी भास्कर की प्रशिक्षण के प्रति उनकी मशहूर, सुस्पष्ट और प्रवर्तित रूचि के साथ, कुआलालंपुर संस्थान में हुए GETS सत्र सुनियोजित और सख्ती से संचालित किये गए।

पीडीजी सैम मोव्वा, गवर्नर निर्वाचितों के प्रशिक्षण सेमीनार के लिए भारत, नेपाल और श्रीलंका से आये 40 भावी मंडल गवर्नरों और उनके जीवनसाथियों के कप्तान थे। कुआलालंपुर संस्थान के तीन दिन पूर्व आयोजित हुआ GETS, इस वर्ष प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण सत्र के साथ शुरू हुआ जिसका संचालन प्रशिक्षण दल के नेता मोव्वा द्वारा किया गया था। ''इस सत्र में, सुविधा तकनीकों, कक्ष प्रबंधन और वयस्क शिक्षा के सूक्ष्म अंतरों पर विस्तार से चर्चा की गई। इस वर्ष के GETS की कार्यक्रम सूची में पहली बार रोई निदेशक भास्कर के आग्रह पर, जो चाहते थे कि जब भी मंडल स्तर पर प्रशिक्षण चक्र की बात हो तो डीजी और मंडल प्रशिक्षक एक तालमेल में दिखे, गवर्नर-निर्वाचितों और उनके मंडल प्रशिक्षकों का एक संयुक्त सत्र शामिल था,'' मोव्वा ने कहा।

इस GETS में एक अन्य पहली बार आयोजित हुआ समारोह था रोई संवैधानिक दस्तावेजों पर एक सत्र और ''इसे पीडीजी टीएन सुब्रमण्यम, जो रोई संविधान और उप-नियम समिति के सदस्य है, के द्वारा कुशलतापूर्वक संचालित किया गया,'' उन्होंने आगे कहा।

मोव्वा और भास्कर के आलावा, वक्ताओं में रोई के महत्वपूर्ण सदस्य जैसे रोई अध्यक्ष इयान रिसले, टीआरएफ ट्रस्टी प्रमुख पॉल नेटज़ेल, रोई निदेशक जॉन मैथ्यूज़ और पूर्व रोई अध्यक्ष राजेंद्र साबू शामिल

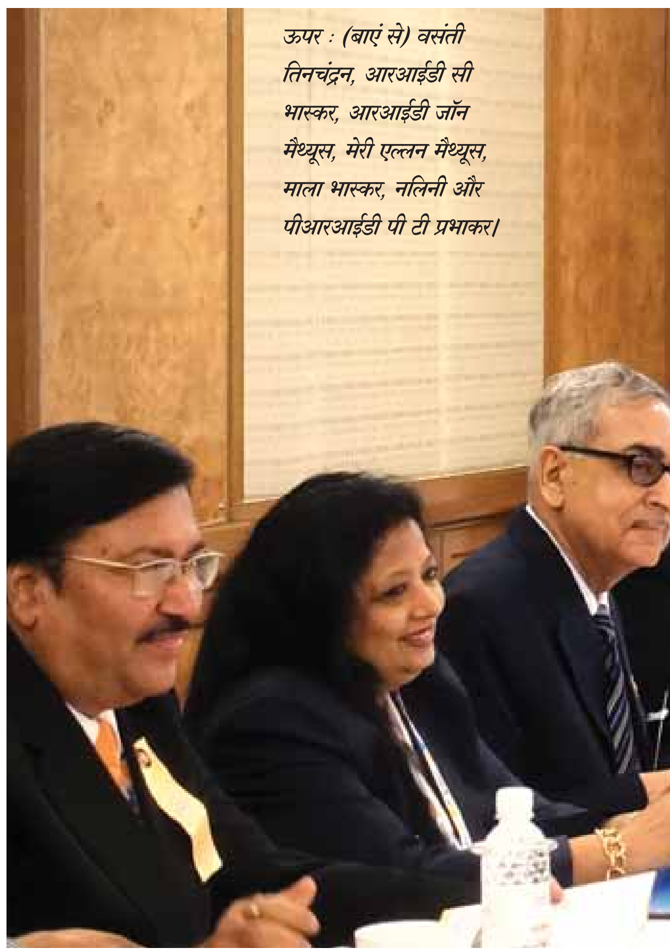

ऊपर : (बाएं से) वसंती तिनचंद्रन, आरआईडी सी भास्कर, आरआईडी जॉन मैथ्यूस, मेरी एल्लन मैथ्यूस, माला भास्कर, नलिनी और पीआरआईडी पी टी प्रभाकर।

रोटेरियन श्रीधर भारती

बाएं से : पीडीजी आर राजाराम, आरआईडी सी भास्कर, GETS चेयर साम मोव्वा और टीआरएफ ट्रस्टी-इलक्ट गुलाम वाहनवटी।

थे। फाउंडेशन सेमीनार, जिसे पीआरआईपी और तत्कालीन ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी और ट्रस्टी सुशील गुप्ता द्वारा संबोधित किया गया, ने अत्यंतत दिलचस्पी पैदा की, और एक पारदर्शी तरीके से संवहनीय परियोजनाओं के लिए धन इकठ्ठा करने और अनुदान निष्पादन को लेकर बहुत से संशयों के ऊपर चर्चा की गई।

विभिन्न प्रशिक्षण सत्रों को दल नेतृत्वकर्ता सैम मोव्वा, सामान्य प्रशिक्षक पीडीजी राजा राम, पूर्व निदेशकों यश पाल दास, पीटी प्रभाकर, मनोज देसाई, टीआरएफ ट्रस्टी निर्वाचित गुलाम वाहनवटी, और पूर्व मंडल गवर्नरों डॉ. राजीव प्रधान, अशोक गुप्ता, ए.एस. वेंकटेश, अशोक पंजवानी, राजा माइकल, राजेंद्र राय, अविनाश पोद्दार, आशीष देसाई, बाल इनामदार, के. पी. नागेश और गौरी राजन द्वारा संचालित किया गया।

इस वर्ष के GETS की कार्यक्रम सूची में पहली बार गवर्नर–निर्वाचितों और उनके मंडल प्रशिक्षकों का एक संयुक्त सत्र शामिल था

रोई स्टाफ सदस्य आबे मैकनीर, निक स्मिथ, जयश्री जयरमन और जोसफ थॉमस, इनमें आखरी के दो सदस्य रोई दक्षिण एशिया कार्यालय से है, GETS में विशेषज्ञ थे।

प्रतिक्रिया सत्र में कई भावी गवर्नरों ने GETS के विभिन्न सत्रों को संचालित करने के तरीके, प्रशिक्षण की गुणवत्ता को लेकर अपनी ख़ुशी व्यक्त की और कहा कि उन्होंने प्रेरित महसूस किया और वे सेन डिएगो के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आगे के प्रशिक्षण के लिए बड़े आत्मविश्वास के साथ प्रतीक्षा कर रहे है।

चित्र: रशीदा भगत

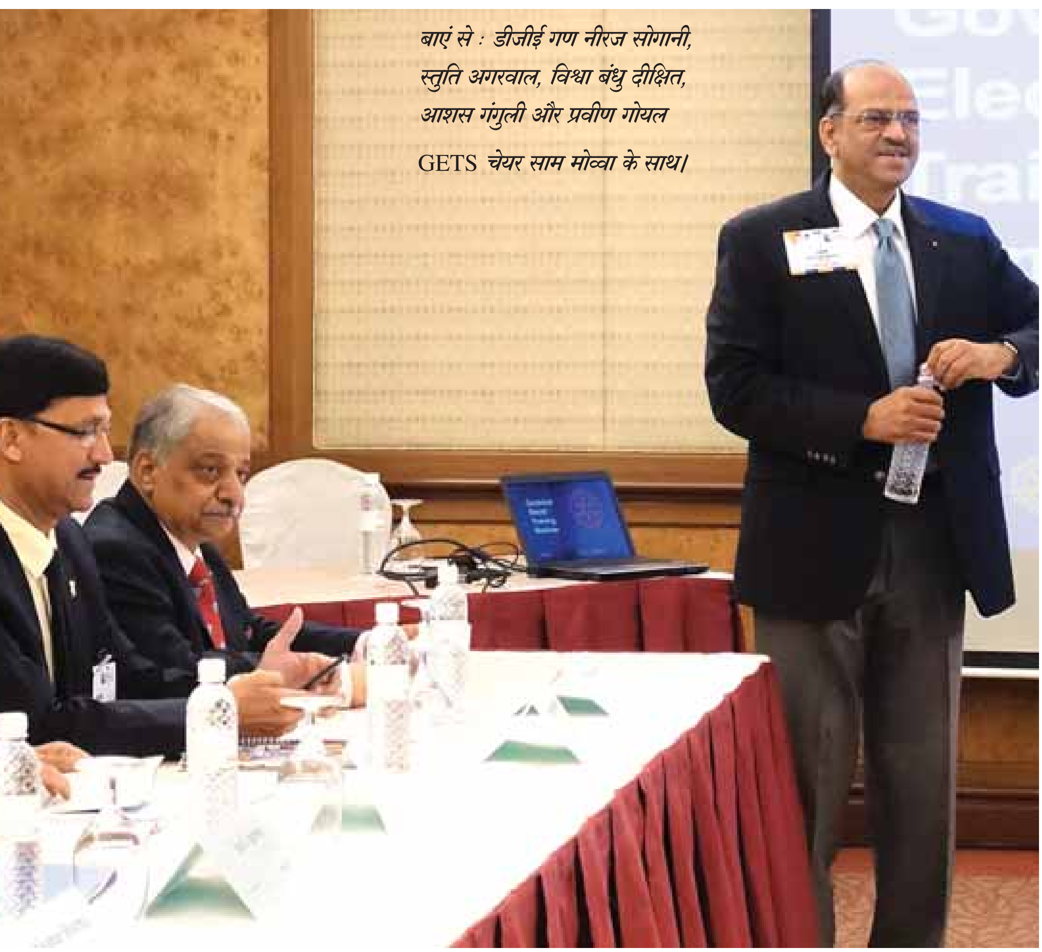

बाएं से : डीजीई गण नीरज सोगानी, स्तुति अगरवाल, विश्वा बंधु दीक्षित, आशस गंगुली और प्रवीण गोयल GETS चेयर साम मोव्वा के साथ।

के एल संस्थान

इंस्टिट्यूट क्लिक्स

ऊपर : बाएं से : रोई अध्यक्ष इयन राय्सली, जूलियट राय्सली, पीआरआईपी राजेन्द्र के साबु, उषा साबु और पीआरआईडी एम के पांडुरंगा शेट्टी।

नीचे : बाएं से : डीजी जे अब्रहाम, आरआईडी सी भास्कर, सैलजा अब्रहाम, वसंती तिनचंद्रन और पीआीआईडी पी टी प्रभाकर।

टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता और ट्रस्टी-इलेक्ट गुलाम वाहनवटी।

रोटेरियन श्रीधर भास्ती

ऊपर बाएं : पीडीजी रेखा शेट्टी हंसते हुए पीडीजी सेम मोव्वा और इंस्टिट्यूट चेयरमेन आर तिनचंद्रन के साथ; **ऊपर दाएं :** माला भास्कर, नलिनि प्रभाकर के साथ।
नीचे : महिला शक्ती : जयंती राजा सीनिवासन, वसंती तिनचंद्रन, गीता पिरैयोन, नलिनी ओलिवन्नन, नलिनी प्रभाकर और शारदा राजाराम।

दक्षिणावर्त दाएं से : *जूलियट राव्सली, उषा साबु और मेरी एल्लन, आरआईडी जॉन सी मैथ्यूस की पत्नी, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, बिनोता, उषा साबु, पीआरआईपी राजेंद्र के साबु और महात्रिया रा; पीआरआईडी पी टी प्रभाकर और टीआरएफ ट्रस्टी-इलेक्ट गुलाम वाहनवटी; पीआरआईपी के आर रवींद्रन और पीआरआईडी अशोक महाजन; पीआरआईडी मनोज दिसाई और शर्मिष्ठा, बिनोता और पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी का स्वागत करते हुए। टीआरएफ ट्रस्टी-इलेक्ट गुलाम वाहनवटी भी चित्र में शामिल है; एक मलेशियन नृत्य प्रदर्शन।*

चित्र: रशीदा भगत ; एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

मंडल 3141 शून्य-लागत वाले कंप्यूटर केन्द्रों की रूपरेखा बनाता है

टीम रोटरी न्यूज़

कौशल विकास के मोर्चे पर, सुविधाओं से वंचित विद्यार्थियों को व्यवसाय उन्मुखी प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए मंडल 3141 ने चार कंप्यूटर शिक्षण केन्द्रों - तीन दूरस्थ इलाकों में और एक रोटरी केंद्र में - की स्थापना करके एक नवीन परियोजना की शुरुआत की।

रोटरी क्लब बॉम्बे एअरपोर्ट के कौशल विकास के मंडल एवेन्यू प्रमुख राजेश अग्रवाल कहते है, ''इस परियोजना की नई बात यह है कि इसको कार्यान्वित करने वाले क्लब की लागत शून्य आती है जिसके सदस्यों को केवल मंडल और उस स्कूल या परिसर के साथ समन्वय करना होता है जिसमें कंप्यूटर केंद्र स्थापित है।'' वेदांता समूह संगुट की CSR शाखा 'दी वेदांता फाउंडेशन' संपूर्ण आधारभूत संरचना, कंप्यूटर एवं फर्नीचर से लेकर शिक्षकों की नियुक्ति, कोर्स स्वरुप, प्रचार-सामग्री एवं इन केन्द्रों पर 24X7 इंटरनेट कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने तकी की जिम्मेदारी ले रहा है। अग्रवाल कहते है, ''बिजली के बिल का भुगतान वेदांता करेगा जबकि जगह उस स्कूल या संस्थान द्वारा मुफ्त में दी जाएगी जिसमें कंप्यूटर केंद्र की स्थापना की जा रही है।''

वेदांता का उद्देश्य संपूर्ण भारत में कंप्यूटर साक्षरता को सुनिश्चित करना है और सीधा पैसा देने के बजाय, वे संपूर्ण सुविधाओं को तैयार करके देते है और कंप्यूटर केन्द्रों को चलाने में आने वाले आवर्ती खर्चों (या अन्य ख़ास व्ययों) को वहन करते है। ''लाभार्थियों से बहुत कम फीस ली जाती है। लेकिन किसी भी विद्यार्थी को पैसे की कमी के कारण मना नहीं किया जायेगा क्योंकि क्लब बड़े-दिल वाले वित्तदाताओं को ढूंढ लेगा जो उनकी ट्यूशन फीस भर देंगे।'' वर्तमान में, 250 विद्यार्थी चार केन्द्रों में नामांकित है और दो महीने का कोर्स कर रहे है जिसमें 90 घंटे का पाठ्यक्रम पैकेज है।

निजी संस्थानों के रु 3,500 की फीस के नियमों के विपरीत जहाँ रु 500 की एक मामूली फीस पर बुनियादी कोर्स कराया जाता है, वहीं जो इस क्षेत्र में कैरियर बनाने के इच्छुक है, उनके लिए 2-3 महीनों का एक उन्नत कोर्स भी करवाया

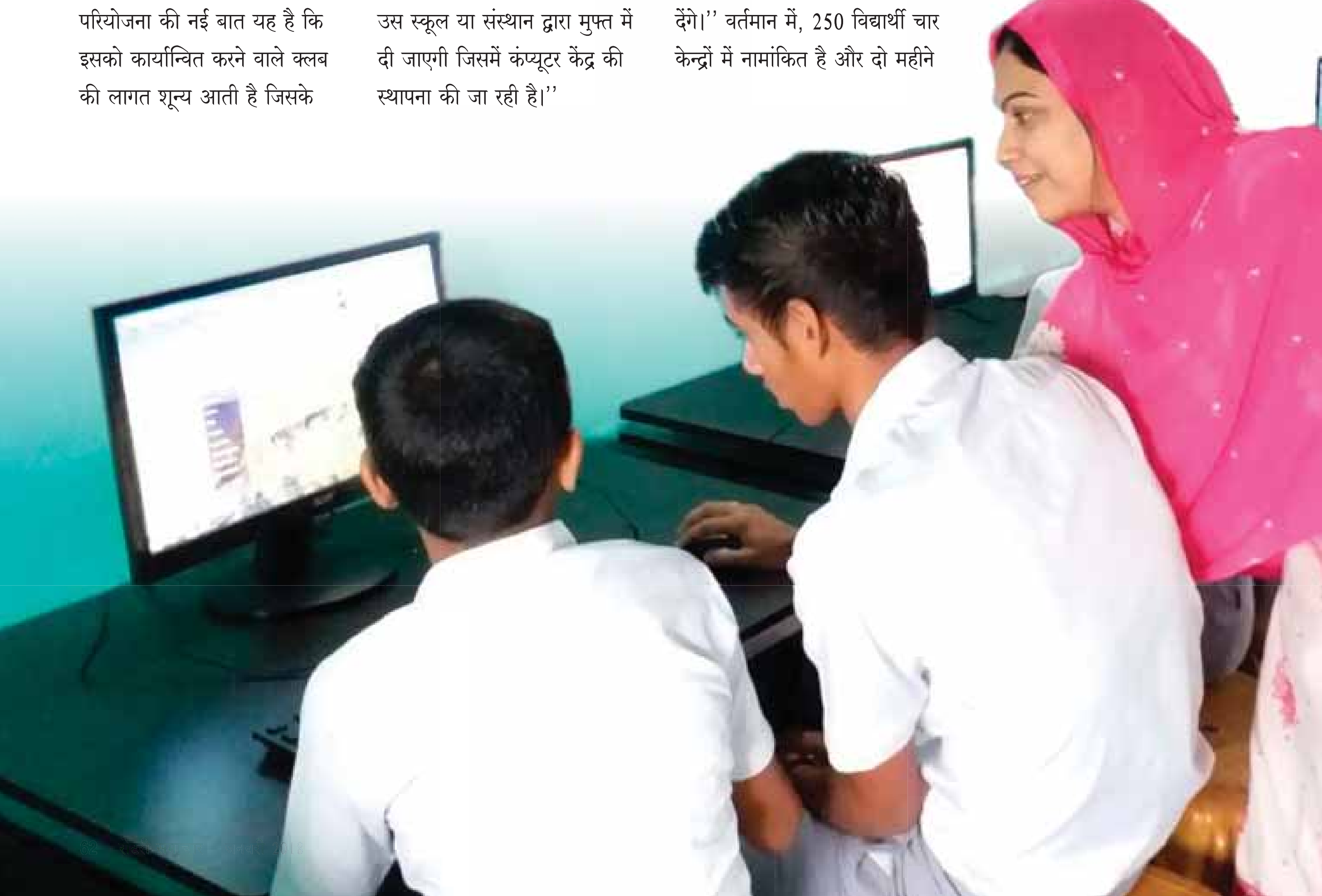

जाता है जिसमें व्यावसायिक संस्थानों द्वारा ली जाने वाली रु 18,500 की फीस के विपरीत, रु 3,000 में वेबसाइट डिजाइनिंग, टैली और कंप्यूटर नेटवर्किंग पढ़ाया जाता है। प्रत्येक केंद्र एक्सेसरीज़ से एकीकृत एवं असली सॉफ्टवेर से युक्त 10 कंप्यूटरों से सुसज्जित है। एक आईटी प्रशिक्षण कंपनी 'डी-लिंक अकैडमी' ने केन्द्रों के सुदूर निरीक्षण के लिए प्रत्येक केंद्र में उउढ्त कैमरें स्थापित किये है और विद्यार्थियों को कंप्यूटर नेटवर्किंग में कौशल प्रशिक्षण भी प्रदान करती है।

आरसी मुंबई दहिसर द्वारा स्थापित आश्रम विद्यालय, गंजड में एक कंप्यूटर केंद्र।

भागीदार क्लब

उद्घाटन चरण के दौरान अगस्त और सितम्बर के मध्य, दहानू, मुंबई दाहिसर और मुंबई घटकोपर के रोटरी क्लबों ने मंडल के साथ तालमेल में उनके कंप्यूटर केन्द्रों की स्थापना कर ली है। गंजद (दाहिसर) स्थित आश्रमशाला, एक सरकारी पहल जिसमें बंजारा परिवारों के बच्चे स्कूली शिक्षा के लिए निवास करते है; तुन्गरेश्वर, वसाई (दाहिसर) स्थित बाबा हरनामदास स्कूल; और रायगढ़ ज़िले (मुंबई घटकोपर) में करजात स्थित भिमाद्री आदिवासी स्कूल ने प्रत्येक ने एक केन्द्र को समायोजित किया है और प्रत्येक केंद्र दूरस्थ इलाकों के ग्रामीण बच्चों को कंप्यूटर कौशल प्रदान करने की पेशकश कर रहा है। दहानू स्थित रोटरी केंद्र की कंप्यूटर सुविधा एक शहरी इलाके में स्थित है।

उर्दू उच्च विद्यालय,शिरगांव में बालक रोटरी क्लब पालघर द्वारा स्तापित केंद्रे में कंप्यूटर विज्ञान सिखते हुए।

सभी चार कंप्यूटर केन्द्रों का उद्घाटन डीजी प्रफुल शर्मा ने किया और प्रायोगिक परियोजना को मिली जबर्दस्त प्रतिक्रिया के बाद, डीजीएन शशि शर्मा ने अगले वर्ष भी परियोजना का आगे विस्तार करने का फैसला लिया है, अग्रवाल कहते है। ''अपनी पूर्ण क्षमता का इस्तेमाल करने पर, प्रत्येक केंद्र एक साल में कम से कम 400 योग्य लाभार्थियों को तैयार कर सकता है।''

गंजद की एक लाभार्थी अंकिता सुले कंप्यूटर कौशलों में प्रशिक्षण हासिल करके प्रफुल्लित है। एक आदिवासी समुदाय से सम्बध्द होने के नाते, ''मैं अब विश्वस्त महसूस करती हूँ, बेहतर संवाद करती हूँ और ईमेल एवं अन्य बुनियादी प्रोग्रामों का इस्तेमाल करती हूँ जिसने मेरे अंतर्वैयक्तिक कौशलों को निखारा है।''

विस्तारण की रूपरेखा तैयार

दिसम्बर में, तीन नए केन्द्रों - रोटरी क्लब पालघर (शिरगाँव में उर्दू स्कूल); रोटरी क्लब बॉम्बे एअरपोर्ट (बोईसर); और रोटरी क्लब मुंबई बे व्यू (बीडीडी चाल, वर्ली) द्वारा आयोजित - का उद्घाटन किया गया और तीन अन्य को जनवरी 2018 के अंत तक शुरू कर लिया जाएगा।

डीजी प्रफुल शर्मा ने 'शून्य लागत' वाले कौशल केन्द्रों को समस्त भारत के रोटरी मंडलों में स्थापित करने की योजना को मंजूरी दे दी है और सभी डीजीयों को इस मॉडल की जानकारी भी भेज दी है। कंप्यूटर केंद्र के उद्घाटन तक मंडल 3141 सभी गतिविधियों को समन्वित करेगा। अग्रवाल कहते है, ''अब तक हमारे इस प्रयास को छह मंडलों से प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है। हम इस अनूठी परियोजना को समस्त भारत में शुरू करने के लिए पूरी तरह से तैयार है और इच्छुक क्लब हमसे संपर्क कर सकते है।''

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: मंडल एवेन्यू प्रमुख राजेश अग्रवाल: 9820445542.■

खसरा और रूबेला से लड़ने के लिए

रोटरी ने भारत सरकार के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया

रशीदा भगत

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री जे पी नाड्डा (केंद्र) और अतिरिक्त स्वास्थ्य सचिव मनोज झालानी (बाएं) की उपस्थिति में आईएनपीपीसी चेयर दीपक कपूर और संयुक्त स्वास्थ्य सचिव वंदना गुरनानी MoU का आदान-प्रदान करते हुए। पीआरआईपी राजेन्द्र के साबू भी चित्र में मौजूद हैं।

दिसंबर 6 को भारत सरकार की नियमित टीकाकरण परियोजना, जिसमें मिशन इन्द्रधनुष, सघन मिशन इन्द्रधनुष और खसरे एवं रूबेला (जर्मन खसरा) का उन्मूलन कार्यक्रम भी शामिल है, में रोटरी की सहभागिता और हिस्सेदारी के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और भारतीय राष्ट्रीय पोलियोप्लस समिति (INPCC) के मध्य एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हुआ है। समझौता ज्ञापन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जे.पी. नड्डा के कार्यालय में संयुक्त स्वास्थ्य सचिव वंदना गुरनानी और रोटरी की तरफ से INPCC के अध्यक्ष पीडीजी दीपक कपूर के मध्य हस्ताक्षरित हुआ।

स्वास्थ्य मंत्री नड्डा ने पूर्व रोई अध्यक्ष राजेंद्र के. साबू, जो समझौता ज्ञापन के हस्ताक्षरण के वक्त वहाँ मौजूद थे, एवं रोटरी को, पिछले चार दशक से भी अधिक समय से देश को पोलियो के अभिशाप से मुक्त कराने में मदद करने के लिए भारत की रोटरी बिरादरी के समर्थन एवं प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद दिया। साथ ही, अन्य कई सामाजिक कार्यों और पहलों में उनके समर्थन के लिए

भी आभार प्रकट किया। अतिरिक्त स्वास्थ्य सचिव मनोज झालानी भी समझौता ज्ञापन के हस्ताक्षरण के वक्त वहाँ मौजूद थे।

मंत्री जी को इस बात का पूर्ण विश्वास था कि खसरा, रूबेला और अन्य बिमारियों, जिनके टीके मौजूद है, द्वारा खड़ी की जाने वाली चुनौतियों को संबोधित करने में सरकार की सहायता करने हेतु रोटरी एक बार फिर स्वयं को योग्य साबित करेगी और स्वयंसेवक सदस्यों की अपनी अन्तर्निहित क्षमता का पूर्ण उपयोग करेगी। महत्वाकांक्षी लक्ष्य वर्ष 2020 तक 90 प्रतिशत टीकाकरण को हासिल करने का है।

देश में खसरे और रूबेला (एमआर) के उन्मूलन के लिए रणनीति पर विचार करने हेतु भारत में रोटरी के वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं की अनेक बैठकों के बाद यह समझौता ज्ञापन सफल हो पाया। बैठकों में, रोई निदेशक सी भास्कर, पीआरआईपी साबू, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता और डॉ जैकब जॉन ने वर्ष 2020 तक चठ को खत्म करने के लिए भारत सरकार के साथ साझेदारी करने को लेकर विचार-विमर्श किये। उन्हें लगा कि अब भारत पोलियो मुक्त है, तो अब समय ''पोलियोप्लस'' के प्लस घटक पर फोकस करने और भारत का पोलियो मुक्त होना सुनिश्चित करने के लिए पोलियो टीकाकरण को जारी रखने के साथ-साथ खसरा, रूबेला और अन्य बिमारियों को रोकने के लिए टीकाकरण कार्यक्रमों में भाग लेने का है।

इस साझेदारी का महत्वपूर्ण पहलू यह है की भारत को पोलियो मुक्त रखने की हमारी प्रतिबद्धता का यह एक विस्तारण है।

पीआरआईपी राजेंद्र के साबु

स्वास्थ्य और परिवार कल्याणमंत्री जे पी नाड्डा और पीआरआईपी राजेंद्र के साबू।

पहले, जब पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी रोटरी संस्थान के ट्रस्टी प्रमुख थे, तब पीआरआईपी साबू, डॉ. जैकब जॉन और पीडीजी कपूर के साथ परामर्श करके उन्होंने भारत में एमआई में भागीदारी के लिए टीआरएफ न्यासियों एवं रोई पोलियोप्लस समिति के अध्यक्ष माइक मैकगवर्न का समर्थन प्राप्त किया था।

कपूर ने कहा, ''यह एक नयी चुनौती की शुरुआत है। हम भारत के रोटेरियनों को अपने जोश को फिर से चार्ज करना होगा और आगे के कार्यों हेतु स्वयं को फिर से ऊर्जावान बनाना होगा... ठीक वैसे ही जैसे हमने पोलियो उन्मूलन अभियान के दौरान किया था। अब हमारा लक्ष्य भारत सरकार के साथ साझेदारी में भारत को पोलियो मुक्त रखने और खसरा/रूबेला को उन्मूलित करने का है।''

पीआरआईपी साबू ने कहा कि अब इस चुनौती को उसी स्तर की भागीदारी और उत्साह प्राप्त होगा जैसा पोलियो उन्मूलन चरण के वक्त रोटेरियनों में था। क्योंकि ''इस साझेदारी का महत्वपूर्ण पहलू यह है की भारत को पोलियो मुक्त रखने की हमारी प्रतिबद्धता का यह एक विस्तारण है।''

लेकिन बेशक, इस बार रोटरी की भागीदारी को रूबेला और खसरा के दो क्षेत्रों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना होगा। लेकिन ''मैं, रोई निदेशक सी. भास्कर के समर्थन के कारण इस उम्मीद से प्रोत्साहित हूँ कि हम यह कर सकते है।''

एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

रोई मंडल 3000 में स्वच्छ भारत रैली

टीम रोटरी न्यूज़

स्वच्छ भारत को बढ़ावा देने के लिए हाल ही में रोई मंडल 3000 ने अपने क्लबों से शुरुआत करते हुए, स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों, रोटेरियनों और जनता, रोटरेक्टरों और इंटरेक्टरों को शामिल करके जागरूकता रैलियाँ निकाली। स्वच्छ पर्यावरण को चिन्हांकित करने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य और व्यक्तिगत स्वच्छता पर मजबूती से ध्यान केंद्रित करने के साथ ही यह दूसरी नवरत्न परियोजना, गो ग्रीन (पर्यावरण), गो ब्लू (नदियों को जोड़ना) और गो रेड (रक्त दान) के लिए एक अभियान भी था।

रैली का आयोजन नागरिक प्रशासन की सहायता से किया गया था और यह मानवता की सेवा करने और परिवर्तन लाने की रोटरी की प्रतिबद्धता में वृद्धि करने के लिए एक जन-संपर्क अभ्यास था।

त्रिची में, 1500 छात्रों और जनता के एक मजबूत दस्ते ने रोटरी के नेतृत्वकर्ताओं, पुलिस और नगरपालिका प्रशासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ जुलूस निकाला। स्वयंसेवकों ने जुलूस के पूरे रास्ते को साफ किया। दूसरी ओर, कैंसर, ड्रग्स और सफाई के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए पर्चे बाँटे गए। लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उन्होंने अनोखे मुखौटे पहने थे।

एक अन्य मार्ग पर, लगभग 200 इंटरेक्टरों और रोटरेक्टरों ने रेलवे डिवीज़नल मेनेजर और डिप्टी कमिश्नर ऑफ़ पुलिस के साथ साइकिल रैली निकाली। छोटे शहरों जैसे अरियालुर, थुरैयुर, करूर, अलंगुड़ी, करमबाकुड़ी, बटलागुंडू, अंदिपट्टी, वैयमपट्टी, मनप्पराई में इश्तहारों, नारों, नुक्कड़ नाटकों, संगीत मंडलियों और मानव श्रृंखला ने रैलियों को चिन्हित किया।

करूर के सभी क्लबों ने मिलकर रैली का आयोजन किया जिसका शुभारम्भ ज़िला कलेक्टर ने किया था। वह विद्यार्थियों के साथ पूरे 3 कि.मी. के रास्ते पर पैदल चले। इस रैली की खास बात यह थी कि नवयुवक रास्तों को साफ कर रहे थे।

कोडेकनाल और डिंडीगुल की जागरूकता रैली, जिसका उद्घाटन ज़िला कलेक्टर ने किया था, लोगों को स्वच्छ पर्यावरण रखने के एक अनुस्मारक के रूप में प्रचलित हुई। तेनी और पुदुक्कोट्टई दोनों में, रैलियों का उद्घाटन पुलिस अधीक्षक द्वारा किया गया, जिसने टीम भावना को जगाया और स्वच्छता पर जागरूकता को बढ़ावा दिया।■

ROTARY IN ACTION

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए छोटा प्रयास

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब चेन्नई गैलक्सी, मंडल 3232 द्वारा कार्यान्वित किए जा रहें एक माइक्रोफाइनांस परियोजना के अंतर्गत एक एनजीओ एसपीएस इंडिया फाउंडेशन के दो केंद्रों पर नियमित प्रशिक्षण प्राप्त कर महिला लाभार्थी सफल उद्यमी बन चुकी हैं। अंतरराष्ट्रीय भागीदारों - रोटरी क्लब जिलिन, नीदरलैंड, मंडल 1550, और मंडल 1870 (जर्मनी) और 1630 (बेल्जियम और लक्जम़बर्ग) - से जुडी इस बहु-मंडलीय परियोजना का उद्देश्य निजी एसएचजी को निजी धन उधारदाताओं के चंगुल से मुक्त करना है, जो कि बहुत अधिक दरों पर ब्याज शुल्क करते हैं, यहाँ तक कई वे किसी भी प्रकार के बंधक दिए बिना बैंक ऋण का उपयोग करने में असमर्थ रही है।

वूमन 1000+ प्रोजेक्ट के अंतर्गत, क्लब एक उद्यमी को 1.2 प्रतिशत प्रति माह या 6.6 प्रतिशत के संचयी ब्याज दर पर 10 महीने के लिए रु 15,000 ऋण प्रदान करता है, जिस अवधि तक उन्हें रकम का पुनर्भुगतान करना होता है। अब तक, इस परियोजना ने चेन्नई के बेसिन ब्रिज और तुतीकोरिन जिले के विलाथिकुलम गांव और कोविलपट्टी में 40 समूहों की लगभग 300 महिलाओं के मध्य रु 35 लाख वितरित किया है। हाल ही में, क्लब ने बेसिन ब्रिज में उधारकर्ताओं के लिए ऋण की सीमा बढा कर रु 30,000 कर दिया है।

रोटरी क्लब चेन्नई आकाशगंगा के अध्यक्ष अंशुल अग्रवाल कहते हैं, ''कुल परियोजना की लागत 108,000 डॉलर है और हमारे पास जुलाई 2018 तक स्वीकृत ऋण राशि का भुगतान करने के लिए दो वर्ष का समय हैं।''

क्लब ने एसपीएस फाउंडेशन को बेसिल ब्रिज और विलाथिकुलम में अपने केंद्रों पर एसएचजी को प्रशिक्षित करने के लिए रु 30 लाख उपलब्ध कराया हैं। ''महिला उद्यमियों को प्रशिक्षण देने के लिए कोई समय सीमा नहीं है और यह राशि में इन केंद्रों पर होने वाले प्रशासनिक खर्चों को भी शामिल किया गया है,'' अंशुल ने आगे कहा।

एसपीएस केंद्रों पर व्यावसायिक और नेतृत्व कौशल और अन्य उद्यमियों जैसे कि लाभदायक निवेश, लेनदेन के सौदों, दस्तावेजीकरण और बही-खाता रखने जैसे उद्यम को संचालित करन सिखलाया जाता है। हाल ही में विलाथिकुलम के अपने यात्रा के दौरान, अंशुल के नेतृत्व में एक रोटरी टीम ने पाया कि बकरी -पालन, मछली-पालन, कृषि, परिधानों की खुदरा बिक्री और टोकरी बनाने के लाभकारी उद्यमों के लिए महिलाओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

टूटीकोरिन के मुथलीपट्टी गांव की रहने वाली वीरलक्ष्मी (28) ने एक बकरी खरीदा और रु 15,000 के ऋण से अपनी खेती के तरीके को उन्नत बनाया। वह अपने गांव में पहली महिला स्नातक है और उसका मानना है कि सशक्तिकरण के लिए लडकियों को शिक्षित करना षा आवश्यक है। ''मैं अपने सेंबुरुथी एसएचजी में अपने बच्चों को स्कूल में भेजने और भविष्य के लिए पर्याप्त पैसा बचाने के लिए सदस्यों को प्रेरित करती हूँ।''

विलाथिकुलम में एसपीएस सेंटर में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, उनके एसएचजी सदस्यों ने अपनी मासिक बचत में रु 200 तक वृद्धि की है।■

चेन्नई में ऋण वितरण कार्यक्रम में लाभार्थियाँ।

देने के लिए प्रेरित

वी मत्तुकुमारन

एक बड़े भौगौलिक क्षेत्र में फैला हुआ मंडल 3160, रोटरी संस्थान को देने के मामले में 1 मिलियन डॉलर के आंकड़े को पार कर सकता है क्योंकि बारम्बार इसके 69 क्लबों के रोटेरियनों ने साबित किया है कि उनके पास एक बड़ा दिल है और इस वार्षिक लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है इन सामान्य बहानों के बावजूद भी कि हवाई-अड्डे नहीं है, कनेक्टिविटी खराब है और आय वाले इलाकों में बहुत ही कम व्यवसाय या कारोबार हो रहा है।''

ऐसा कहकर, रोई निदेशक सी. भास्कर ने 34वें टीआरएफ मंडल सेमीनार के लिए होसपेट में विशाल संख्या में एकत्रित हुए रोटेरियनों को उनकी पहलों एवं प्रत्यक्षता को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

रोटरी में रंग, जाति, संस्कृति या राष्ट्रीयता का कोई भेदभाव नहीं है, यह हमें केवल दुनिया में सबसे प्यार करना सिखाता है, उन्होंने कहा, आगे यह कहते हुए कि उनकी कंपनी की कैंटीन में उसी प्लेट एवं क्राकरी के बर्तनों को प्रबंध निदेशक, कार्यकारी स्टाफ से लेकर पदक्रम के सबसे अंतिम कर्मचारी तक घुमाने की प्रथा ने सामाजिक समानता एवं मिलनसारिता की भावना को सुनिश्चित किया। ''पूरे कर्मचारियों ने एक साथ उसी हॉल में बैठकर भोजन ग्रहण किया। रोटरी ने मुझे सिखाया कि परोपकार घर से शुरू होना चाहिए। अब मेरा संगठन स्वस्थ है, मैं ज्यादा पैसे कमा रहा हूँ और ज्यादा खर्च कर रहा हूँ। आप देख सकते है कि सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है।''

ऊपर: रोटरी क्लब चित्रदुर्गा विंडमिल सिटी के रोटेरियन उनके टीआरएफ योगदान को रो ई निदेशक सी भास्कर को पेश करते हुए।

टीआरएफ सेमिनार के उद्घाटन में आरआईडी सी भास्कर, डीजी मधु प्रसाद कुरुवाडी शामिल हैं (बाएं से) शारदा और पीडीजी आर गोपिनाथ, डीआरएफसी विनोद भंसाल, आरसी होसपेट अध्यक्ष पी एस गुरुनाथ, डीआरएफसी रामलिंगा रेड्डि, मंडल सचिव वी तिरुपती नायुडु और सुधा माधुरी, डीजी मधु प्रसाद की पत्नी।

उन्होंने आर्च क्लम्फ के संदेश पर प्रकाश डाला कि यदि सदस्य प्रेरित नहीं है तो वे नियमित रूप से बैठकों में उपस्थित नहीं होंगे और उसे रोचक बनाने एवं सही परियोजनाओं के चुनाव की जिम्मेदारी क्लब अध्यक्षों की है।

पोलियो उन्मूलन में रोटरी की सफलता को याद करते हुए, निदेशक भास्कर ने कहा, ''फिलिपींस में पोलियो के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में सफलता हासिल करने (1982-84) से पूर्व हमें कभी भी यूनिसेफ और सेंटर्स फॉर डिज़ीज़ कंट्रोल द्वारा गंभीरता से नहीं लिया गया।'' तब से, पोलियोप्लस एक गैर सरकारी संगठन की सबसे सफल स्वास्थ्य परियोजनाओं में से एक है।

''चलन स्थापित'' करने वाले अध्यक्षों के कारण, एक प्राप्तकर्ता बनने के बजाय पिछले चार वर्षों में भारत एक वैश्विक दानकर्ता बन गया है, यहाँ तक कि पिछले रोटरी वर्ष में हम 20 मिलियन डॉलर के टीआरएफ योगदान के साथ दूसरे स्थान पर पहुँच गए है।

उनके संबोधन में, डीजी मधु प्रसाद कुरुवादी ने व्याख्या की कि पिछले वर्ष संस्थान को दिए गए 220,000 डॉलर के मंडल अनुदान में केवल 13 प्रतिशत रोटेरियनों ने हिस्सा लिया था। इस वर्ष की शुरुआत ''हमने स्थापना के दौरान टीआरएफ को 30,000 डॉलर देकर की थी। हमें छोटे शहरों में क्लबों से संतुष्ट होना पड़ता है, लेकिन इस बाधा के बावजूद भी, हम हमारे समुदायों की स्थानीय जरूरतों को पूरा कर रहे है।''

डीआरएफसी रामालिंगा रेड्डी ने कहा, ''नेतृत्वकर्ताओं के केवल प्यार और लगाव से ही रोटेरियन टीआरएफ एवं परियोजना लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रेरित होंगे।'' उन्होंने विश्वास जताया कि इस वर्ष का 250,000 डॉलर का टीआरएफ लक्ष्य हासिल कर लिया जाएगा। मंडल बिना वैश्विक अनुदानों के परियोजनाएं कर रहा है और केवल स्थानीय योगदानों से ही काम चला रहा है।

मंडल सचिव तिरुपति नायडू ने रोटेरियनों को टीआरएफ सेमीनारों में उपस्थित होने के लिए उत्तेजित किया ताकि वे संस्थान एवं उसकी गतिविधियों को समझ सकें और रोटरी नेतृत्वकर्ताओं के प्रेरक भाषणों से प्रोत्साहित हो सकें।

पूर्ण अधिवेशन

डीआरएफसी और राष्ट्रीय सीएसआर समिति के उपाध्यक्ष विनोद बंसल ने सीएसआर परियोजना में वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन करते वक्त क्या करें और क्या ना करें की एक सूची दी है और साथ ही क्लबों को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा है कि सारी औपचारिकताएं एवं प्रक्रिया कंपनी अधिनियम और टीआरएफ दिशा-निर्देशों के अनुसार संकलित हो। पीडीजी सतीश धमंकर, मंडल 3170, ने तीन प्रकार के रोटरी अनुदानों - वैश्विक, मंडल और पैकेज अनुदान - में सूक्ष्म अंतर को व्यक्त किया और क्लब अध्यक्षों से ऐसी परियोजनाओं को शुरू करने से पूर्व उनकी संपत्ति, वित्तीय मजबूती और सदस्यों की दक्षता का SWOT विश्लेषण करने का आग्रह किया।

एक वैश्विक अनुदान केवल उन दीर्घ-कालिक परियोजनाओं पर लागू होगा जिनके संवहनीय परिणाम रोटरी के ध्यानाकर्षण क्षेत्रों के सरेखण में होंगे और जिनका न्यूनतम बजट 30,000 का होगा। और इसके पास एक साझेदार मंडल से विश्व कोष मिलान होना ही चाहिए, उन्होंने कहा।

मेजबान क्लब, रोटरी क्लब होसपेट, की परियोजनाओं का उल्लेख करते हुए, पीडीजी गोपीनाथ रामरत्नम ने कहा कि आज तक 145 PHF, 17 प्रमुख दानकर्ता, 100 गैर-रोटेरियन दानकर्ता है और टीआरएफ में 246,000 डॉलर का एक संचयी योगदान है। क्लब अध्यक्ष पी. एस. गुरुनाथ को उम्मीद है कि सेमीनार में मिले ज्ञान के कारण, मंडल कुछ वैश्विक अनुदान साझेदारियाँ हस्ताक्षरित कर पायेगा। सेमीनार ने टीआरएफ के लिए 60,000-70,000 डॉलर इकट्ठा किये और इसमें 310 रोटेरियन उपस्थित थे।

चित्र: वी. मुत्तुकुमारन

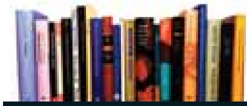

शब्दों की दुनिया

एक पुस्तक में सिमटा क्लासरूम

संध्या राव

कुछ यादें शिक्षकों की पुस्तकों और जीवन के बारे में दी गई उनकी सीख की

कभी-कभी सबसे अजीब पुस्तक आपको सबसे ज़्यादा मोह लेती है। मैं इस बात का जीता-जागता उदाहरण हूँ। स्कूल के ज़माने से ही गणित और गणित से जुड़ी हर बात से मैं भयभीत हो जाती थी। एक प्रेरणादायक शिक्षिका, मिसेज़ राजम, और सार्वजनिक परीक्षा में आए एक प्रश्नपत्र - जो पूरी तरह सामान्य ज्ञान पर आधारित था, की वजह से मैं इतना अच्छा कर पाई कि एक कॉलेज के एड्मिशन हैड ने यह तक पूछ लिया कि स्नातक स्तर पर मैंने इंग्लिश लिटरेचर के बजाय गणित क्यों नहीं लिया। यह तो भयावहता की हद हो गई भई। खैर, किस्मत से वह गोली छुए बिना ही निकल गई।

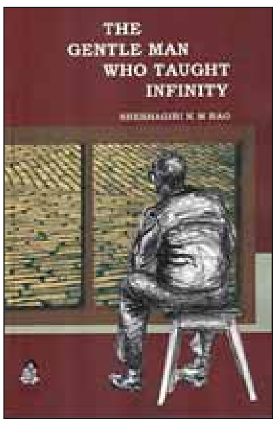

पिछले दिनों पुस्तकों के दो पार्सल घर पर आए। उनमें से एक पुस्तक शेषगिरी के एम राओ की लिखी *द जेंटल मैन हू टॉट इन्फिनिटि* थी। आपको रॉबर्ट कैनिगल की लिखी *द मैन हू न्यू इन्फिनिटि* तो याद ही होगी जो देव पटेल द्वारा अभिनीत फिल्म की वजह से ज़्यादा लोकप्रिय हुई थी। उसमें देव पटेल ने गणितज्ञ (मैथमैटिशियन) श्रीनिवासा रामानुजन की भूमिका निभाई थी जिनका उत्कृष्ट काम ब्रिटिश गणितज्ञ टीएम हार्डी ने दुनिया के सामने उजागर किया था।

मद्दूर वेन्कटाद्रि चन्नाकेशवा ने बेंगालूरु के बॉल्डिवन ब्वॉएज़ हाई स्कूल में लड़कों की कई पीढ़ियों को गणित पढ़ाया था। हम 'हीरो' शब्द का आम तौर पर जो अर्थ समझते हैं वे वैसे हीरो कतई नहीं थे। जैसा लेखक अपनी प्रस्तावना में कहते हैं, उन्होंने मुझे इस विषय में कोई बड़ी रैंक नहीं दिलाई न ही गोल्ड मैडेलिस्ट बनाया। ''उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं किया। मैं इस विषय में एक औसत छात्र था जो नौवीं कक्षा में उसमें लगभग फेल ही हो गया था। इसकी पुष्टि वे खुद भी करेंगे। लेकिन उन्होंने मुझे उस विषय से प्यार करना सिखाया।'' और आप इसे किसी भी तरह परिभाषित करें, यह एक बहुत प्रतिभाशाली व्यक्ति ही कर सकता है: किसी चीज़ को प्यार करने का रास्ता दिखाना। यह एक विशेष खूबी है।

शेषगिरी राओ कहते हैं, ''चन्ना ने सबसे पहले जो बात की वह यह कि उन्होंने हमें पूछना और सोचना सिखाया। उन्होंने हल्के से हमें आगे बढ़ने के लिए धक्का दिया और हमेशा खुद जवाब ढूँढ़ने के लिये प्रेरित किया। दूसरी बात: उनकी शिक्षा हमेशा पहले सिद्धांतों पर आधारित होती थी। हमें कभी भी ऐसा नहीं लगा कि वे अनौपचारिक रूप से कुछ कह रहे हैं। उन्होंने हमें बिखराव में तरीका देखने का सलीका सिखाया। तीसरी बात, उन्होंने हमें गणित पढ़ाया क्योंकि वे चाहते थे कि हम सत्य और सौंदर्य का अनुसरण करें, सिर्फ परीक्षा में अच्छे ग्रेड ही नहीं लें। जी हाँ, आपने मुझे सही पढ़ा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हममें से कोई भी गणितज्ञ नहीं बना। मेरे लिए तो उन्होंने गणित को लुभावना बना दिया। आखिर में कहूँ तो चन्ना एक उम्दा कथावाचक थे जिन्हें अपनी कला से प्रेम था। यही कारण है कि मुझे उनकी पढ़ाई हुई हर छोटी बात आज तक याद है, इतने ज़्यादा सालों के बाद भी।''

किस्सों, प्रतिबिंबों, संदर्भों, समस्याओं और समाधानों, निष्कर्षों और संस्मरणों की मदद से पुस्तक शिक्षक, पढ़ाने की कला, और विषय - इस मामले में गणित -- के स्वभाव और सौंदर्य की खोज की एक छवि उभारती है। लेखन में न तो कोई प्रतिभा है और न ही कोई अलंकरण लेकिन उत्साह भरपूर है। वह अपने निरीक्षण में गहरी दृष्टि लिये हुए है और अवलोकन में खुली सोच रखता है। वह जिज्ञासा को भी शांत करता है। वह सारे भय को शायद दूर नहीं करे लेकिन कुछ जालों को साफ करने में ज़रूर मदद करता है।

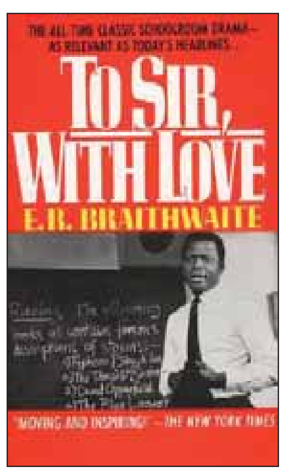

द जेंटल मैन हू टॉट इन्फिनिटि पढ़ते हुए और उसमें से बहुत पढ़ाकू बातें दरकिनार करते हुए मैं शिक्षकों, पढ़ाने के तरीकों और शिक्षकों तथा पढ़ाने के तरीकों पर लिखी गई पुस्तकों के बारे में सोचने लगी। सबसे पहला और ज़ाहिर सा नाम जो ज़ेहन में उभरता है वह है ईआर ब्रेइथवेट द्वारा लिखी पुस्तक *टु सर विद लव* का। मेरी पीढ़ी के ज़्यादातर लोगों को सिड्नी पॉटिए द्वारा

अभिनीत वह फिल्म याद होगी। बाकी लोगों को लुलु द्वारा इतनी कोमलता से गाया गया उसका टाइटल साँग याद होगा। मुझे याद है कि मैंने पहले वह पुस्तक पढ़ी थी, और फिल्म बाद में ही देखी थी। 1959 में प्रकाशित यह पुस्तक लेखक के तब के सच्चे अनुभवों पर आधारित है जब वे लंदन के ईस्ट एंड इलाके के एक स्कूल में पढ़ाया करते थे।

कुछ वर्ष बाद जब मेरी नज़र बेल कॉफमैन द्वारा लिखी गई *अप द डाउन स्टैरकेस* पर पड़ी, तो ऐसा लगा कि *टु सर विद लव* का यह अमेरिकी जवाब है। 1964 में प्रकाशित यह पुस्तक विकीपीडिया के मुताबिक 64 सप्ताह तक *न्यू यॉर्क टाइम्स* की बेस्ट सेलर लिस्ट में रही थी। वह हर तरह के सामाजिक विषयों से जूझ रहे एक भीतरी शहर में बच्चों को शास्त्रीय साहित्य पढ़ाने के बारे में बात करती है। उसका शीर्षक इस तथ्य से आता है कि बच्चों को नीचे आती सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने (अप द डाउन स्टैरकेस) पर सजा मिल सकती थी। कॉफमैन की पुस्तक को उसे लिखने का अंदाज़, ढूँढ़ कर डाले हुए ज्ञापन, नोट, निबंध, लेसन प्लान (पाठ पढ़ाने की योजना) और विवरणात्मक प्रासंगिक संवाद रुचिकर बनाते हैं।

इस विषय पर लिखी गई कुछ पुस्तकें साहित्यिक दृष्टि से काफी प्रसिद्ध हुई हैं। उन्हीं में एक है म्यूरियल स्पार्क की लिखी और 1961 में प्रकाशित हुई द प्राइम ऑफ मिस जीन ब्रोडी। वर्ष 2005 में टाइम मैगज़ीन ने उसे 1923 से तब तक अंग्रेज़ी में प्रकाशित 100 श्रेष्ठ पुस्तकों की सूची में शामिल किया था। यह 1930 के दशक पर आधारित एक काल्पनिक उपन्यास है और इसकी बारीकियाँ इस बात से उभरती हैं कि जीन ब्रोडी जिन बातों की तीमारदारी करती हैं, तानाशाही उनमें से एक है।

इसके विपरीत फ्रैंक मक्कोर्ट की लिखी *टीचर मैन* युनाइटेड स्टेट्स में पढ़ाते वक्त हुए उनके निजी अनुभवों पर आधारित है। जुलाई 2009 *में द गार्डियन* में कार्लो गेब्लर द्वारा उन पर लिखे गए मृत्युलेख के कुछ उद्धरण यहाँ ज़रूरी हैं, ''1958 में उन्होंने स्टैटन आयलैंड में स्थित मकी वोकेशनल एंड टेक्निकल हाई स्कूल से अपने शिक्षण करियर की शुरुआत की। उनकी निगरानी में थे 16-वर्षीय मैकेनिक, ब्यूटिशियन, गैंग के सदस्य, अपराधी और टैक्सी ड्राइवर बनने की तैयारी में बैठे कुछ लोग। उन्हें शेक्सपियर पढ़ने में कोई रुचि नहीं थी, और न ही वे स्कूल में वक्त जाया करना चाहते थे। पेटे नाम के एक लड़के ने उन पर एक बलोनी सैंडविच फेंक दीः मक्कोर्ट की प्रतिक्रिया उत्कृष्ट और साहसवाली थी, साथ ही उनकी स्टाइल से बिल्कुल मेल खाती हुई भी। उन्होंने वह सैंडविच उठाई, खाई और क्लास से कहा कि वह बहुत स्वादिष्ट थी। उसके बाद उन्होंने अपनी क्लासेज़ को नियंत्रण में रखना सीख लिया, या तो उनसे वह लिखवा कर जो वे लिखना चाहते थे (ईव, जूडास और अतीत के लोगों की स्टाइल में क्षमा पत्र लिखना हमेशा लोकप्रिय था) या फिर उन्हें अमेरिका आने से पहले आयरलैंड में अपने जीवन के बारे में बता कर।''

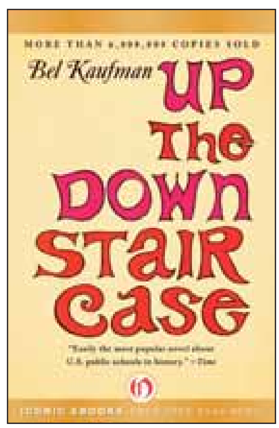

एक दोस्त ने एरिन ग्रूवेल के लाँग बीच, कैलिफोर्निया में वुडरो विल्सन हाई स्कूल के छात्रों के साथ हुए उनके अनुभवों और प्रयोगों के विवरण से मेरी पहचान करवाई। *द फ्रीडम राइटर्स डायरीः हाओ अ टीचर एंड 150 टीन्स यूज़्ड राइटिंग टु चेंज दैमसेल्व्ज़ एंड द वर्ल्ड अराउंड देम* 1999 में प्रकाशित हुई थी; वह आज भी विश्व के हर भाग में प्रासंगिक है। जब ग्रूवेल ने स्कूल के गलियारे में पहली बार कदम रखा तो उसका माहौल जातीय, सामाजिक और आर्थिक तनाव से सराबोर था । अपने छात्रों को *द डायरी ऑफ एन फ्रैंक* और *ज़्लाटाज़ डायरीः अ चाइल्ड्स लाइफ इन सारायेवो* जैसी पुस्तकें पढ़ाने और उनके बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित करके वे उनके जीवन और सोच को प्रभावित करने में कामयाब हो गईं। असली स्वतंत्रता सेनानियों के लिए वह बड़ा दिन था जब *ज़्लाटाज़ डायरी* की ज़्लाटा फिलिपोविच खुद उनसे मिलने आईं। अपनी पुस्तक में उन्होंने अपने बचपन में बॉस्निया में हुए संघर्ष का वृत्तांत दर्ज किया था।

इस विषय पर कई पुस्तकें हैं, और उनसे जीवन को समझने और सीखने के लिए बहुत कुछ मिलता है। इसी कड़ी में एक पुस्तक है सिल्विया नासर की *अ ब्यूटिफुल माइंड*। 1998 की यह पुस्तक नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री और गणितज्ञ फोर्ब्स नैश की जीवनी है। और जापान की टिलिविज़न पर्सनैलिटी तेत्सुको कुरोयनागी की लिखी और 1981 में सबसे पहले जापानी भाषा में छपी बिल्कुल मोहक पुस्तक *टोटो चैनः द लिट्ल गर्ल एट द विंडो* को कौन भूल सकता है? वे इसमें प्रयोग में नहीं लाई जा रही एक ट्रेन में दूसरे विश्व युद्ध के दौरान शिक्षक सोसाकु कोबायाशी द्वारा शुरू किये गए एक प्राथमिक विद्यालय में मिली अपनी असामान्य शिक्षा का वर्णन करती हैं।

शिक्षक किसी भी समाज की रीढ़ की हड्डी होते हैं, और एक अच्छा शिक्षक अपने विषय से प्यार करता है, अपने छात्रों से प्यार करता है और छात्रों से अपने निराले तरीके से उस विषय से प्यार करवाने की प्रक्रिया से प्यार करता है। चन्ना की जिस सबसे पहली क्लास में शेषगिरी राओ ने भाग लिया, छात्रों ने ब्लैकबोर्ड पर एक सादी सी समस्या लिखी देखीः 142857x1= —। यह तो बहुत आसान था। उनसे कहा गया कि वे गुणा करते रहेंः 142857x2, 142857x3, 142857x4, 142857x5, 142857x6। अब चन्ना ने कहा कि वे सभी जवाबों को देखें। उन्होंने क्या देखा?

यदि आप इसे नहीं जानते तो इसे खुद करके देखें। यदि जो आप देखते हैं उससे आप ज़रा सा भी आकर्षित नहीं होते तो आप 142857 को 7 से गुणा करके देखें! यदि पुस्तकें नहीं होतीं तो मुझे पता ही नहीं चलता कि अंक कितनी जादुई दुनिया में रहते हैं। और यह तो सिर्फ शुरुआत है। अभी तो और बहुत सी पुस्तकें और अंक मेरा इंतज़ार कर रहे हैं।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका एवं वरिष्ठ पत्रकार हैं।

वैश्विक अनुदान परियोजना स्कूलों का रूपांतरण करती हैं

टीम रोटरी न्यूज़

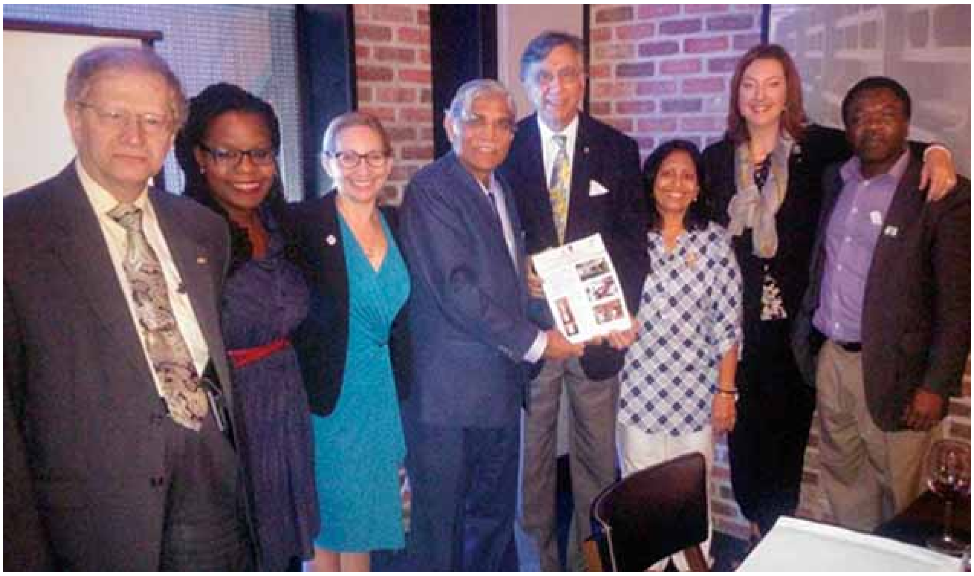

आरसीपीएस आईपीपी प्रदीप वाघ (बाएं से चौथे) पीडीजी सूरज भाटिया को परियोजना रिपोर्ट पेश करते हैं।चित्र में (बाएं से) आरसीजेसी सचिव स्टीफन स्टेमोस, मिशेल रिकोट-नंदकुमार,अध्यक्ष जेनिफर एटकेन, नेत्रा वाघ, लिसा बोहेम और थॉमस चू भी शामिल हैं।

पुणे के आसपास के अंदरूनी ग्रामीण क्षेत्र की स्कूल जाने वाली लड़कियों में कोमल, पूनम, शीतल कुछ सामान्य नाम है। कोमल, एक खेतिहर मजदूर की प्यारी बेटी, को कुछ समय पूर्व तक किसी भी हालत में भारत में माध्यमिक स्कूल की परीक्षाओं में सफल होने की कोई उम्मीद नहीं थी। उसके परिवार के अल्प संसाधनों ने उसे आधुनिक शैक्षिक सहायता लेने से रोक रखा था। साथ ही, जिस स्कूल में वह जाती है वह एक ज़िला परिषद का स्कूल है जिसमें मामूली सुविधाएं है। बेशक उसके स्कूल शिक्षक एक बहुत समर्पित व्यक्ति है। लेकिन उन्हें अनेक कक्षाओं में पढ़ाना होता है और इसलिए विभिन्न वर्गों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने में उन्हें परेशानी होती है। कोमल के स्कूल में प्रयोगशाला, पुस्तकालय सुविधा एवं खेल सामग्री की भी कमी थी।

यहीं पर रोटरी क्लब जर्सी सिटी (RCJC), यूएस, मंडल 7490, कोमल और उसके जैसे ही सैकड़ों स्कूल जाने वाले बच्चों के उद्धार के लिए आगे आया। क्लब के शताब्दी वर्ष (2016-17) के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय परियोजना करने के लिए ठउगउ ने रोटरी क्लब पुणे शिवाजीनगर, मंडल 3131, के साथ साझेदारी की।

इस परियोजना के लिए साधन के रूप में एक वैश्विक अनुदान परियोजना का चुनाव किया गया। 'रोटरी दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (RDEP) - भारत में विस्तारण' नामक इस परियोजना के तीन मुख्य घटक है:

- 20 से अधिक ग्रामीण स्कूलों के लिए कंप्यूटर-सहायतायुक्त ऐसी शिक्षा इकाइयाँ जिनमें शिक्षण में सहायता के लिए स्कूल के पाठ्यक्रम का प्री-लोडेड सॉफ्टवेर हो।
- चुनिंदा स्कूलों का विस्तारपूर्ण आधारभूत संरचना विकास।
- 200 से अधिक ग्रामीण शिक्षकों के लिए 'शिक्षक गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम (TQIP)' के अंतर्गत शिक्षकों का प्रशिक्षण।

समाज के अल्प-विकसित क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देने के लिए एवं दो क्लबों के मध्य साझेदारी के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय समझ के लिए वैश्विक अनुदान रोटरी का एक प्रभावशाली साधन है, RCPS के IPP डॉक्टर प्रदीप वाघ ने रोटरी क्लब जर्सी सिटी में रोटरी के स्थापना माह की शुरुआत में कहा। वह वर्ष 2016-17 में GGP के सफलतापूर्वक संपादन के अवसर पर बोल रहे थे।

उच्चतर मूल्य के लिए एक क्लब के पास मौजूद संसाधनों का लाभ उठाने का वैश्विक अनुदान एक प्रभावकारी साधन है। उदाहरण के लिए, इस GGP में RCJC, RCPS के योगदान के साथ-साथ ठखउ 3131 (पुणे, भारत), RID 7490 (न्यू जर्सी) और रोटरी संस्थान, टीआरएफ का भी योगदान है।

रोटरी क्लब जर्सी सिटी की अध्यक्ष जेनिफर एटकेन ने उस वक्त से वैश्विक अनुदान परियोजना की प्रगति पर नज़र रखी जब से पीडीजी अडेल मिलर ने इसकी शुरुआत की थी। मेजबान और साझेदार क्लब दोनों के अनेक रोटेरियनों ने PDRFC मोहन पलेशा, मंडल 3131, के मार्गदर्शन में आगे की कार्यवाही की।

चित्रों, श्रव्य-दृश्य प्रस्तुतियों के इस्तेमाल एवं क्लास में एनीमेशन के इस्तेमाल द्वारा RDEP ने ग्रामीण विद्यार्थियों की गणित एवं विज्ञान की समझ को बेहतर बनाया है।

जहाँ आधारभूत संरचनाओं के विकास (दूसरे घटक) ने एक पर्याप्त पुस्तकों वाले पुस्तकालय, खेल सामग्रियों एवं अन्य आवश्यकताओं की सुविधाएं प्रदान की है, वहीं TQIP ने ग्रामीण शिक्षकों को कक्षा में शिक्षण के लिए जरूरी अभिनव युक्तियों, ज्ञान एवं कौशलों से परिपूर्ण किया।

यह एक गर्व का विषय है कि कोमल, लाभार्थी विद्यार्थियों में से एक, ने 2016-17 की कक्षा 12वीं के सार्वजनिक परीक्षण में 97 प्रतिशत अंक हासिल किये है। उसकी मित्र पूनम, शीतल और इस वैश्विक अनुदान परियोजना से लाभांवित होने वाले सैकड़ों अन्य बच्चे अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण हुए।

ज़िला परिषद कसुर्डी स्कूल, दौंड तालुक, पुणे के प्रधान-अध्यापक ने कहा, ''हमें ई-शिक्षण एवं अन्य उपकरण प्रदान कर ग्रामीण बच्चों को सशक्त बनाने के लिए हम रोटरी के आभारी है।''

कोमल और शीतल एक विज्ञान प्रयोग करते हुए।

इस परियोजना के लिए सर्वोच्च पल वह था जब इसने एक वैश्विक अनुदान के अंतर्गत मंडल का सर्वोच्च साक्षरता शिक्षक प्रशिक्षण पुरस्कार जीता। परियोजना को आसानी से अनुकरणीय बनाने के लिए, शिक्षक प्रशिक्षण का एक वीडियो दस्तावेज बनाया गया है जिसे *https://sites.google.com/site/rcpstqip/* पर देखा जा सकता है।

रोई मंडल 7490 के पीडीजी राज भाटिया ने इस परियोजना में सलाहकार की भूमिका निभाई।■

रोटरी की उलेमा काउंसिल फिर से कार्रवाई में सक्रिय

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी उलेमा परिषद, जिसका गठन समस्या के उन दिनों में किया गया था, जब उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, केरल, आदि जैसे राज्यों में मुस्लिम समुदाय द्वारा पोलियो टीकाकरण का बहुत अधिक विरोध किया जा रहा था, उसे मिशन इंद्रधनुष सहित सार्वभौमिक टीकाकरण में भागीदारी के लिए रोटरी इन इंडिया द्वारा भारत सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के साथ फिर से अनुबंधित किया गया हैं।

पीआरआईडी अशोक महाजन धार्मिक नेताओं के साथ।

पीआरआईडी अशोक महाजन की अध्यक्षता में, जिन्होंने पिछले कई वर्षों से पोलियो टीकाकरण के दौरान मुस्लिम समुदाय को शामिल करने में प्रमुख भूमिका निभाई थी, रोटरी उलेमा परिषद की बैठक लखनऊ में दिसंबर माह में आयोजित की गई थी। महाजन ने कहा कि बैठक में हिंदू, मुस्लिम और ईसाई धार्मिक नेताओं ने भाग लिया था। ''बैठक में भाग लेने वाले लगभग 30 मुस्लिम उलेमाओं ने अपना पूरा समर्थन दिया और नियमित टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए लखनऊ से कई प्रमुख उलेमाओं द्वारा हस्ताक्षरित अपील जारी किया गया।''

उलेमा परिषद के सचिव, पूर्व अध्यक्ष अजय सक्सेना, आरआईडी 3120 के साथ मीडिया की टीम भी मौजूद थी, जिसने रोटरी की इस पहल को प्रसारित किया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी समुदायों के बच्चों को पोलियो, खसरा, रूबेला आदि से बचाने के लिए उचित प्रतिरक्षण प्राप्त हो। उन्होंने कहा कि उलेमा ने यूपी में मस्जिदों में शुक्रवार की नमाज के दौरान टीकाकरण का संदेश का प्रचार करने का वादा किया है।■

सीएसआर कोष से स्कूलों का उन्नतीकरण

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी के ई-क्लब मैग्नम ने हरियाणा के गुड़गाँव ज़िले और उसके आसपास के शासकीय कन्या विद्यालयों में सुविधाओं को उन्नत किया है। क्लब के पूर्व अध्यक्ष सुनील प्रकाश जो परियोजना समन्वयक है कहते है, ''मूल रूप से यह योजना वैश्विक अनुदान के माध्यम से करने की थी, मगर जब हमें पता चला कि रोटरी अंतर्राष्ट्रीय अब कंपनियों से आने वाली सीएसआर निधि को जन-कल्याण परियोजनाओं के लिए उपयोग करने दे रही है, तो हमने इस विचार को स्वीकार किया।''

इसलिए, गुड़गाँव के सोहना नगर और उसके आसपास के छह स्कूलों को उन्नत करने हेतु प्रथम सीएसआर वैश्विक अनुदान में 32,000 डॉलर का योगदान देने के लिए निगम जेको एयरकॉन को मनाया गया। परियोजना की रिपोर्ट तैयार की गई और नई दिल्ली में RISAO (रोटरी अंतर्राष्ट्रीय दक्षिण एशिया कार्यालय) की लगातार कोशिशों के कारण, अनुदान का पहला ऐसा आवेदन आगे बढ़ा और तेज़ी से स्वीकृत भी हो गया। ''इसने हमें भरोसा दिलाया कि हाँ हम लड़कियों को अच्छा पानी, स्वास्थ्य, स्वच्छता सुविधाएं और बुनियादी शिक्षा देकर इन स्कूलों में उनकी ज़िंदगियों में सुधार लाने के लिए आगे बढ़ सकते है,'' वह आगे कहते है।

अनुदान के ज़ारी होने के बाद, परियोजना को तेज़ी से आगे बढ़ाया गया यह साबित करने के लिए क्लब का इसे सच में करने का इरादा है। स्कूल के प्राधिकारियों, ज़िले के शिक्षा अधिकारियों और विशेष रूप से स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) एवं गाँव के अधिकारियों के जबर्दस्त समर्थन के कारण, स्कूलों में काम पूरे ज़ोरों पर शुरू हुआ। इसके फलस्वरूप बहुत तेज़ी में कार्य हुआ।

प्रकाश ने कहा, ''जब शिक्षकों और बच्चों को हमारी परियोजना के बारे में पता चला, वे बहुत उत्तेजित और उत्साहित थे। उन्होंने हमें सहयोग दिया और विश्वास दिलाया कि वह उनके स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में बदल देंगे और अपनी उपस्थिति को भी बेहतर बनायेंगे, जो पहले से ही हो चुकी है।''

टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता स्कूल का उद्घाटन (बाएँ से) डी जी सतीश सिंघल, डी जी एन दीपक गुप्ता, रवि सिंघल, अध्यक्ष - ज़ेको एयरकॉन और परियोजना समन्वयक सुनील प्रकाश की उपस्थिति में किया।

पहले नवीनीकृत स्कूल का उद्घाटन टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता द्वारा, डीजी सतीश सिंघल, पीडीजी रमेश अग्रवाल और डीजी मनोनीत दीपक गुप्ता, सीएसआर और WinS प्रबंधक जयश्री जयरमन, टीआरएफ, गाँव के प्रधानों, एसएमसी सदस्यों, शिक्षा विभाग से अधिकारियों और अभिभावकों की उपस्थिति में किया गया। सभा का समापन पौधारोपण द्वारा किया गया। इस परियोजना के अन्तर्गत, निम्न सुविधाएं प्रदान की गई है।

- लड़कियों के लिए स्वच्छ शौचालय
- सैनिटरी नैपकिन वेंडिंग और निपटान मशीनें
- शौचालयों में नलों के द्वारा पानी
- हाथों की धुलाई के स्टेशन ताकि खाने के पहले और खाने के बाद और शौचालय जाने के बाद साबुन से हाथ धोने की आदत को विकसित किया जा सके।
- स्वच्छ और छना हुआ पीने का पानी कक्षाओं के लिए टेबल और बेंचें
- कक्षाओं के लिए टेबल्स और बेंच
- पंखें, कूड़ेदान और स्कूल परिसर में और उसके आसपास एक स्वच्छ पर्यावरण
- खेलने और व्यायाम करने के लिए पार्क और
- एक कंप्यूटर केंद्र

''बहादुरगढ़ ज़िले के अगले सात स्कूलों के लिए हमारे पास ऐसा ही एक अन्य सीएसआर वैश्विक अनुदान है। काम शुरू हो चुका है और उसे समाप्त होने में समय लगेगा,'' प्रकाश ने कहा।

ट्रस्टी गुप्ता ने गाँव के प्रधानों, एसएमसी सदस्यों और माता-पिताओं से परियोजना की संवहनीयता की जिम्मेदारी लेने एवं सुविधाओं का उसी तरह प्रबंधन करने की अपील की है जैसा वह अपने घर में करते है। केवल तब ही उनके बच्चे स्कूलों में किये गए कार्यों का लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

ज़ेको एयरकॉन के अध्यक्ष और रोटरी क्लब ई मैग्नम के वर्तमान अध्यक्ष रवि सिंघल ने कंपनियों से आगे आकर ऐसी परियोजनाओं के लिए योगदान देने की अपील की है। जब देश के युवा बुनियादी शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता से सशक्त होंगे, तो वे आने वाली पीढ़ी के लिए परिवर्तन के राजदूतों की भूमिका निभाएँगे और आरामदायक जीवन जीएंगे, उन्होंने कहा। ■

Advertise in ROTARY NEWS
(Colour only)

Tariff (per insertion)

Back cover
₹1,00,000

Inner Front cover
₹60,000

Inner Back cover
₹60,000

Inside Full page
₹30,000

Inside Half page
₹20,000

Specifications

Full page
17 x 25 cm

Half page
17 x 12 cm

Contact:
rotarynews@rosaonline.org
044 42145666

Rotary

Rotary at a glance

Rotarians : 12,30,244

Clubs : 35,797

Districts : 539

Rotaractors : 2,48,400*

Clubs : 10,800*

Interactors : 5,12,578*

Clubs : 22,286*

RCC members: 2,21,674*

RCC : 9,827*

* As on December 6, 2017

Membership Summary

As on December 6, 2017

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	112	4,635	218	59	225	173
5	2982	67	3,017	97	61	111	43
5	3000	127	5,350	438	289	647	195
4	3011	75	3,318	641	56	105	25
4	3012	87	3,462	665	68	125	55
5	3020	102	4,406	212	117	461	351
4	3030	95	5,109	621	73	307	164
4	3040	97	2,170	237	53	115	136
4	3053	77	2,869	450	16	36	93
4	3054	129	6,162	953	92	291	473
4	3060	97	4,017	420	63	116	130
4	3070	108	3,021	273	67	153	54
4	3080	78	3,355	220	71	215	108
4	3090	79	2,074	80	32	36	122
4	3100*	74	1,701	76	11	73	146
6	3110	116	4,022	306	51	49	104
6	3120	78	3,346	351	37	54	50
4	3131	134	5,441	1,067	103	275	80
4	3132	110	4,400	468	63	199	138
4	3141	91	5,432	1,148	118	252	87
4	3142	83	3,042	428	66	186	69
5	3150	100	3,687	353	93	228	109
5	3160	69	2,410	114	22	45	81
5	3170	128	5,529	396	58	301	160
5	3181	73	3,189	226	31	172	104
5	3182	80	3,344	251	32	271	91
5	3190	132	5,264	616	143	348	50
5	3201	140	5,253	318	99	124	47
5	3202	132	4,919	249	100	427	45
5	3211	137	4,431	264	12	89	123
5	3212	96	3,893	213	109	268	126
5	3231	68	2,862	104	55	194	237
5	3232	99	4,007	532	137	303	82
6	3240	88	3,067	352	61	146	151
6	3250	99	3,883	708	46	205	176
6	3261	70	2,502	221	16	102	42
6	3262	97	3,350	386	44	68	75
6	3291	148	3,886	737	71	130	587
India Total		**3,772**	**145,825**	**15,409**	**2,695**	**7,452**	**5,082**
5	3220	73	1,974	239	82	198	77
6	3271	82	1,521	251	48	16	13
6	3272	156	2,981	454	41	36	36
6	3281	203	5,746	781	228	84	186
6	3282	138	3,891	331	133	40	41
6	3292	116	4,483	675	121	113	109
S Asia Total		**4,540**	**166,421**	**18,140**	**3,348**	**7,939**	**5,544**

**Non-districted*

Source: RI South Asia Office

रोटरी क्लब रासिपुरम - मंडल 2982

क्लब के सदस्य टी पी वेंकटचलपति की पत्नी एवं म्युनिसिपल स्कूल की एक शिक्षिका एम सेल्वाकुमारी ने रोटरी पोलियो कोष में 10,000 रुपये का दान दिया। वह राशी राज्य द्वारा दिए जाने वाले डॉक्टर राधाकृष्णन सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार का हिस्सा थी जो उन्हें पुरस्कार राशी के रूप में मिली थी। वह स्वयं भी पोलियो-पीड़ित है।

रोटरी क्लब करुर अमरावती - मंडल 3000

रोटेरियनों ने करुर के दो सरकारी स्कूलों के बच्चों को लाभान्वित करने के लिए शौचालय एवं पानी की सुविधा और खेल सामग्री प्रदान की। उन्होंने ग्रामीण बच्चों को उपहार स्वरूप पटाखे भी दिए ताकि वे दिवाली का मजा ले सके।

रोटरी क्लब कोत्तापेटा - मंडल 3020

क्लब ने कोठापेट में स्कूली बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की। विजेताओं को लगभग 100 स्मृति-चिन्ह एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये गए।

रोटरी क्लब फरीदाबाद संस्कार - मंडल 3011

पूर्व अध्यक्ष संदीप सिंघल और उनकी पत्नी कविता ने राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से मुलाकात की और उन्हें लोगों की भलाई के लिए रोटरी के योगदान से अवगत कराया।

विधियाँ

रोटरी क्लब नासिक मिडटाउन - मंडल 3030

एक दूरस्थ गाँव के 50 आदिवासी विद्यार्थियों के लिए तीन-दिवसीय RYLA आयोजित किया गया। उनके लिए कैरियर अवसरों एवं कौशल विकास गतिविधियों पर लेक्चर का प्रबंध किया गया। डीजी के. एस. राजन ने RYLA का शुभारंभ किया।

रोटरी क्लब मांडवी - मंडल 3054

कच्छ के मातानो मढ़ मंदिर में आने वाले तीर्थयात्रियों की सहायता करने के लिए 32 शिविरों की स्थापना की गई है। भोजन की स्वच्छता, हाथों की धुलाई की व्यवस्था और दवाइयों के स्टॉक की पूर्ति के लिए रोटेरियन नियमित रूप से शिविरों का दौरा करते है। हाल ही में, डीजीएन नीरज भाई सोगानी की उपस्थिति में चार सर्वश्रेष्ठ शिविर पुरस्कार प्रदान किये गए।

रोटरी क्लब जम्मू मिडटाउन - मंडल 3070

क्लब के सदस्यों ने रूपनगर स्थित दृष्टिबाधित लड़कियों के आवास का दौरा किया और रहवासियों की सुविधा के लिए किराना, मसाले और खाना पकाने का तेल दान दिया। उन्होंने लड़कियों को यात्रा के बैग भी वितरित किये।

रोटरी क्लब कर्नाल मिडटाउन - मंडल 3080

अन्नपूर्णा दिवस के अवसर को चिन्हित करने के लिए, क्लब ने कर्नाल में मानव सेवा संघ में 500 लोगों को भोजन बांटा। रोटेरियनों ने उन्हें स्वास्थ्य एवं स्वच्छता आदतों पर शिक्षित भी किया।

रोटरी क्लब अमरेली सिटी - मंडल 3060

रोटेरियनों ने अमरेली के अम्बा प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थियों को शिक्षण किट प्रदान की और विभिन्न विषयों में उनकी रूचि जगाने के लिए कार्यक्रमों का संचालन किया।

रोटरी क्लब ग्रेटर कर्नूल - मंडल 3160

एम पी एलीमेंट्री स्कूल में हाथों की धुलाई पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों को पानी की कैन, साबुन एवं हाथों की धुलाई के सही तरीकों को दर्शाती हुई पुस्तिकाएं वितरित की गई।

रोटरी क्लब धारवाड़ सेंट्रल - मंडल 3170

'इच वन बो वन'(हर एक, बोये एक) नामक एक हरित पहल में, बीज की गेंदों का निर्माण करके उसे क्षेत्र में चारों ओर बोया गया। रोटेरियनों ने नगर में भी लगभग 100 पौधे रौपे। अंतर्राष्ट्रीय सेवाओं के निदेशक सुरेश बाबू ने पौधों को बड़ा करने की जिम्मेदारी ली।

रोटरी क्लब कोल्लेगल मिडटाउन - मंडल 3181

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनों को स्वच्छ एवं शुद्ध पीने का पानी प्रदान करने के लिए होसर सरकारी स्कूल को एक वाटर प्यूरिफियर दान किया गया। शिक्षकों ने रोटरी का उनके विचारपूर्ण कृत्य के लिए धन्यवाद दिया।

रोटरी क्लब परुर - मंडल 3201

विद्यार्थियों की भलाई के लिए पेरुपदन्ना के सरकारी एल पी स्कूल में एक स्टेनलेस स्टील की हाथों की धुलाई की इकाई स्थापित की गई। क्लब द्वारा स्कूल को 15 साल पहले गोद लिया गया था।

रोटरी क्लब तिरुपुर गांधीनगर - मंडल 3202

मंडल में अपनी सार्वजनिक छवि को बनाने के लिए क्लब द्वारा रोटरी क्लब गुड़ालुर वैली को एक फ्रीजर बॉक्स दान दिया गया है जिससे 1.45 लाख से भी अधिक लोग लाभान्वित होंगे जिनमें गुदालुर पहाड़ी क्षेत्र के 75,000 ग्रामीण आदिवासी शामिल है। परियोजना की लागत रु 1.15 लाख है।

विधियाँ

रोटरी क्लब उदियांकुलन्गरा - मंडल 3211

तिरुवनंतपुरम के समीप नय्यर वन्य-जीव क्षेत्र में रह रहे लोगों को क्लब ने खाना एवं कपड़े बांटे। क्लब ने स्कूल जाने वाले बच्चों को कापी एवं लेखन सामग्री भी दान दी।

रोटरी क्लब तिरुपट्टूर - मंडल 3231

नियमित रूप से स्कूल आने के लिए प्रेरित करने हेतु रोटेरियनों ने नगर के सेवाथुर सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों को टी-शर्ट एवं लेखन सामग्री प्रदान की।

रोटरी क्लब माल्दा सेंट्रल - मंडल 3240

विपरीतलिंग के साथ भाई दूज का उत्सव मनाया गया जो रोटेरियनों द्वारा मिले आदर एवं स्वीकृति से अभिभूत थे। रोटरेक्टरों ने भी कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

रोटरी क्लब जबलपुर साउथ - मंडल 3261

विभिन्न इलाकों में एवं स्कूली बच्चों के लिए सरकारी अस्पताल के डॉक्टरों की मदद से स्वास्थ्य शिविरों का संचालन किया गया। एक कैंसर की जांच के शिविर का भी आयोजन किया गया।

रोटरी क्लब कटक सिल्वरसिटी - मंडल 3262

विद्यार्थियों में स्वच्छता की आदत को बढ़ावा देने के लिए कटक के शेल्टर प्राथमिक स्कूल को कूड़ेदान दान किये गए। शिक्षकों ने रोटेरियनों के इस विचारपूर्ण कृत्य की प्रशंसा की जिससे स्कूल को एक कचरा-मुक्त वातावरण बनाए रखने में मदद मिलेगी।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित
एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

अलग क्षमता का जश्न

किरण ज़ेहरा

सच्ची विकलांगता उन लोगों की आँखों में होती है जो शारीरिक दिखावट के परे नहीं देख सकते है, विश्वास के एस'' कहते है जिन्होंने उनके दोनों हाथ दस वर्ष की आयु में एक दुर्घटना में खो दिए थे। वह आगे कहते है, लेकिन, ''इसने मुझे पैरा-तैराकी विजेता बनने से नहीं रोका।'' 2016 में कनाडा में आयोजित हुई स्पीडो कैन ऍम पैरा-तैराकी प्रतियोगिता में बेंगलुरु के इस 26 वर्षीय तैराक ने तीन पदक जीते। अंतर्राष्ट्रीय विकलांगता दिवस (3 दिसंबर) को रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्ड्स, मंडल 3190, द्वारा मिलारस एंड कनिंघम रोड पर आयोजित की गई 2 किमी लंबी पैदल यात्रा में वह एक प्रतिभागी थे।

पैदल यात्रा को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए एवं लोगों के दिमाग में संदेश की गहरी छाप छोड़ने के लिए, क्लब ने सामरिक महत्व के स्थलों का प्रबंध किया जहाँ प्रतिभागी ऐसे बैनरों को लेकर एकत्रित हुए जिनमें विकलांग व्यक्तियों की देखभाल एवं कैसे वे विकलांग नहीं, बल्कि निःशक्तजन है, के बारे में लिखा हुआ था। भारत को पोलियो-मुक्त बनाने में रोटरी की भूमिका को भी स्थलों पर प्रदर्शित किया गया था।

क्लब के अध्यक्ष अलीमुल्लाह खान कहते है, जहाँ निःशक्तजन समुदाय उनके मौलिक अधिकारों के लिए दृढ़ता से लड़ रहा है, वहीं उनमें से कुछ अंधविश्वास के शिकंजे से आजाद होने के लिए संघर्ष कर रहे है। ''कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में उन्हें 'अभिशप्त' समझा जाता है। यह चौंकानेवाला एवं बेतुका है। कैसे हम इन लोगों को समझा सकते है

वॉकेथॉन में प्रतिभागी और रोटेरियन।

कि इसका अलौकिक ताकतों से कोई संबंध नहीं है? जागरूकता ही एकमात्र समाधान है।''

कार्यक्रम के बारे में बात करते हुए विश्वास कहते है, ''दया तकलीफदेह होती है। हम चाहते है कि हमारे आस-पास के लोग अधिक सहानुभूति रखें। हमारी शारीरिक अक्षमता हमें केवल दान का पात्र नहीं बनाती है। हमें अपनी जिंदगियों को पुनः स्थापित करने के लिए सहयोग एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता है। हम चाहते है हमें स्वीकार किया जाए।''

खान आगे कहते है कि पैदल यात्रा ने जागरूकता फैलाने के अलावा, रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने में भी मदद की है और यह 'एंड पोलियो' पहल का एक विस्तारण है। ''हालाँकि मार्च 2014 में भारत को आधिकारिक तौर पर पोलियो-मुक्त प्रमाणित कर दिया गया है, फिर भी पड़ोसी देशों में पोलियो के मामले सामने

उदयपुर के राजकुमार लक्ष्य राज सिंह मेवार के साथ रोट्रैक्टर्स पवन और भाग्यश्री।

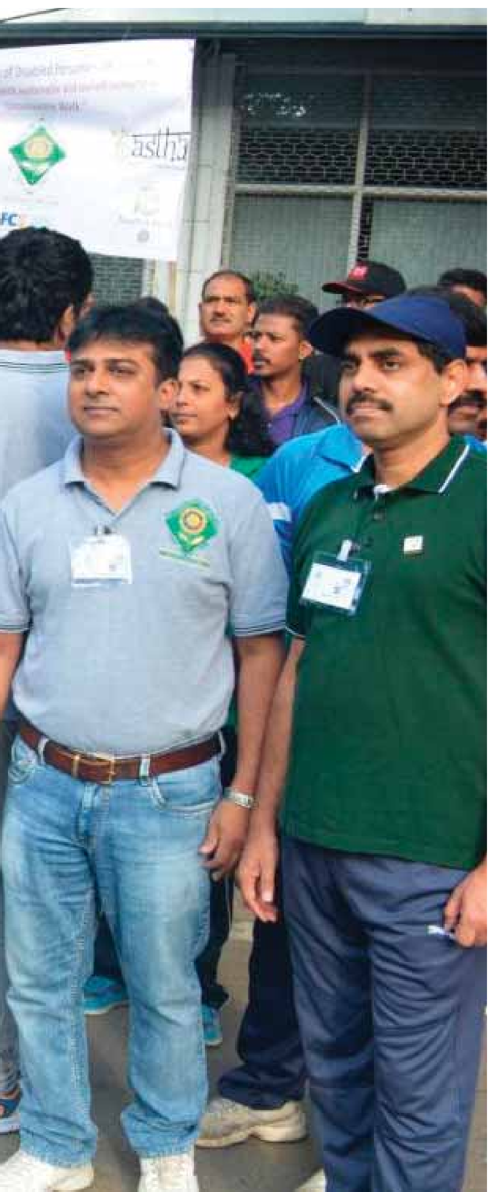

आ रहे है और हमें पोलियो के विरुद्ध अपनी लड़ाई को ज़ारी रखने की आवश्यकता है। हमने एक शक्तिशाली सन्देश दिया है कि रोटरी साथी निःशक्तजन मनुष्यों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील है और हमारा मुख्य ध्यान पोलियो को खत्म करने पर है जिसने दुनिया में इतने सारे लोगों को अपंग बनाया है।''

पैदल यात्रा को बेंगलुरु में अच्छी प्रतिक्रिया मिली, ''हमारे सार्वजनिक छवि निदेशक रोटेरियन नरेश नागराज के कारण जो प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से अच्छा लाभ लेने में मददगार रहे।''

पोलियो खत्म करने के लिए साइकिल अभियान

सितंबर में, डीजी आशा प्रसन्ना कुमार और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने बैंगलोर ऑर्चर्डस के रोटरेक्ट क्लब के रोटरेक्टरों पवन और भाग्यश्री द्वारा समस्त भारत में की जाने वाली 20,000 किमी की साइकिल यात्रा को हरी झंडी दिखाई। पोलियो को खत्म करने एवं रोटरी की TEACH पहल के बारे में जागरूकता फैलाने के साथ ही वे एक गिनीज़ विश्व कीर्तिमान स्थापित करने की कोशिश कर रहे है। पूर्व अध्यक्ष किरीट मोर्ज़ारिया ने मार्गों का प्रारूप तैयार किया और फ़िएट क्रायस्लर ऑटोमोबाइल्स के सहयोग से एक सहायता वाहन का भी प्रबंध किया ताकि साइकिल-चालकों को पूरे अभियान के दौरान लॉजिस्टिक सहायता प्रदान की जा सके। डीजी आशा ने 38 रोटरी मंडलों के साथ समायोजन किया है ताकि उन रोटरेक्टरों को सहायता प्रदान की जा सके जिनसे 15 मार्च तक यात्रा पूरी करने की अपेक्षा है।

खान कहते है, ''हम रोटेरियन श्रीधरन एम बी के आभारी है जिनसे हमें रु 1 लाख का पहला चेक प्राप्त हुआ था और उसके बाद बहुत से रोटेरियनों ने इस काम के लिए योगदान दिया।'' क्लब के युवा सेवा निदेशक जय पिल्लई ने उनके कार्यालय में नियंत्रण कक्ष बनाने की जगह प्रदान की है और इस अभियान की हर दिन की प्रगति का निरीक्षण करने के लिए वह रोटरेक्टरों के एक दल के साथ समायोजन कर रहे है। साइकिल चालकों ने अब तक 6,000 किमी की दूरी तय कर ली है।■

सिर्फ लड़कियाँ ही क्यों लूटें सारा मज़ा?

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

पिछले महीने मुझे बेंगालूरु में एक कार्यक्रम में एक वक्ता के तौर पर आमंत्रित किया गया था। सभी वक्ता एक फाइव स्टार होटल में ठहराये गए थे जहाँ जब मैंने एक बार में जाने की कोशिश की तो मुझे एक आदमी ने यह कह कर रोक दिया कि मुझे अंदर जाने के लिए जूते पहनने होंगे।

मैंने उसे याद दिलाया कि भारत 1947 में ही आज़ाद हो चुका है लेकिन वह मुझे सिर्फ खाली नज़रों से देखता रहा। मैंने उससे कहा कि मेरे पास जूते नहीं थे, जो सच बात थी। वह फिर भी मुझे खाली नज़रों से देखता रहा। फिर हममें कुछ बहस हुई। आखिर में मैंने उससे कहा कि वह मुझे बाहर फिंकवा सकता है और अंदर चला गया।

हमेशा की तरह अंदर जो कुछ भी पुरुष थे वे सलीके से पाश्चात्य परिधान हुए थे। और हमेशा की तरह अंदर जो कुछ भी महिलाएँ थीं, सब चप्पलों और सैंडल में थीं। यह तो लैंगिक असमानता की बात हुई न।

इस 'फॉर्मल' ड्रेस और ऋड्रेस कोडऋ की बात ने मुझे हमेशा उलझन में डाला है। इसका आखिर मतलब क्या है? मेरा मतलब है कि बेवकूफों की तरह कपड़े पहनने को अच्छी बात क्यों मान लिया जाता है?

इस मूर्खता से मेरा साबका सबसे पहले 1964 में हुआ था। मेरे पिताजी के दिल्ली से जबलपुर तबादला होने के कारण मुझे मजबूरन मिशनरीज़ द्वारा चलाये जा रहे एक स्कूल में जाना पड़ा था। वह एक बहुत बढ़िया स्कूल था लेकिन टाई स्कूल यूनिफॉर्म का एक ज़रूरी हिस्सा थी।

> नौ महीने दिल्ली तपती है, झुलसती है और इसमें दम घुटता है। लेकिन पुरुषों की फिर भी ड्रेस लाउंज सूट ही होनी चाहिए।

जबलपुर गर्मियों के मौसम में बहुत गरम होता है लेकिन ठंड के दिनों में उतनी गर्मी नहीं होती। तो मेरी समझ में नहीं आता था कि हमें टाई की ज़रूरत ही क्या थी। फिर एक दिन मुझ से मेरी शर्ट पर सामने के हिस्से पर कुछ *सांभार* गिर गई और तब जाकर मुझे समझ आया कि टाई पुरुषों की शर्ट पर धब्बे छुपाने के लिए होती है।

एक दिन ढलती उम्र के एंग्लो-इंडियन मास्टर, जो हमें साइंस पढ़ाते थे, ने क्लास में सबको एक खोज का नाम बताने कि लिये कहा। जब मेरी बारी आई तो मैंने कहा टाई। उन्हें आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा क्यों। और मैंने कहा कि धब्बे छुपाने का वह बेहतरीन तरीका है।

उन वृद्ध व्यक्ति ने मेरी अंगुलियों के जोड़ों पर अपनी बेंत से मारते हुए कहा, मूर्ख लड़के। टाई तुम्हें गरम रखने के लिए होती है।

गरम रखने के लिए। भारत में? जबलपुर में। और मूर्ख मैं था? क्या बात है! बिल्कुल सही।

पुरुष बनाम महिला पोशाकें

आपको दिल्ली में दूतावासों में नैशनल डे के कार्यक्रम देखने चाहिएं। नौ महीने यह शहर तपता है, झुलसता है और इसमें दम घुटता है। लेकिन ड्रेस लाउंज सूट ही होना चाहिए। यह मैं पुरुषों की बात कर रहा हूँ।

दूसरी तरफ महिलाएँ कोई भी वह पोशाक पहन सकती हैं जो उनका मन करता है। तो भारतीय महिलाएं साड़ी और सलवार, पूर्वी एशियाई सराँग और ऐसी ही पोशाक, और यूरोपियन ढीली, फूलों के छापवाली स्कर्ट पहनकर आती हैं। वे सब कूल और बहुत खुश लगती हैं।

कार्यक्रम के दौरान पुरुष कुलबुलाते हुए गरम और सूखी (अप्रैल से मई तक) और गरम और नम

> एक दिन मुझ से मेरी शर्ट पर सामने के हिस्से पर कुछ सांभार गिर गई और तब जाकर मुझे समझ आया कि टाई पुरुषों की शर्ट पर धब्बे छुपाने के लिए होती है।

(जुलाई से सितंबर तक) हवा फेंकनेवाले पंखों के सामने खड़े होने के लिए एक दूसरे से झगड़ते रहते हैं।

यदि पुरुषों को सूट के साथ चप्पल या सैंडल तक भी पहनने दी जाएं तो सूट उन्हें इतना तंग नहीं करेंगे। लेकिन उनकी ऐसी किस्मत कहाँ! उन्हें तो जूते पहनने ही हैं। परिणाम यह है कि नीचे और ऊपर दोनों ही तरफ से आकर गर्मी बीच में जमा हो जाती है। भगवान का शुक्र है कि कोई हैट पहनने पर मज़बूर नहीं करता।

मैं भाग्यशाली रहा हूँ। मुझे ज़्यादा दूतावासों ने आमंत्रित नहीं किया। और जिन कुछ ने किया भी उन्हें मेरे बिना ही काम चलाना पड़ा क्योंकि मैंने अपना इकलौता सूट बहुत पहले ही किसी को दे दिया था। मैं सिर्फ खादी की बुश-शर्ट पहनता हूँ, ज़्यादातर सफेद रंग की। मैं जूते भी नहीं पहनता, सिर्फ चप्पल या सैंडल पहनता हूँ। सर्दियों में मैं एक जोड़ी जुराब पहन लेता हूँ।

मेरा तर्क सिर्फ इतना ही है: भारत एक गरम देश है और यदि आप 'फॉर्मल' ड्रेस पर ज़ोर देते हैं तो वह पर्यावरण के अनुकूल होनी चाहिए। सरकार द्वारा बंदगला कोट निर्धारित किया गया है लेकिन वह भी गरम है। जब पुरुषों को मजबूरन उसे पहनना पड़ता है तो कई उसके नीचे कमीज़ नहीं पहनते। इसीलिए जैसे-जैसे भारत में आत्मविश्वास की वृद्धि हो रही है, भारतीय पुरुषों को हमारी जलवायु के अनुकूल पोशाक पहनना शुरू कर देना चाहिए।

आखिर, सारा मज़ा सिर्फ लड़कियाँ ही क्यों लूटें?■

नवनिर्वाचित गवर्नर्स

रशीदा भगत

ऊपर शीर्ष में खड़े हुए : (बाएँ से) डॉ विश्व बंदु दीक्षित (3090) ; वेंकटाचलपति (3201); नीरज सोगानी (3054); निखिलेश एम त्रिवेदी (3261); रविकिरन कुलकरनी (3170); निर्मल प्रकाश ए (2982); के राजागोपालन (3212); के पी सिन्हा (3250); डॉ शैलेश पालेकर (3131); सी आर चंद्र बॉब (3231); आर वी एन कन्नन (3000); बरजेश सिंघाल (3070); अभिनंदन ए शेट्टी (3182); डॉ ई के उमेर (3202)। **दूसरी पंक्ती खड़े हुए** : (बाएँ से) राजीव शर्मा (3030); गुड्डाटी विश्वनाद (3020); कोनिडाला मुनि गिरीश (3160); ई के लूक (3211); अरुणकुमार जैन (3110); दीपक जैन (3100); सुभाष जैन (3012); डॉ आशस गंगुली (3142); भाबानी प्रसाद चौधरी (3262); गुस्ताद अंकलेसरिया (3040); एस पिरेयोन (2981); चिंतामणी भट्टाराय (3292); प्रियेश भंडारी (3053)। **बैठे हुए** : (बाएँ से) विष्णु एस मोंढे (3132); डॉ सयंतन गुप्ता (3240); सुरेश हरी एस (3190); मुकुल सिन्हा (3291); विनय भाठिया (3011); स्तुति अगरवाल (3120); पिंकी पटेल (3060); दूशन सोज़ा (3220); बाबु पेरम (3232); शशी शर्मा (3141); रमेश वंगाला (3150); प्रवीण सी गोयल (3080); पी रोहीनाथ (3181)।

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020 Licensed to post without prepayment No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/5271 Rotary Samachar Published on 1st of every month
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35